॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पाणिजोड़ प्रभुको भयो गूहक पति हरषाय ॥ नाथ जनक तव भूप यह मुनिकी पुत्र खपाय ॥ मुनिकी पुत्र खपाग्र निकट मेरे जब आवै ॥ मैं वशिष्ठकी पुत्र वाम सुर नाम धरावै ॥ विकल जनक तब पश्य नाम तब नयन जपाये ॥ ताते हो करि त्राण भूपसद्मग निज आये ॥ १०४३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मै पितुको यह हाल जनावैं ॥ द्विज हत्या भुगता करि आवैं ॥ वारचतु मै राम जपाये ॥ ताते मुक्त पाप हो जाये ॥ १०४४ ॥ शुन वशिष्ठ पितु मोर रिशाई ॥ तर्ज्ज गर्ज्ज मुझको बतलाई ॥ वार भूमिकी राम जपाये ॥ कोट ब्रह्म हत्या कट जाये ॥ १०४५ ॥ वार अनन्त तु राम जपाई ॥ मम आत्मज हो वुद्धिन पाई ॥ राम नाम का मुल्य घटाये ॥ भोग योनि चण्डाल सिधाये ॥१०४६॥ तब मै धर्यो पिता पद जाई ॥ करि क्रन्दन तिनसे बतलाई ॥ क्यों करि मुक्त योनिसो पावैं ॥ तुष्ट होय तब मोहि बतावैं ॥१०४७॥ जिनका सुत तैं नाम जपाये ॥ सो दशरथ गृह जन्म धराये ॥ तिनका चरण स्पर्श करावैं ॥ ताते योनि मुक्त सो पावैं ॥ १०४८ ॥ तवन हेतु पहुचे मै आये ॥

करी माथ पद श्रोस लगाये ॥ छुधानीचलखिवी जो कोजे ॥ पावन पतित नाम तजि दोजै ॥ १०४९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन गूहकको बचनको रामचन्द्र हरषाय ॥ मित्र मित्र मम मित्र भण लीना कण्ठ लगाय ॥ लीना कण्ठ लगाय दहनको बेग मगाये ॥ तिनको साची राख नाथ मित्रता कराये ॥ हो प्रसन्न पुन प्रभो गूहसे हर्ष अघाई ॥ जो चाहो सो लेहु अद्य मुझसे बरभाई ॥ १०५० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पाणिजोड़ गूहक बतलावैं ॥ मैं तव भृत्यन भृत्य कहावैं ॥ मै नहि सखायोग रघुराई ॥ तव सेवक करि हौं सेवकाई ॥१०५१॥ निशवासर तव नाम जपावैं ॥ अरु चरणाम्बुज भूल न जावैं ॥ यह बर मुझको दान कराई ॥ नित्य दया राखो रघुराई ॥ १०५२ ॥ अस-भण गूह चरण शिरनाये ॥ हो प्रसन्न रघुबीर उठाये॥ भणै सुहृत माग्यो जो भाई ॥ सो दीना मै होय सहाई ॥१०५३॥ सुन गूहक अतिशय हरषाये ॥ रत्न कनक उपहार कराये॥ हो सन्तुष्ट प्रभो ले लीना ॥ तब प्रयान गूहक गृहकीना ॥ १०५४ ॥ चढ़िस्यन्दन रघुबीर सिधाये । पहुंचे तीर्थ राजमो

आवे ॥ यहथा भोर उबड़ करि काना ॥ कीना बहु प्रकार पुन दाना ॥ १०५५ ॥ अश्व करी गायी धन भारी ॥ सुतमङ्गल कारण नृप सारी ॥ बाड़कगणकी द्दोन लुटाये ॥ भरद्वाज मुनि सदन सिधाये ॥१०५६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अवलोकन करि रामको हर्ष निकट मुनि आय ॥ तब रघुपति पितुश्री सहित द्दिज पदमो शिरनाय ॥ द्दिज पदमो शिरनाय विप्र आशीस करावैं ॥ चतुर्भुजा लखि वेष मुखजपुन शीर्ष निवावैं ॥ पश्च भूप करजोड़ भयो मुनिको कलपाइँ ॥ नाथ अमङ्गल कीन पुत्रको माथ निवाइँ ॥ १०५७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन वतुज भाषें मुशकाये ॥ आप प्रभोको पुत्र बताये ॥ यह तव भाग्य महालखि पाई ॥ विश्वपिता राघव शुभ भाई ॥१०५८॥ शुनभूज मनमो हरषाये ॥ पुत्र तुण्ड देखें मुशकाये ॥ सुर दुर्लभ प्राशित मुनि खाई ॥ तनय सहित प्राशन करवाई ॥ १०५९ ॥ करि प्राशन प्राशो हरषाये ॥ दिनकर पश्चिम ओर सिधाये ॥ मुनिवर प्रभुको शयन कराई ॥ बीतो अर्द्ध रात्रि जब आई ॥ १०६० ॥ तब ब्रह्मा सुरराज बुलाये ॥ भये खूब तिनको समुझाये ॥ भरद्वाज मुनि भवन सिधाई ॥

चक्षय शर धनु तूण रखाई ॥ १०६१ ॥ कह्यो स्वप्नमो तिन्है बुझाये ॥ दान करें प्रभुको हरषाये ॥ सुनत बचन सुरपति तब धाई ॥ अक्षय शरधनु तूण रखाई ॥ ॥ १०६२ ॥ भयो स्वप्नमो तिन्हैं बुझाये ॥ धन्वन निषङ्गरोप रखि धाये ॥ सो प्रभुको मुनि दान करावें ॥ जाते नाथ दनुज कुल घावें ॥ १०६३ ॥

॥ चमला छन्द ॥

यसदै उपदेश दिवौकस राज गये निज गेह महा हरषाये ॥ जब प्रात भयो तबलै मुनि देव दयो प्रभुको पदमो शिरनाये ॥ लखतूण शरासन रोप मनोहर नाथ खुशी चति होय उठायं ॥ गुरु नानक शाह सहाय भये कबिसिंह तबे दह छन्द बनाये ॥ १०६४ ॥

अथ मिथिलामो यज्ञरक्षा हेतु श्रीराम लक्ष्मणजीको लानेके वास्ते श्रीबिश्वामित्रका अयोध्या गमन।

॥ झूलना छन्द ॥

सुनी पाट्मो माथको नायकी ध्यान कीना तबै भूप आगार आये॥ हमेशा खुशाराममो गैर कीना अधीरामको साथ नाही तजाये॥ अभी नायको छोड़ना जो परेगातिसे ताड़की लिख भाखैं हसाये॥ करो भूप यारी करें राम खारी नहीं जान साथं हमेशा रहाये ॥ १०६५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मरीच सुबाहु मिथिला आई॥ कटक सहित उपद्रोह मचाई॥ यज्ञ करैं मुनिगण जब आये॥ भ्रष्ट करैं तब रक्त गिराये॥ १०६६॥ ताते मुनिगण अति घबड़ावैं॥ तब कौशिक तिनको समुझावैं॥ दशरथ पुत्र बिश्वपति लाई॥ देवैं दुष्ट दनुज दल घाई॥ १०६७॥ शुभ ब्राह्मणगण अति हरषाये॥ गाधि पुत्रको दीन पठाये॥ अवधि पुरी पहुंचे मुनि आई॥ भूप प्रणामकीन घबड़ाई॥ १०६८॥ बनुज

आशीर्वाद करावैं ॥ दे आसन पार्थिव तोखावैं ॥ पाणिजोड़ पुन भूप अलाये ॥ सुफल जन्म दर्शन तव पाये ॥ १०६९ ॥ कारण कवन धरा मर आवैं ॥ जो निदेश हो तवन बजावैं ॥ शुन धरणीश्वर हर्ष अलाये ॥ राम लक्ष्मण लेने आये ॥ १०७० ॥ क्या कारण पूछैं नर राया ॥ तब कौशिक तिनको बतलाया ॥ मरीच सुबाहु दनुज कहावे ॥ तवन नष्ट नितमेध करावैं ॥ ॥ १०७१ ॥ तिनको बध कारण रघुराये ॥ लेनेको आये नर राये ॥ शुन नरेन्द्र निज बुद्धि हरायो ॥ करि क्रन्दन मुनिसे बतलायो ॥ १०७२ ॥ मुनि अम्बक जो श्राप अलावैं ॥ ताको सत्य करण मुनि आवैं ॥ अस-भण कलप कलप नरनाथा ॥ पुन बोलैं मुनिपद धरि माथा ॥ १०७३ ॥

॥ झूलना छन्द ॥

अहो प्राणको आप मेरे हतो नाथ मै रामको नाहि देने अकाऊं ॥ जरा रामको देखने नाहि पाऊं तभी नाथ या गातको मै तजाऊं ॥ कहैं वे मुनी फेरके बातको छोड़ मै नाहिं तेरा पखंड़ा शुनाऊं ॥ अबै खालसासिंह बोलैं मुनीराज मै रामको ले बिना नाहि जाऊं ॥ १०७४ ॥

अथ श्रीभरत शत्रुघ्नजीको श्रीराम लक्ष्मणजो बोलके राजा दशरथ श्रीविश्वामित्र मुनिको दिया ।

॥ त्रिपदी छन्द ॥

कहैं भूप मुनिराज ॥ बालक क्या करैं काज ॥ सैन्यमुख्ये लीजिये हजार ॥ चक्र सर्व्व मीरनाथ ॥ दैत्य खर्व्व करैंपात । वाकसत्य मानिये हमार ॥१०७५॥ मेरा सुत प्राणनाथ ॥ क्यों करिमेदेवैं साथ ॥ युद्ध कहां बच्चा मम कौन ॥ कीना शुन विप्र कोप ॥ भाखैं तव वंश लोप ॥ करौं भूप सत्य बोलि दीन ॥ १०७६ ॥ हरिश्चन्द्र महाराज ॥ पायो बहुसुखे लाज ॥ दारासुत भूप को बिकाय ॥ कौनामै अवधि राज ॥ जानो नृप मोर काज ॥ काहे बिन धर्म कष्ट पाय ॥ १०७७ ॥ वैसाकरिडालो आज ॥ शुनो सत्य महाराज ॥ नहीं बेग दीजिये श्रीराम ॥ यज्ञ रिपू ध्वंश कर ॥ आवैं तव पुत्र धर ॥ सनौंका करिकेविप्रकाम ॥ १०७८ ॥ कौशिक की बजवाक ॥ शुन के राजा अवाक ॥ कौन शोच्य चित्तमो अपार ॥ देवै अङ्गज न सङ्ग ॥ मुनि वंश करै भङ्ग ॥ य बिचार कैकयी कुमार ॥ १०७९ ॥ दीना मुनिको

हमाय ॥ जाने त्रिज राम आय ॥ तुष्ट होय बेग
ध्यानकीन ॥ कोश पञ्च आय जब ॥ भरत शत्रुघ्नतब ॥
हाल बोल ब्राह्मणको दीन ॥ १०८० ॥ तात भ्रातको
रखाय ॥ मुझको दीना पठाय ॥ यातु धाम देवैं हम
मार ॥ सुन की गाधी कुमार ॥ चित्तमध्यकोपधार ॥
पावैं पुन लौट भूप द्वार ॥ १०८१ ॥ प्रजा गेह को
लकाय ॥ दीनापावकलगाय ॥ हाय हाय हाय लोग
कीन ॥ रामचन्द्र दौड़ आय ॥ देखे सज्जन हसाय ॥
अग्नी निज तेजघोचलीन ॥ १०८२ ॥ देख तुष्ट विप्र
होय ॥ दंत सर्व्व क्रोधखोय ॥ प्रभोजो प्रणाम हर्षकीन॥
भयो सिंह प्रेमलाय ॥ श्रीवाहि गुरु मनाय ॥ कौशिक
आशीस खूब दीन ॥ १०८३ ॥

अथ श्रीराम लक्ष्मणजीका मिथिला गमन ।

गजलंतरकोप चन्द बैत और दोहे की साथ ॥

॥ बैत ॥

मिश्रकोन के दुक्की सुभेषब बेकारारी है ॥ कापकी
काटनको भुजाखड्ग कटारी है ॥ १०८४ ॥

॥ दोहा ॥

शन्तनकी हितकारणे चलौं मुनी मै साथ ॥
असभण द्विजको साथ लै भयो जनका को नाथ ॥१०८५॥

॥ वैत ॥

मिथिलाकि अन्दर दैंतका अब जुलमजारी है ॥
मिशकीनके दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ १०८६ ॥

॥ दोहा ॥

जाकरिके सब दुष्टको शमन भवन पठवाय ॥ पुन
देखैं तव चरणको द्विजके मेध बचाय ॥ १०८७ ॥

॥ वैत ॥

शुन कर पिशरकि वात जल् चश्मोसि जारी हैं ॥
मिशकीनके दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ १०८८ ॥

॥ दोहा ॥

शुन राघवकि बचनको लक्ष्मणको दै साथ॥ मुनि
वरके पद शीर्षधर भयो रोय नरनाथ ॥ १०८९ ॥

॥ वैत ॥

दरवेशका मुझपर मुनीकी शाप भारी है ॥
मिशकीनके दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ १०९० ॥

॥ दोहा ॥

मे केवल तव बासते दीना प्राण निकार ॥
चाहे अब रक्षा करैं चाहे डालैं मार ॥ १०९१ ॥

॥ बैत ॥

कहने लगी मुनिराज क्यों हिम्मतको हारी है ॥
मिथकीनकी दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ १०८२ ॥

॥ दोहा ॥

पुत्र ध्यान करि रामको मोह करैं नरराय ॥
दैंतनकी वध कारचे विश्वपती यह आय ॥ १०८३ ॥

॥ बैत ॥

सुन कर तशल्ली बातको धीरजको धारी है ॥
मिथकीनकी दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ १०८४ ॥

॥ दोहा ॥

तब जननी पख पुत्रको मुनि करमो पकड़ाय ॥
पाणिजोड़ बिनती करैं मनमो अति घबड़ाय
॥ १०८५ ॥

॥ बैत ॥

घर बाब हमारे पिशरका आना बिचारी है ॥
मिथकीनकी दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ १०८६ ॥

॥ दोहा ॥

सुन रानीकी बचनको बिप्र भयो मुशकाय ॥
मत्ख रखा करि मातजी बेग पुत्र तव आय ॥१०८७॥

॥ बैत ॥

सुनकर य बातैं बिप्रको मादर पुकारी है ॥

मिश्रकीनको दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ १०९८ ॥

॥ दोहा ॥

शिवा शीव रक्षा करैं सदा दाहनी होय ॥
जाते यह मम पुत्रको कष्ठ लगे नहि कोय ॥१०९९॥

॥ बैत ॥

शुन कर दोषा मुनि जल्दसे जङ्गल पधारी है ॥
मिश्रकीनको दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥११००॥

॥ दोहा ॥

दिनकरकी प्रभु धूपसे व्याकुल गात कराय ॥
देख मुनी पञ्चबीरको दीना मन्त्र शिखाय ॥११०१॥

॥ बैत ॥

वे मन्त्रके अकबालसे सब दुखको टारी है ॥
मिश्रकीनको दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ ११०२ ॥

॥ दोहा ॥

क्षुधा पिपासा आदि ली रोग शोक भगवन्त ॥
तीन मन्त्रकी योगते कीना सबका अन्त ॥ ११०३ ॥

॥ बैत ॥

देख कर वहोस्तसे सुर सब विचारि है ॥
मिश्रकीनको दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ ११०४ ॥

॥ दोहा ॥

अब दैतन वध कारणे धरयो चाप रघुनाथ ॥

असभय निज निज भवनमो चलेजोड़ सुरहाथ ॥ ११०५ ॥

॥ वैत ॥

शायेर सिंहको मिलनेकी तुझसे इन्तजारी है ॥
मिशकीनकी दुखसे मुझे अब बेकरारी है ॥ ११०६ ॥

अथ ताड़का बध।

गजल तरजिया बन्द वैत और अमला छन्द व पादाकुलक छन्द व दोहेके साथ वैत।

क्या खूब कौशल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरकी हकमे चश्म हरिका क्या करारा है ॥ ११०७॥

॥ अमला छन्द ॥

मुनि गाधिजसे जब मन्त्र लयो तब नाथ गुरू पदमो शिरनाये ॥ बहु दै करि आशिरवाद मुनी हरिको पुन लै गृह ध्यान कराये ॥ जब काननसे कछु दूर गये तब कौशिक बाड़व भाष शुनाये ॥ इतमारग पाथि शुनो रघुनाथ कहो जितसे उतसे हम जाये ॥ ११०८ ॥

॥ वैत ॥

क्या खूब कौशल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥ काफर की हकमे चश्म हरिका क्या करारा है ॥ ११०९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

उस मारग प्रस्थान करावैं ॥ मिथिला रोज नयनमो जावैं ॥ तवन पन्थ दै करि जो जाऊं ॥ प्रहर अनलमो मिथिला पाऊं ॥ १११० ॥

। बैत ॥

क्या खूब औचल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरकी हकमें चश्म हरिका क्या करारा है ॥ ११११ ।

॥ दोहा ॥

तीन रोजकी वाटमे निरबिघनोसि जाय ॥ प्रह-
रतीनकी मार्गमो दुष्ट ताड़का खाय ॥ १११२ ॥

॥ बैत ॥

क्या खूब औचल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरकी हकमे चश्म हरिका क्या करारा है ॥ १११३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत बचन रघुपति मुशकाये ॥ मुनिवरको करजोड़ चलाये ॥ वीर आज तक कोय न आयो ॥ तातै पकड़ पकड़ वह खायो ॥ १११४ ॥

॥ बैत ॥

क्या खूब औचल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरकी हकमे चश्म हरिका क्या करारा है ॥ १११५ ॥

॥ दोहा ॥

आज ताड़का मारकी निस्कण्टक करि बाट ॥

चलू आपकी साथमें श्रोतम प्रभूकी घाट ॥ १११६ ॥

॥ बैत ॥

क्या खूब चौवल दस्तमें शरधनुषधारा है ॥
काफरको हकमें चश्म हरिका क्या करारा है॥१११७॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन मनमो कौशिक बतलाये ॥ अब मै रामचन्द्र को पाये ॥ पुन बोलें मुनि हास्य कराई ॥ मम वध कारण युक्ति बनाई ॥ १११८ ॥

॥ बैत ॥

क्या खूब चौवल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरको हकमें चश्म हरिका क्या करारा है ॥१११९॥

॥ चमर छन्द ॥

यह मारग है सुत जान कहो किह कारणमें नहिं ताड़ शकावें ॥ जबचाकरिको वह चोट करै तब छोड़ मुझे गृह आप सिधावें ॥ शुन बाक सुधा समनाथ भये विरथा हम राघव नाम धरावें ॥ तव सारस पाद शरासनको बल मारतिसे यमलोक पठावें ॥११२०॥

॥ बैत ॥

क्या खूब चौवल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरको हकमे चश्म हरिका क्या करारा है ॥११२१॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभक्ष नारायण मुसकाये ॥ तब वह मारग है मुनि आये ॥ आगे रामचन्द्रको कीना ॥ पाछे लक्षमण को करि दीना ॥ ११२२ ॥

॥ वैत ॥

क्या खूब कौशल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥ काफरकी हक्मे चश्म हरिका क्या करारा है ॥११२३॥

॥ दोहा ॥

वीर युगलकीमध्यमो चली विप्र हरषाय ॥ पौंच चाप टङ्कारको नाथ करैं गर्ज्जाय ॥ ११२४ ॥

॥ वैत ॥

क्या खूब कौशल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥ काफरकी हक्मे चश्म हरिका क्या करारा है ॥११२५॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत धनुष टङ्कार रिशाई ॥ प्रभुको भगी ताड़का खाई ॥ भल अहार विधि मोर पठाये ॥ रूप निरख तब मोहि रहाये ॥ ११२६ ॥

॥ वैत ॥

क्या खूब कौशल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥ काफरकी हक्मो चश्म हरिका क्या करारा है ॥११२७॥

॥ दोहा ॥

किन्तु सुत बहुरोजसे नर अहार नहि पाय ॥
ताते मै निज औज्ञको अब नहिं रोक सकाय ॥
॥ ११२८ ॥

॥ बेत ॥

क्या खूब औमल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरकी हक्मे चश्म हरिका वया करारा है ॥११२९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन रघुपति मनमो मुशकाये ॥ भयो ताड़काको समुझाये ॥ अल्पजोरतन नारधरावैं ॥ क्यो करि आय मुझे धरि खावैं ॥ ११३० ॥

॥ बैत ॥

क्या खूब औमल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरकी हक्मे चश्म हरिका क्या कराराहै ॥११३१॥

॥ चमला छन्द ॥

शुन वाक तबे द्रुत कोयम नारि शरीर भयानक धार दिखाई ॥ मुखबा करिके हरिको झपटे तब नाथ सड़ासड़ बाण चलाई ॥ तब भूमि गिरीधरको वह नारि कयो तन त्याग महा तड़फाई ॥ कविसिंह भयो सब साधु शुनी तब लेख सबे लखि फूल गिराई ॥ ११३२ ॥

॥ बैत ॥

क्या खूब चौपल दस्तमे शरधनुषधारा है ॥
काफरको हक्‌में चश्म हरिका क्या करारा है ॥११२३॥

अथ श्रीराजा इन्द्र व द्वादश सूर्य्य एवं ऊनपंचास पवनका जन्म ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दुष्ट ताड़का मारके मुनिको कीन प्रणाम ॥
द्विजवर आशीर्वाद दे चले अपाने धाम ॥ चले अपाने धाम अन्न मारुत भूपाई ॥ हर्ष भये मुनि-राज नाथको निकट बुलाई ॥ यहां प्रभो पवमान जन्म उल्लास धराये ॥ जिनके पूर्व्वज इन्द्र और दिनकर कहिलाये ॥ ११२४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन रघुपति पूछें सुखदाई ॥ नाथ कथा सुर जनम सुनाई ॥ कारी दुष्ट सुभटको मुनिराजे ॥ तब

वक्राज भाषें मुसकाये ॥ ११३५ ॥ अदिती दक्ष अङ्गजा नामं ॥ काश्यपकी भार्य्या शुभ धामं ॥ कीना तपस घोर बन आई ॥ तातें बर शङ्करसे पाई ॥११३६॥ सुत सुन्दर सो प्रसव करायं ॥ इन्द्र नाम तिनका रखवायं ॥ स्वर्गराज कीना सो आई ॥ पुन सुत द्वादश प्रसव कराई ॥ ११६७ ॥ सूर्य्य नाम तिनका रवि दीना ॥ तिमिर त्रिभूवनका हर लीना ॥ गर्भवतीं पुन दक्ष कुमारी ॥ कीना कश्यप पश्च बिचारी ॥ ११३८ ॥ यह अङ्गज अब जो मम होई ॥ विश्वप्राण ख्याती धरि सोई ॥ घट घटमो सुतबास करावैं ॥ अति बिक्रम निज गात धरावैं ॥ ११३९ ॥ अस बिचार कश्यप हरषाये ॥ पहुंचे मुनि नारद तब आये ॥ हर्ष पश्च पूछैं मुसकाई ॥ तब कश्यप सुत हाल जनाई ॥ ११४० ॥ श्रवण मात्र नारद मुनि धाये ॥ पहुंचे इन्द्रलोकमो आये ॥ सुरपतिको भाषे समुझाई ॥ होवै बीजवन्त तव भाई ॥ ११४१ ॥ जनक भूप तव मोहि बताये ॥ शुनत तास पाकरि मै धाये ॥ तव मङ्गल नृप नित्य मनावैं ॥ तातें मै तव पास जनावैं ॥ ११४२ ॥ वेग युक्ति कीजै अस जाई ॥ जातें पात होय तव भाई ॥ शुन हरिहय मनमो भय पाये ॥ सूक्षम रूप धरि प्यान कराये ॥ ११४३ ॥ पहुंचे मात

भवनमो आई ॥ निद्रामो जननी निज पाई ॥ गर्भ मध्य प्रस्थान करावें ॥ सप्त टूक करि भात खपावें ॥ ११४४ ॥ पुन मघवत मन मध्य बिचारें ॥ यद्यपि भात गात पुन धारें ॥ सो मम व्यर्थ परिश्रम होई ॥ अस बिचार भूभूटुक सोई ॥ ११४५ ॥ सिन्धु सिन्धु पुन टूक कराये ॥ हो प्रसन्न निज सदन सिधाये ॥ मास दिशा पूरण हो आई ॥ पुत्र प्रसव कीना तब माई ॥११४६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

उश्वास भागके होनते तन उश्वास धराय ॥ बायू ख्याती पायकी रहे बिश्वमो छाय ॥ रहे बिश्वमो छाय लाज सूत्रामन् पाई ॥ हर्त्ता कर्त्ता जान प्रभो को शीर्ष निवाई ॥ भये खालसासिंह नाथ मुनकी हरषाये ॥ मुनि गौतमके गेह आय कौशिक बतलाये ॥ ११४७ ॥

अथ अहल्या उद्धार ।

गजल् तरकीब बन्द बेत और दोहेमें सात बेत ॥

क्या मोक्षकी इक्मे प्रभोका नाम जारी है ॥
पापकी काटनेको क्या शुभ कर्मधारी है ॥ ११४८ ॥

॥ दोहा ॥

मुनि कौशिक प्रभुको भये गुनो तामरस नैन ॥
अपंथकोजे चरणको करो शिलाजो शैन ॥ ११४९ ॥

॥ बेत ॥

कहने लगे जगदीश क्या चितमे बिचारी है ॥ क्या
मोक्षकी इक्मे प्रभोका नामजारी है ॥ ११५० ॥

॥ दोहा ॥

पूर्व्व कथा रघुनाथको भयो सुनौ समुझाय ॥
गौतमको यह नारि हैं इन्द्र भ्रष्टकर जाय ॥११५१॥

॥ बेत ॥

इस कारकी पूछैं नाथ फिर क्या जुल्मढारी है ॥
क्या मोक्षकी इक्मे प्रभोका नामजारी है ॥ ११५२ ॥

॥ दोहा ॥

पुन गाधिज हरिको भये गौतमकी गृह आय ॥
नित विद्या शिक्षण करैं तौभी कुमति न जाय
॥ ११५३ ॥

॥ बेत ॥

सुधंद्र कि जीके माहिरू वाकिफ विचारी है॥ क्या मोक्षकी हक्‌मे प्रभोका नामकारी है॥ ११५४ ॥

॥ दोहा ॥

कौनतरे गुरुनारिको नष्ट करौं मैं आज॥ पागल की सम होयकै कौन युक्ति सुरराज॥ ११५५ ॥

॥ बेत ॥

कउवेका वे स्वरधारके कां कां इकारी है॥ क्या मोक्षकी हक्‌मे प्रभोका नामकारी है॥ ११५६ ॥

॥ दोहा ॥

चढ़े निशामो कागका सुनत गये मुनि धीर॥ अवगाहनके कारणे चले सरोवर तीर॥ ११५७ ॥

॥ बेत ॥

देखकर इन्द्रने तन् गौतमका धारी है॥ क्या मोक्षकी हक्‌मे प्रभोका नामकारी है॥ ११५८ ॥

॥ दोहा ॥

गुरु शरीरको धारके गुरु मन्दिरमें जाय॥ कान्त अहल्या जानके पूछैं सन्मुख आय॥ ११५९ ॥

॥ बेत ॥

किसवास्ते इशवक्त पद घरमे धारी है॥ क्या मोक्षकी हक्‌मे प्रभोका नामकारी है॥ ११६० ॥

॥ दोहा ॥

शुभ गुरु पतनीके वचन इन्द्र भये मुसकाय ॥
तव स्वरूप मम चित्तको दग्ध करयो है धाय ॥११६१॥

॥ बैत ॥

तिसवास्ते तप छोड़ घरमे कयमडारो है ॥ क्या
मोचकी हकमे प्रभोका नामकारी है ॥ ११६२ ॥

॥ दोहा ॥

निज स्वामी वह जानकी धर्मशील शुभनार ॥
सेवामों प्रस्तुत भई इन्द्रधर्मको जार ॥ ११६३ ॥

॥ बैत ॥

सुझको कहै कर चले चित खौफ भारी है ॥
क्या मोचकी हकमे प्रभोका नामकारी है ॥ ११६४ ॥

॥ दोहा ॥

ज्यों वासव घरसे गये त्यों गौतम गृह आय ॥
पापि अहल्या जोड़की भाषैं सन्मुख धाय ॥११६५॥

॥ बैत ॥

क्यों आज शौहर कन्तको चितसे विसारो है ॥
क्या मोचकी हकमे प्रभोका नाम कारो है ॥ ११६६ ॥

॥ दोहा ॥

शुभ भार्य्याके वचनको भये मुनी समुझाय ॥
रात्रि बहुत मै देखकी लौट भवनमो आय ॥ ११६७ ॥

॥ बेत ॥

काका क्या कांकां शोर कर कोना ठगारी है ॥
क्या मोचके हक्मे प्रभोका नामकारी है ॥ ११६८ ॥

॥ दोहा ॥

शुन स्वामीके बचनको नारि भये करजोर ॥
प्रथम गये जब स्नानको तब समुझे नहि भोर ॥ ११६९ ॥

॥ बेत ॥

किसवास्ते फिर कुछेसे पदको भिकारी है ॥ क्या
मोचके हक्मे प्रभोका नामकारी है ॥ ११७० ॥

॥ दोहा ॥

शुन दाराके वाकको गौतम अति घबड़ाय ॥
ध्यान योगते इन्द्रका हाल सबै लो पाय ॥ ११७१ ॥

॥ बेत ॥

मुरीदपर होकर खफा तिनको हकारी है ॥
क्या मोचके हक्मे प्रभोका नामकारी है ॥ ११७२ ॥

॥ दोहा ॥

शुन शिष्यके वचनको शिक्षा कर भय पाय ॥
आकरके गुरुचरणमो दीना शीर्ष नमाय ॥ ११७३ ॥

॥ बेत ॥

होकर खफा मुनिराजको फिर जुफ्फारो है ॥
क्या मोचके हक्मे प्रभोका नामकारी है ॥ ११७३ ॥

॥ दोहा ॥

तज्यँ गर्व्यँ ही इन्द्रको भये विप्र धमकाय ॥
खूब दक्षिणा वेदकी दीना मुझको आय ॥ ११७५ ॥

॥ बैत ॥

अब यह तुम्हारे दानकी दीक्षा करारी है ॥ क्या
मोक्षकी इकमे प्रभोका नामकारी है ॥ ११७६ ॥

॥ दोहा ॥

चन्द्रयोनिकी कारणे दियो धर्म मम आय ॥
योनि दिखाइत गातमो धरी शिष्य तुम आय
॥ ११७७ ॥

॥ बैत ॥

शुनकर गुरूकी शापको भग तन्मे धारी है ॥ क्या
मोक्षकी इकमे प्रभोका नामकारी है ॥ ११७८ ॥

॥ दोहा ॥

क्षीरसिन्धुतट जायकी अयुत बर्ष तपघोर ॥ करकी
योनी मुझकार धर्यो नयन सम मोर ॥ ११७९ ॥

॥ बैत ॥

फिर मुनीको जुल्मजोके तर्फजारी है ॥ क्या
मोक्षकी इकमे प्रभोका नामकारी है ॥ ११८० ॥

॥ दोहा ॥

कहा अहल्याको मुनी शिला होय करि वास ॥
करो आप यह याममो आसे तन परवास ॥ ११८१ ॥

॥ बैत ॥

शुन बारकी चश्मोसे चली आंसुको धारी है ॥
क्या मोजकी हक्मे प्रभोका नामकारी है ॥ ११८२ ॥

॥ दोहा ॥

तबसे मुनिकी नारि सो शिला होय तब पास
सूतो हैं यह भूमिमो तन परजामी घास ॥ ११८३ ॥

॥ बैत ॥

अब कद्म इन पर दीजिये आशमे हमारी है ॥
क्या मोजकी हक्मे प्रभोका नामकारी है ॥ ११८४ ॥

॥ दोहा ॥

शुन गाधिजके बचनको रामचन्द्र हरषाय ॥
शिला शीषंपर कद्मको दीना बेग लगाय ॥ ११८५ ॥

॥ बैत ॥

धरबार अपानेरूपको उस्तत उचारी है ॥ क्या
मोजकी हक्मे प्रभोका नामकारी है ॥ ११८६ ॥

॥ दोहा ॥

खबर पाय आये मुनी गौतम अति हरषाय ॥
ले चढांकी भवनमो चले राम गुण गाय ॥ ११८७ ॥

॥ बैत ॥

शायेर सिंहको वे कद्मको अब बुन्दकारी है ॥
क्या मोजकी हक्मे प्रभोका नामकारी ॥ ११८८ ॥

अथ केवट कृतार्थ ।

गजल् तरकीप बन्द वेत और दोहेके साथ

॥ वैत ॥

क्या कदमका अकबाल है पत्थलको तारा है ॥
पापीके टूटे घरके इक् मुक्तीका गारा है ॥ ११८६ ॥

॥ दोहा ॥

शिला अहल्या तारके कौन प्रभो प्रस्थान ॥
भीष्म प्रसूकी घाटमो आ पहुंचे भगवान ॥ ११६० ॥

॥ वैत ॥

देखकर ले नाव केवट घर पधारा है ॥ क्या
कदमका अकबाल है पत्थलको तारा है ॥ ११६१ ॥

॥ दोहा ॥

तब केवट पर कोपकर विप्र भयो धमकाय ॥ देख
मुझे ले नावको क्यों पामर भग जाय ॥ ११६२ ॥

॥ वैत ॥

तब दस्तको वह जोड़के मुखसे उचारा है ॥
क्या कदमका अकबाल है पत्थलको तारा है ॥ ११६३ ॥

॥ दोहा ॥

नाथ सुभग यह नीरको पाप कहांसे लाय ॥
इनके पदकी धूलकी औगुण से गुन पाय ॥ ११६४ ॥

॥ बैत ॥

भक्को कृनुशानकार सुर नद पधारा है॥ क्या
कम्मका अकबाल है पथ्थलको तारा है॥ ११९५ ॥

॥ दोहा ॥

दास पाय सो कारणे दीना नाव लुकाय ॥ चरण
कमल रज पायके जो मानुष होजाय ॥ ११९६ ॥

॥ बैत ॥

तब क्यों कार हमारे बाल बच्चोंका गुजारा है॥
क्या कम्मका अकबाल है पथ्थलको तारा है॥११९७॥

॥ दोहा ॥

और त्रिया मम कर्कशा श्रवण मात्र मुनिराय॥
दे गाली मुझको भयौ क्यो असजन तिहाय ॥११९८॥

॥ बैत ॥

तिश्वास्ते मुनिराज मै चितमे बिचारा है॥ क्या
कम्मका अकबाल है पथ्थलको तारा है॥ ११९९ ॥

॥ दोहा ॥

जो मुझको आज्ञा करैं चरण धोय कर नाथ॥
पार करूं पखमीरको तरणी पर तब साथ ॥१२००॥

॥ बैत ॥

सुनकी रंगीली बातको कौशिक उचारा है॥ क्या
कम्मका अकबाल है पथ्थलको तारा है॥ १२०१ ॥

॥ दोहा ॥

पादपद्म पख भ्रातसी धोय करी दृत पार ॥
शुन केवट अति मग्न हो प्रेम चित्तमो धार ॥१२०२॥

॥ बैत ॥

धोकरके वे शुभ कद्मको जलमुखमे डारा है ॥
क्या कद्मका अकबाल है पथ्थलको तारा है ॥१२०३॥

॥ दोहा ॥

जन्म जन्मके पापको केवट दूर कराय ॥ ले
ईश्वरको गोदमे तरणी पर बैठाय ॥ १२०४ ॥

॥ बैत ॥

खेने लगे तब दस्तसे क्या डांड़ मारा है ॥ क्या
कद्मका अकबाल है पथ्थलको तारा है ॥ १२०५ ॥

॥ दोहा ॥

राम नामको जाप कर केवट पार कराय ॥ प्रभु
पद नौका स्पर्शकर कञ्चनकी होजाय ॥ १२०६ ॥

॥ बैत ॥

होकर खुशी शिर कद्म धर केवट उचारा है ॥
क्या कद्मका अकबाल है पथ्थलको तारा है ॥१२०७॥

॥ दोहा ॥

मै गरीब अति पातकी तब दर्शनको पाय ॥
जन्म जन्मके पापको दीना आज खपाय ॥ १२०८ ॥

॥ बैत ॥

इस्तौर उस्तत करके वह घरको सिधारा है ॥
क्या कद्रुका अकबाल है पथ्थलको तारा है ॥१२०९॥

॥ दोहा ॥

तब रघुनन्दन बिप्रके मेधशालमो आय ॥ प्रथम
मुनीगणको प्रभो पदमो माथ लगाय ॥ १२१० ॥

॥ बैत ॥

कर करके आशीर्व्वादको मुनिगण उचारा है ॥
क्या कद्रुका अकबाल है पथ्थलको तारा है ॥१२११॥

॥ दोहा ॥

धन्य दिवस यह आज है प्रभुके दर्शन पाय ॥
असभण दौना कमल फल प्राशन नाथ कराय ॥१२१२॥

॥ बैत ॥

शायेर सिंह पापी कद्रुसो चितसे बिसारा है ॥
क्या कद्रुका अकबाल है पथ्थलको तारा है ॥१२१३॥

अथ यज्ञ रक्षा ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चन्द्र राखि प्रभु बास करि मुनिगणको बतलाय ॥ सो कारज अब कीजिये जो कारण बुलवाय ॥ जो कारण बुलवाय शुनत मुनिगण हरषाये ॥ बेद ऋचा उच्चार मेध आरम्भ कराये ॥ हव्यबाह शुन मन्त्र कुण्डकी मध्य समावैं ॥ पढ़ ब्राह्मणगण मन्त्र हव्य तिनकी मुख पावैं ॥ १२१४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताकी धूम गगणमो छाई ॥ पश्य यातुगण अति हरषाई ॥ भणै मरीच दुष्टको जाये ॥ बिप्र अध्वर आरम्भ कराये ॥१२१५॥ शुन मारीच कोप चितलाई॥ भणै सुबाहुको समुझाई ॥ नित्य क्रतू मै नष्ट करावैं॥ तौभी बिप्र न बन्द रखावैं ॥ १२१६ ॥ सुरकी तुष्ट कारणको भाई ॥ नित्य यज्ञ करते द्विज आई ॥ अद्य तिन्है यमलोक पठावैं ॥ सप्ततन्तु तब बिप्र भुलावैं ॥१२१७॥ बेग बलय सब त्यार कराई ॥ देहु दहनमो बिप्र जलाई ॥ शुनत सुबाहु अति हरषाये ॥ कटक सब्बं द्रुत त्यार कराये ॥ १२१८ ॥ बरछी तेगा बाण करारी ॥ छूरी छूरा और कटारी ॥ सुरापान करि बुद्धि हराये ॥ अभ्र पन्थ दै गमन कराये ॥ १२१९ ॥

पहुंचे मेधशालमो आई ॥ लखि प्रभुको अतिशय भय पाई ॥ सोच चित्त मारीच कराये ॥ जिनके त्रास पाय दुख आवैं ॥ १२२० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तिनको मुनिगण अवधिसे मिथिलामो ले आय ॥ अब क्यों करि रणते फिरैं अयश त्रिभूवन गाय ॥ अयश त्रिभूवन गाय मरण ताते भल भाई ॥ अस विचार मारीच भये बलको समुझाई ॥ यह बालक पख चाप पाणि सन्मुख जो आवैं ॥ कालहुकीहैं काल बाल लखि भूल न लावैं ॥ १२२१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सावधान हो समर कराओ ॥ धरि धरि ब्राह्मणको गण खाओ ॥ तीनकोट रजनीचर भाई ॥ तिनका भाग नयन करवाई ॥ १२२२ ॥ प्रथम कोट बल प्रधन करावैं ॥ तवन थकें दूसर पुन आवैं ॥ तिनको अहत पख्य द्रुत भाई ॥ चखु भाग पुन देहु पठाई ॥ १२२३ ॥ सुन सुबाहु तब भाग कराये ॥ दोना चन्द्र कोट पठवाये ॥ देख सकल बाड़व घबड़ाये ॥ रामचन्द्रको भाग सुनाये ॥ १२२४ ॥ देखो पुष्करमो रघुराई ॥ पहुंचे दनुज समितिको आई ॥ तब विष्णूपद विष्णु बढ़ायो ॥ यातुधमू देखन सब पायो ॥ १२२५ ॥

तब मार्गण रघुबीर चलाये ॥ दीना कर्बुर कोट खपाये ॥ पुन द्वितीय पृतना द्रुत आयो ॥ तवन रोष करि रोप चलायो ॥ १२२६ ॥ तिनको लछमण दीन खपाये ॥ तब आशुग पुन नाथ चलाये ॥ ताते ध्वजिनी तवनखपावैं ॥ बल तृतीय सम्मुख पुन आवैं ॥ १२२७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

बाण सड़ासड़ पाणिते मारा चक्र चलाय ॥ तिनको लछमण पध्यमें दीन तड़ातड़ घाय ॥ दीन तड़ातड़ घाय प्रभो पवित्र असमारो ॥ कदलीके समभूमगिरे अस्त्रपटलसारो ॥ देख सुबाहु बीर गज्य सम्मुख चलि आये ॥ मारि भूमि खगराम ताहि यमलोक पठाये ॥ १२२८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लखि मारीच लाज बहु पावैं ॥ रण कारण सम्मुख तब आवैं ॥ नारायणको गर्ज्य चलाये ॥ कवन कोर चलू बल घाये ॥ १२२९ ॥ मुनिका पच्छ कीन करि आवैं ॥ तिनको सुभको वेग दिखावैं ॥ पुन रघुनन्दन हर्ष चलाये ॥ जो जन दुष्ट ताड़का घाये ॥ १२३० ॥ सो आसर बय कोट खपावैं ॥ तत्त्व तवन तव कारत रहावैं ॥ सो विधिने

अवदीन पठाई ॥ भेंट करी बमसी द्रुत आई ॥ ॥ १२३१ ॥ सुनत बचन मारीच रिसाये ॥ मारा रघुनाथको धाये ॥ निरख लक्ष्मण बीर रिसाई ॥ मारा बिशिख गर्ज्जकी आई ॥१२३२॥ ताते भरताका द्रुत धाये ॥ बंध्य बाण तब नाथ चलाये ॥ गिरा दुष्ट लङ्कामो जाई ॥ अग्र शास्त्र सब यातु कराई ॥१२३३॥ ताते लाज दुष्ठ बहपाये ॥ कीना तपस बिपिनमो आये ॥ द्विजगण हत पूरण मखकीना ॥ आशीर्व्वाद प्रभोको दीना ॥ १२३४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

देख स्वर्गमो लिख सब महा कुलाहल कीन ॥ जय जय जय जय शब्द करि पुष्प वृष्टि करि दीन ॥ पुष्प वृष्टि करि दीन सन्त सज्जन हरषाये ॥ अधी भूमिके मध्यशेषको मङ्गल गाये ॥ भणै खालसासिंह सुनो सज्जन चित लाई ॥ हरि क्रोड़ाबेअन्त अल्पमे भाष सुनाई ॥ १२३५ ॥

अथ सानुज श्रीरामचन्द्रजी का राजा जनकर्क भवनमो गमन ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

बिप्र मेध करवायकी नारायण हरषाय ॥ तपस्या कारी भवनमो रहे निकार्य्य भुलाय ॥ रहे निकार्य्य भुलाय काल मिथिलेश्वर पाये ॥ सीतापति यह जान मगनह्वो पत्र लिखाये ॥ मार्ग बदी तिथि दिशा शुक्र बासरमो आई ॥ जो तोड़ै शिवचाप दान सीता सो पाई ॥ १२३६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अस लिखि लिखि लीपी पठवाये ॥ पढ़ पढ़ भूप सर्व्वं चलि आये ॥ बिश्वामित्र पत्रिका पाई ॥ बांच हर्ष हरिकी बतलाई ॥ १२३७ ॥ जनक भूप यह पत्र पठाये ॥ जो तोड़ै कार्म्मुक यह आये ॥ ताको सीता दान करावैं ॥ चलो आपको चाप दिखावैं ॥ १२३८ ॥ शुन रघुबीर भये मुशकाये ॥ तव शासन नहि टार शकाये ॥ जहा कहैं तव साथ सिधावैं ॥ शुनत बचन गाधिज हरषावैं ॥ १२३९ ॥ बिप्र सर्व्व ले साथ सिधाये ॥ पहुंचे राजद्वारमो आये ॥ समाचार मिथि-लेश्वर पाई ॥ हर्ष निकट पहुंचे द्रुत आई ॥१२४०॥

मुखज ब्रह्मको शीर्ष निवाये ॥ मुनिगण आशीर्वाद कराये ॥ युगम भाल ऋषिको अखि प्रायं ॥ मम शोव पूछैं मुसक्यायं ॥ १२४१ ॥ श्याम शुक्ल सुन्दर अंग भाई ॥ कोट काम लखरूप लजाई ॥ चन्द्रवदन पद पद्म समाना ॥ पुत्र युगल कितसे मुनि आना ॥१२४२॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मुनि सुतहैं यह भात पक्ष की सुनि राज-कुमार ॥ केश बिराजत शीर्षपर पाणि चाप शरधार ॥ पाणि चाप शरधार त्रिभुवन लोन रिझाई ॥ कहो नाथ अवहाल सत्य मुझको समुझाई ॥ शुन गाधिज अति हर्ष सर्व परिचय बतलाये ॥ तिलक रघूकुल पुत्र युगल दशरथकी जाये ॥ १२४३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मख रक्षा कारण मै लावें ॥ मार ताड़का शिला तरावें ॥ केवटका भवबन्धन घाये ॥ स्वर्ण नाव पदस्पर्श कराये ॥ १२४४ ॥ लोचन कोट असुरको मारैं ॥ मेध राखि तव भवन पधारैं ॥ शुन भुनता अतिशय हरषाये ॥ पाणि जोड़ मुनिसे बतलाये ॥ १२४५ ॥ अब सीतापपिको मै पावैं ॥ भीम चाप रघुवीर खपावैं ॥ विष्णुलोक तजिके निज आये ॥ धन्य भाग दर्शन मै पाये ॥ १२४६ ॥ असभण प्रभुको दीन टिकाई ॥

खबर जानकोमे यह पाई ॥ सखिगन से पूछैं मुसकाये ॥ किन कोके कौशिक मुनि आये ॥ १२४७ ॥
कैसे वीर रूपहैं कैसे ॥ जाते तात भुलाने ऐसे ॥ सुनत सखीगण हर्ष बढ़ावें ॥ यद्यपि आप तिन्है लखि पावें ॥ १२४८ ॥ गृह कारज सब त्याग कराई ॥ रही ध्यान तिनकी धरि माई ॥ सुन जगदम्बा हर्ष बढ़ावें ॥ बहु उपमा करि मोहिं बतावें ॥ १२४९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

बिन देखे निज नयनसे मोहि प्रतीत न आय ॥ सुनत सखीगण हर्षके कोठेपर ले जाय ॥ कोठेपर ले जाय भये हरिको दिखलाई ॥ रामचन्द्र हैं श्याम शुक्ल लच्मण लघु भाई ॥ भये खालसासिंह पश्य लचम्या हरषावैं ॥ निज स्वामीको चीन्ह मात द्रुत माय निवावैं ॥ १२५० ॥

अथ श्रीलक्ष्मीजी श्रीनारायणजीसे विवाह हेतु श्रीगिरिजा देवीसे बर प्राप्त ।

॥ मस्नवी ॥

प्रभोको सिया चश्मसे देखा जब ॥ गिरफ्तार हुई मोहब्बत्मे तब ॥ हाजित् नहीं उनको अक्सीरकी ॥ बांकीसी जुल्फोंने दिल्चाककी ॥ १२५१ ॥ दिवानी हुई माहरू देखके ॥ मनाने लगी देवको बैठके ॥ औव्वल् गजानन को शुमरण किया ॥ दोयम् हुताशन मना कर लिया ॥ १२५२ ॥ तीजे महेन्द्रको बेयाद कर ॥ चौथे वरुण कालका ध्यान धर ॥ किया अस्तुती दस्तको जोड़ के ॥ मनाने लगी दीकपालोंको वे ॥१२५३॥ महादेवको याद दिलसे किया ॥ गिरजाको क्या भाट मनाकर लिया ॥ लगीं कहने चण्डी तूं क्यों याद की ॥ तब सीताने मादर पेयों पकड़की ॥ १२५४ ॥ शादी मेरी रामसे कीजिये ॥ औ तावत् अपानी उन्हे दीजिये ॥ तोहूँ प्रभो आप ही दस्तमे ॥ तो होवे खुशी मात हूअ वक्तमे ॥ १२५५ ॥ सुनकर खुशी हो भिवानी कहा ॥ वक्गा मे तुझको बो

मुझको कहा ॥ वही रामकि कथका ध्यान धर ॥ और
उनकी तूं नामका आपकार ॥ १२५६ ॥ करेंगे वे शादी
तेरी भक्तिसे ॥ ले तोड़ें अभी चापको दस्तसे ॥ सुनकर
खुशी जानकी हो बहुत ॥ पूजन किया शङ्करीको
बहुत ॥ १२५७ ॥ फूलोंके गजरे गलेमो दिये ॥ औ
माथेमे सेंदुरकी बिन्दी किये ॥ आतशमे कपूर मन्दल
जला ॥ मेवेके गफ़्फ़ेको दोना खिला ॥ १२५८ ॥ खुशी
होके मादर वे रुखसत् हुई ॥ सीता भी ले वर बहुत्
खुश हुई ॥ लगाने लगी रामके ध्यानको ॥ लगी जप
मायुकपी नामको ॥ १२५९ ॥ मोहब्बतसे वसमे प्रभोको
किया ॥ स्वप्नमे आकरके दर्शन दिया ॥ कहा नाथने
मुझको क्यों यादकी ॥ कहा सोताने दासी मै आपकी
॥ १२६० ॥ मुझे अपने खिद्मतमे कीजे कबूल ॥
बख्शी मुझे अपने कदमोकी धूल ॥ सुनकर प्रभोने
खुशी हो कहा ॥ करूंगा वे सब मै जो तुमने कहा
॥ १२६१ ॥ ऐसे देकर गुप्तहोवें वे आप ॥ सोता भी
उठकर लागीं करणे जाप ॥ सुवा गुरु कस्के
खुशी भी बहुत ॥ दरवेशोंको दौलत् लुटाया बहुत
॥ १२६२ ॥ अक्सोसे ऐसे प्रभो हैं अधीन ॥ शायेर
भी बुबको लिया खूब चीन्ह ॥ मेरा भी वेड़ा करेंगे
बेपार ॥ जिस जापसे कुछ सुना जिसा है उबार

॥ १२६३ ॥ पैगम्बरों मेरा करेंगे ख्याल ॥ तो देवेंगे मुझको चौरासोमे डाल ॥ अगर नाम अपने का करेंगे शरम् ॥ तो बेशक पापी पर होवे करम् ॥ १२६४ ॥ अपाने बुजुर्गोंसे है भी सुना । सदा पापोंका माफ करते गुना ॥ औ पुरखोंके अन्दर भी देखा लिखा ॥ पावन पतित नाम इनका लिखा । १२६५॥ मै डरता हूं फक्त अपने तकसीरसे ॥ निगह उनको फेरे न तकदीरसे ॥ सिंह शायेर प्रभो शर्ण तेरे पड़े ॥ दस्त बांधे हुये आपके दर खड़े ॥ १२६६ ॥

अथ धनुष भञ्जन ।

॥ मत्त दयन्द छन्द ॥

साधु सुनो धनुभंजनको कछु गा करिके सठ सौठत भाई ॥ जा सुनके मन प्रीति बढ़ै कलि कालि खधो करि दूरि कराई ॥ या कलिमे हरिनाम बिना कछु और नहीं युग वेद बताई ॥ केवल पार करैं भवसागर नाम वही नरकी बन आई ॥ १२६७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मेघ भवनको भूप सजावैं ॥ ताकी क्या शोभा मै गावें ॥ रत्न कनककै स्तम्भ गड़ाये ॥ तामर चंदवा

होनविचाये ॥ १२६८ ॥ झाड़ और तसवीर टंगाई ॥ दिवालगीर फानूस लगाई ॥ जरदोजो परदेलटकाये ॥ और चांदनी भूमि बिछाये ॥ १२६९ ॥ रचि रचिकै अस होन सजाई ॥ लखि लज्जा अमरावति पाई ॥ तिहे सर्व्वधरापति आये ॥ और मुनीगण जौन रहाये ॥ १२७० ॥ रामचन्द्र लक्ष्मण हरषाई ॥ गाधिपुत्रकी साथ सिधाई ॥ तिहं सभा मध्य जब आये ॥ करि कुशल कुशलता अलाये ॥ १२७१ ॥ नमो नमो शन्तन-गण पालं ॥ नमो नमो कौनप दल कालं ॥ असभण नभते पुष्प गिराये ॥ तेहिश कोट लिखजो आये॥१२७२॥ सभा मध्य अस जौन रहायं ॥ तस लखि रूप शुभाशुभ गायं ॥ ब्रह्म बोल शन्तन हरषाये ॥ शमन भाष असुप भय पाये ॥ १२७३ ॥ महावीर वीरन लखि भाषैं ॥ पापी पतित उधारण पाखैं ॥ सेवकगण रक्षक निज गाई ॥ चूमे पादपद्मको पाई ॥ १२७४ ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

देख मनोहररूप भयो सब नारि महामनमो हर-षाई ॥ पागलके सम होकरजोड़ नुती तरुणीगण जौन रिझाई ॥ नाथ करैं तव सेव भलो विधि देहु मुझे वर होय सहाई ॥ रीझ भयो रघुनाथ तवे मिलिहो युग द्वापरमी सब आई ॥ १२७५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वाहि समय मिथिलेश्वर आये ॥ ज्यापतिको सब भाष सुनाये ॥ जो पिणाक तोड़े यह आई ॥ तीन दान सीता मम पाई ॥१२७६॥ सुन भुनता सब मौन रहाये ॥ कोय न चाप निकटमो आये ॥ तब कौशिक प्रभुको वतलावैं ॥ कार्म्मुक भञ्जन आप करावैं ॥ १२७७ ॥ सुनत मूर्ख भूमीन्द्र अलाये ॥ बड़े बड़े नहि वीर शकाये ॥ क्यौं करि बालक जाय खपावैं ॥ तब गाधिज तिनको बतलावैं ॥ १२७८ ॥ राघवको बालक वतलाये ॥ विश्वपिता इनको मुनि गाये ॥ सुनत वचन मनमो भय पाई ॥ वदन मौन शठ भूप कराई ॥ १२७९ ॥ तब रघुनन्दन हर्ष सिधाये ॥ पश्य धनुषको माथ निवाये ॥ पुन करमो द्रुत लीन उठाई ॥ पूछैं प्रभोः इष्वसि आई ॥ १२८० ॥ क्या निदेश गुरु मोहि करावैं ॥ तव गाधी सुत हर्ष अलावैं ॥ भग्न वेग कोदण्ड करो जे ॥ श्रीपितु पण रख श्रीजी लीजे ॥ १२८१ ॥ सुनत तूर्ण प्रभु गुण चढ़ाये ॥ धन्वन तोड़ पञ्च टूक कराये ॥ जय जय जय सब लोक अलावैं ॥ ललनागण मङ्गल सब गावैं ॥ १२८२ ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

लैसियको सखि संग चली जयमाल लिये कर

फूलन केरी ॥ शोभित है जनु दामिनि सो लखि श्याम घटा मिलनी तमहेरी ॥ पाणि उठाय दई पहिराय भयो शुभ नाद बजी ध्वनि भेरी ॥ सिंह भणे अति होय खुशी कर फूल सबे हरि ऊपर गेरी ॥ १२८३ ॥

अथ सानुज श्रीरामचन्द्रजी का विवाह।

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

गाधिज देख खुशी अमहोत पिता सुतको जस व्याहन आये ॥ आशिरवाद दिये बहु भांत महीप सबै निज गेह सिधाये ॥ होय खुशी मिथिलापतिने गृहमो अपने बहु रंग मचाये ॥ नौबत तोप दगा करिके गणिकागण की पुन नाच कराये ॥ १२८४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मुनि कौशिकको भूप बुलाई ॥ पाणिजोड़ भाषैं समुझाई ॥ नाथ आप वरको ले आये ॥ धर्म मोर

टीना वचवाये ॥ १२८५ ॥ लग्न शोध अवदेहु बताई ॥ जातें वर कन्या सुख पाई ॥ शुनत बचन मुनिवर हरषाये ॥ रामचन्द्रके निकट जनाये ॥ १२८६ ॥

॥ द्रुमल छन्द ॥

शुन वाकसुधा करजोड़ हरी मुनि गाधिजको समुझावत हैं॥ मम छोड लघू सब भ्रातनको धरणी-पति क्या बतलावत हैं॥ तनया युग देन कहो तिनको तव नाथ कबूल करावत हैं॥ यदि वैद सुता नहिं दान करैं तव आप भगे फिर जावत हैं॥१२८७॥

॥ दोहरा ॥

विश्वपतीके वचन शुन गाधि पुत्र घबड़ाय ॥ मिथिलेश्वरको जायके टोना हाल जनाय ॥ १२८८ ॥

॥ नराज छन्द ॥

कहैन राम व्याहको कह्यो मुझे बुझायके ॥ कहा नरेशने तबे अपार त्रास लायके ॥ कहो मुनी बूझा मुझे कशूर मोर क्या कहा ॥ कहा मुनी कशूर आपका नहीं कछू कहा ॥ १२८९ ॥ सुता महीप दान और भ्रात आंखको करैं ॥ रघूपती वरा सुता विवाह आय तौ करैं ॥ कहा विदेहने तबै य कौन राम प्यार है ॥ कन्या हमार चौर तीन दान योग त्यार है ॥ १२९० ॥ कहो बुझाय रामका कबूल भूप कौन है ॥ शुना य

छान्नका जबै मुनी पलाय दीन है ॥ करार भूप कौन ... हैन वेद भ्रातको ॥ करौ विवाह आप और लाय भ्रात आंखको ॥ १२९१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत इछ्वकै वचनको रामचन्द्र हरषाय ॥ जोड़ भुजादलको भयो मनमो प्रीति कराय ॥ मनमो प्रीति कराय पिता शासन जब देवैं ॥ तब जा करि युग भ्रात दान भुनता जा लेवैं ॥ मिथिलेश्वरको कहो खवर द्रुत अवधि पठावैं ॥ तब विवाह मम होय जनक अवरज जब आवैं ॥ १२९२ ॥

॥ तोटक छन्द ॥

शुन वाक सुधा मुनि प्यान करैं ॥ मिथिलाधवको सब ब्यान करैं ॥ अज गातजको शुभ हाल जना ॥ गृह लाय भवैं वर जौन मना ॥ १२९३ ॥ तिनको नरदेव पठाव अभी ॥ सव कारज पूरण होय तभी ॥ शुन जोड़ भुजादल भूप भयो ॥ नहि औरनते यह काज वयो ॥ १२९४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

आप अवधि निर्याण करावैं ॥ लै अज नन्दनको द्रुत आवैं ॥ जैसे रामचन्द्रको लाये ॥ दीना कौशप को दल पाये ॥ १२९५ ॥ तैसे अवधि कन्तको लाई ॥

होजे मुनि मम धर्म्म बचाई ॥ शुन कौशिक मनमो हरषाये ॥ नारायणको हाल जनाये ॥ १२९६ ॥

॥ दोहरा ॥

शुन रघुपति मुनिको भणे पाणिजोड़ सुशकाय ॥ जो मरजो तव होय गुरु तौन करौ अब जाय ॥ १२९७ ॥

॥ कवित ॥

शुन सुधासम बात गाधिज आनन्द गात प्रस्थान करत औध प्रेम चित्त लायकै ॥ सरयूमे स्नान कर आवत औधेशघर निरख नरेश राय पूंछत हैं धायकै ॥ कहां मम प्राणनाथ छोड़ करि आये साथ शुनकै धरणीश्वर भाषत हसायकै ॥ नरेन्द्र क्यों त्रास पाय सुत तव साथ जाय ताड़काको मार और पाथर तरायकै ॥ १२९८ ॥ केवट कृतार्थं कर आप शरपाणि धर यज्ञद्रोही मार मेध द्विजका बचायकै ॥ जनक भवन जाय त्र्यम्बक कार्म्मुक बाय वीरणमे मध्य महा वीर कहिलाये ॥ तिष्ठे मिथिलेश पुर त्रास भूप करि दूर कीजे अब व्याह युग पङ्कजकै जायकै ॥ शुनत अवधिपति मगन होवत अति सुतको पौरस भाषैं महलोंमे आयकै ॥ १२९९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन गातजकी सुयशको राणीगण हरषाय ॥ दै दै आशीर्ब्बादको धन्य भाग निज गाय ॥ धन्य भाग निज गाय वशिष्ठ मुनी बुलवाये ॥ रामचन्द्रकी कुशल और शुभ हाल जनाये ॥ शुन वशिष्ठ अति हर्ष लग्नको शोध बताई ॥ तब लीपी लिखि भूप बेग मिथिला पठवाई ॥ १३०० ॥

॥ भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥

दई भूपकी लीपिका दूत आये ॥ भये बांचिकै खूब आनन्द राये ॥ विदा चारको दै शिरोपा कराई ॥ कहा भूप आगारमो हाल आई ॥१३०१॥ खुशी होय राणी कुलाचार कीना ॥ मना देव देवी भली भांत लीना ॥ सुता वेदशी गात गौरी चढ़ाई ॥ लगा तेलकी रीतिकी गीत गाई ॥ १३०२ ॥ सबै भूपको नेवतं दै बुलायं ॥ भलो भांतिसे प्राशनंको करायं ॥ तमाशे करोड़ं करायं नरेशं ॥ सुरेशं प्रवेशं अकाशंनचेशं ॥ १३०३ ॥ मृदंगं मुचंगं सुनादंकरेशं ॥ अनंदं प्रवम्बं स्वच्छन्दं भरेशं ॥ हमेशं नवीनं तमाशं करायं ॥ तमामं प्रकारं नजायं गणायं ॥ १३०४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अवधि पुरीमो जायकै दूत भणै सब हाल ॥

पत्र आपको बांचके हो प्रसन्न भूपाल ॥ हो प्रसन्न भूपाल लग्न मञ्जूर कराये ॥ दे मुझको शिर पाव बिदा कीना हरषाये ॥ शुनत वचन नरनाथ निमन्त्रण दीन कराई ॥ अरु बिवाहके काज सर्व्व प्रारम्भ कराई ॥ १३०५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मेवादिक पक्वान्न बनावैं ॥ वस्त्र आभरण और मगावैं ॥ चोगे शाल दुशाले धारी ॥ और गिंदौड़े मुलकों सारो ॥ १३०६ ॥ दीना भूप खूब बटवाये ॥ हाथी हाथ शिरोपा पाये ॥ नौबत तोपैं कोट दगावैं ॥ निरख सर्व निर्झर हरषावैं ॥ १३०७ ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

आवत भूप सबै हरषाय नरेश भलो विधि आदर कीना ॥ प्राशनको करवा करिके पुन मेफिलमो तिषठा नृप दीना ॥ वेद शरीरज कारण खूब सवे सुर पूज मना करि लीना ॥ तो रजनी अरु तेल चढ़ा सुतके शिरमो कुल कारज कीना ॥ १३०८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

नान्दीमुख पुन भूप कराई ॥ सजैं बरात खूब हरषाई ॥ अश्व और सुन्दर सजवाये ॥ गणपति शेष अन्त नहिं पाये ॥ १३०९ ॥ तुरकी ताजी

टांगन लीला ॥ अवलम्ब चरवीकक्की पीला ॥ पच कल्याण और दरि आई ॥ कुम्भ द अवज मुश्की बाई ॥ १३१० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गङ्गा जमुनी शीर्षपर दौना कलगीखोश ॥ हैंकलगलमो रलको जीन पाखरी पोश ॥ जीन पाखरी पोश पैंजनीको पहिराये ॥ इन्द्रबाह लखिरूप लाज मनमो बहुपाये ॥ हिनिनिनि करि चिल्कार सर्व अर्बन अस करते ॥ स्वर्गलोकमो देवसप्ति शुनिके सब डरते ॥ १३११ ॥

॥ कवित ॥

कुञ्जर सुन्दर लाय मेचक प्रचण्ड काय शुक्लदन्त चांदनी सी चमकतबाटमे ॥ तापर उत्तम झूल झालर झलक कूल चम्पा गी मरीचि छाय रही सब हाटमे ॥ द्वादश कलश देख चकित होवत लेख दामिनी सी यामिनिमी चिलकत घाटमे ॥ धरत जञ्जीर शुण्ड मारत मास्तुत मुण्ड भागत पञ्चिन तौन गर्ज निज लाटमे ॥ १३१२ ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

ऊंट करोर सजाय नरेश भये छवि क्या तिनकी कविगाये ॥ ग्रीव निहार पहाड़ लजैतनको लखि कूबड़

लीन लजाये ॥ पाखर जीन जड़े नगसे सजिके सब साजे सवार चढ़ाये ॥ धानक गाजत हैं तिन पै कुड़ुधुं कुड़ुधुं कुड़ुधुंम कराये ॥१३१३॥

॥ घनाक्षरी छन्द ॥

स्यन्दन सजाव कीन अम्बारी कशी नवीन कञ्चन रजत लीन शोभित दमङ्कदार ॥ कतहूं नीलम मणि कतहूं माणिक गणि कतहूं शाटक फणि राजत चमङ्क धार ॥ चक्रिनके चोर चोर झालर वांधत कोर चम-चम रव घोर चमके चमङ्ककार ॥ मानो सूर्य्य और शशि प्रभते पङ्कत खशि शताङ्ग ऊपर फणि शोभत चमङ्क भार ॥१३१४॥

॥ मेघ छन्द ॥

वेद जाके विषे राजते चाकहैं चञ्चला हेमकी मण्डलाकारही ॥ सारथी साज साजे विराजे भले पाणिमो रासलीने मनो मारही ॥ झांझ लागीं जिन्हो बीच वाजें महा वाजि पाणी चली वेगको धार हैं ॥ ऊपमा नाहिं ताकी मिले ढूंढते खूब थाके कवी होय लाचार हैं ॥ १३१५ ॥

॥ घनाक्षरी छन्द ॥

साजत मनुज वाह प्रचुर शोभा अथाह खिरकी युगल माह मुकुर चमत्कार ॥ चांदवा ऊरध ताव

झालर जड़ित जान परदा लगी प्रमाण किरण उद्योत धार ॥ दण्ड पाणि पाणि ओर हीरा जगमग जोर मानौ तमहति भोर शिविका प्रभा विथार ॥ गद्दा औ वालिश सोहै धौसर शहर मोहै उरदी वनातकोहै वेसमो पवन द्वार ॥ १३१६ ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

मणि खचित विशालं नालकिनालं मुक्ताजालं लखि भारी ॥ बांको असवांसं धनुष प्रकाशं तमगण नाशं छवि न्यारी ॥ छतपोश विराजै झालर भ्राजै विद्युत लाजै अरु चंदा ॥ बाहक रविवेदं अनिल अभेदं गति अमछेदं नरनंदा ॥ १३१७ ॥ चवदण्डौ आनी रचि मणिखाणी छटा समानी जगमाहीं ॥ सुर नर मन हरणी बहु विधि वरणी जनभ्रमदरणी कविकाहीं ॥ बाहक तिथि ल्यौ करि गति चञ्चल धरि लखि मारुत डरि रुक जावें ॥ अस भांत अनेकं भूसे एकं सत्य विवेकं करि गावें ॥ १३१८ ॥

॥ अमला छन्द ॥

अब फूलनकी वगियां वरणौ कछु नाम लिखौं भिषया अनुसारा ॥ गुलगेंद गुलाब अनार चमेलि कली खिलि भानुमुखी विसतारा ॥ गुलखैरु जुही

चम्पा गुलबांस रहो खिलि कैतकि माह्न मझारा ॥ दलकोमल और कली छिटकी मखि कञ्चनकी रचि भांति अपारा ॥ १३१९ ॥ फल आम अनार अंजीर अनारस औ अखरोट अंगूर अनूपं ॥ कमला कटहार अखेरु कहीं कदली कमराख करोर स्वरूपं ॥ कहुं नेंचु नरंगि नरोअल नेवुश्र नीम नवीन निरूपित भूपं ॥ खिरणी खरबूज खिरा खिखसा खरजूर बने खिरसागर रूपं ॥ १३२० ॥ सरसो सरसीरुह सेम सरौं सखुआ सिरसा सहिजान सुहाये ॥ सुपिआरि सुसेमर औ शरदा सगवान सदा फलशंदल लाये ॥ तरु तोमर तेतुल औ तरबूज तमोल तरोंई तमाम सजाये ॥ अरु पीपर पाकड़ वा पटओल परास सुपाडल आकृति लाये ॥१३२१ ॥ मखिके जड़िके करिके नगके रंग केतिक केतिक क्रांति करे हैं ॥ चपलासि चमंक चमी करको चहुंओर चली चकचौंधि धरे हैं ॥ दलमे दमके सित पाथर क्या जनु यामिनिमे नभतार खरे हैं ॥ तरुपै शुक सारस हंस मयूर बने लख चातक मोद भरे हैं ॥ १३२२ ॥ बरणौ अब लाख पहाड़ बने जिनमे तरु भांति अनेक सुहाये ॥ तिन पे पपिहा रव हंस मयूर करैं बहु भांत अपार बसाये ॥ कलकी कृत पंच अनेक बने अस नीरभरे खग गाथ कराये ॥

आइन माल विशाल बनी गजमोतिन माल गरी विच सो हैं ॥ गोफ जड़े मणिके गलमो सुरराज समाज सबै मनमो हैं ॥ भोजन भी भुजबंध भुजा पखमो कर शेर कड़ा सुखको हैं ॥ यामिनिसी भलके तन दामिनिसी लखि काम स्वरूप लजो हैं ॥ १३३१ ॥ तायनको पहिराय दयो दरजी रचिके अति सुन्दर जामा ॥ मागत नेग तबै दरजी लहिके सब देत निछावर वामा ॥ प्रेम सहित अजाचि किये अवधेश विशेष दिये धनधामा ॥ आनन्द भे सबही जननी पितु और विलोक भये खुश मामा ॥ १३३२ ॥ सारसको पदको उपमा कवि क्या वरणै मतिहीन अलाये ॥ शारद शेष दिनेश सुरेश महेश गणेश थके गुण गाये ॥ पार भये भवसागरसे छिनमो तिनकी पद जौन लखाये ॥ खोज थके उपमा कलिकी कवि तौ मुखको निज मौन कराये ॥ १३३३ ॥ श्यामल श्वेत छवी लखिके वप हाटक होवत ज्योति सलोनी ॥ नैन निहार लजात रु राम भयो मतिको कविकी अतिहोनी ॥ शेखर और बधें तब गाथ करें युवतीगण भीत नवीनी ॥ कंचनको बहु हेम खुदा करि नेगिनको सठ भूषण दीनो ॥ १३३४ ॥ मोतिनको चतनी सजकांस गुहे जिनकी छपमे गजमोती ॥ पाखर जीन तमाम सबी साज और

लई मणि पूषण ज्योतो ॥ शीषं लगी कलगी मणिकी गजगाह झुमैल गुहे विधु गोती ॥ चंचल चाल मनो चपला लखि भानु तुरंग हिये भय होतो ॥ १३३५ ॥

॥ कवित ॥

शायत विचार कीन भालमो तिलक दीन वशिष्ट मुनी प्रवीण घोटको चढ़ायके ॥ मात तात हरषाय खितिपति सर्व आय पुरजन मित्र धाय दिये फूल-सायके ॥ वर पल अससोहैं लख त्रिभुवन मोहैं पुष्कर से सुर जो हैं पुष्प वरषायके ॥ आरती प्रकन मात करत प्रफुल्ल गात वामागण हरषात मङ्गल अलायके ॥ १३३६ ॥ वेला बांशी कांड़ा पाड़ा ढांक ढोल राम-कांड़ा ताशा सिंहा डफटाड़ा दुन्दुभी सजायो है ॥ खेमचा रवाब चङ्ग करताल जलतरङ्ग स्वरोदय मुरचङ्ग दगड़ बजायो है ॥ शारङ्गी वेला सितार झाम्प वीणा चवतार शङ्ख घण्टा भूमितार ढेमचा रलायो है ॥ किटिकिटि धाधाधाधा मृदङ्ग वजत पति तवला धधपिधप गत हरषायो है ॥ १३३७ ॥

॥ घनाक्षरी छन्द ॥

काञ्चनी नचत झूम फिरकि फिरत घूम घुंघुरू बजत कूम झननननननन ॥ तिल्लाना ध्रुपद गाय स्वर सिन्धु हरषाय रागरागिणी बजाय सननननननन ॥

झिनिनिनिनिनिनिनिनि छुद्र घण्टि कटितट बाँधुवा बजत झुम झननननननन ॥ थिरिकि थिरिकि धाय भावगथ दरशाय पायलको ठनकाय ठननननननन ॥ १३३८ ॥

॥ कवित ॥

फुलझरी चन्द्र ज्योत औ गम्र शितारा होत तीसी औ शरीँ उद्योत पटाका दगायकै ॥ छूटत इत्यादि ओर नारिकेल शब्द घोर पटे वाज कीन शोर पावक को पायकै ॥ कमल कनक लाय वाती मोमकी लगाय पञ्चशाखा टी जलाय पताका उड़ायके ॥ अभ्रकको झाड़ भारी रवि सम तमहारी युगल तरफ-वारी मशालची धायकै ॥१३३९॥ झण्डी औ निशान छाय मुक्ता झब्बा लटकाय ताशनको बनवाय कलशी रतनकी ॥ कीनखाप दरियाई वाफता शाटन लाई जरदोजी सजवाई विविध जतनकी ॥ शोसनी श्यामल आनी शुरुख शबुज मानी पीरोजी जरद ठानी रङ्ग जस घन की ॥ चञ्चल चपल अस चपला चमक जस अभ्रमो अस्थिर तस प्रेरित पवनकी ॥ १३४० ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

साजि चले रघुवंश प्रकाशक अङ्गज साथ सबै नरनाथं ॥ बाजन बाजत नाचत कञ्चनि गावत नारि

सवे पुर साथं ॥ मोद भरे घुरती नगरी तब फूल प्रजा-
गण डारत माथं ॥ बालक और युवा बढ़ियान बली
धन भूप लुटावत हाथं ॥ १२४१ ॥ दुंदुभि और गजे
गजघंट दगीं बहु तोप तमंच अपारं ॥ शोर भयो घन
घोर समान रवाहूश छूटत बाट बजारं ॥ घोटक पै गज
पै रथ पै शिविकादिक पै सब होय शवारं ॥ घूम चली
पुर भीतर है पुन जाय टिकी सब बाग मझारं ॥१२४२॥
तंबु कनात लगाय बनात सजाय रहे तिह माहिं
बराती ॥ होत भयो जिवनार वहां पर व्यंजन सार
गने नहिं जाती ॥ कंद दधी लडुवा खुरमा बरफी
अरु घेवर आदि कहाती ॥ खूब छकाय अघाय नरेश
दये पुन पान खुशी मन माती ॥ १२४३ ॥ मेफिलमी
पुन बैठ बरात सुरेश समाज लजावत कैसे ॥ हंस
प्रकाश भये पर ज्यौं गण तारक रोचिस भाजत
जैसे ॥ बैठ नरेश लखैं तब नाच अनेक प्रकार पुरं-
दर ऐसे ॥ कौन कवी अगमो अस है जु भणै मुखसे
उपमा कथि वैसे ॥ १२४४॥ ता मधि राजत श्रीअयजा
सुत और रिपू हन तेज प्रचंडं ॥ श्यामल गौर कहा
बरणौ तम नाश करैं मुख ज्योति अखंडं ॥ कोटन
काम लजाय दिये लखि लोचन राम धुने शिरभंडं ॥
जाय छिपे बन भीतरमी छवि देख अची अघ दूर

कांडं ॥ १३४५ ॥ प्रात भये पर भे असवार वरात
चली मिथिला मग ओरं ॥ बाजनको ध्वनिको सुनिके
गज गाजत भाजत वाजि करोरं ॥ आपन आपन शोभ
लखैं नृप नाद भयो अतिशै घनघोरं ॥ याम जवै
दिन आय चल्यो तब राय कराय अहार बहोरं
॥ १३४६ ॥ फेर पयान वरात कयो उतसे सजके
सव कोट प्रकारं ॥ पैदलके जनमोद भरे चलते करते
बहु कौतुक सारं ॥ मारगमो जन जौन लखैं चलते
गृहको तजि साथ अपारं ॥ याम भये पखके दिन भूप
खुशी अति हो पुन देत अहारं ॥ १३४७ ॥ कूंच
किये पुन भूप सवै अरु श्रीअवधेश वरात समेतं ॥
हास विलास करैं सवही जन भूल गये निज नाम
निकेतं ॥ जो सुख होत भयो तिह काल नहीं उपमा
कछु आवत चेतं ॥ भानु छिपे प्रगटे शशि जरध तौ
नृप वास तहां पर लेतं ॥ १३४८ ॥ तान दिये दल
बादल जंगल औौर कनात लगे वहु रंगी ॥ झाड़
फानूश गिलाश सजा करि औौर लगाय दयो सिरहंगी ॥
भानु समान उद्योत भयो तमनाश गयो लखि रोचिस
चङ्गी ॥ वास कयो नर तौन विषे अपने अपने
सव लै करि मङ्गी ॥ १३४९ ॥ शासन दै भुनता पुन
नाच करावत हैं वहु भांत अमीगी ॥ सारङ्गि औ

तबला करताल शितार बजावत ढोल मजीरो ॥ गावत नारि मनोहर कोकिलकी स्वर यौवन और भरीरो ॥ श्रीपतिकी गुण गाथ करैं मुनि लोग शुनैं सब छोड़ फकीरो ॥ १३५० ॥ याम निशा जब बीत गई तब श्रीअवधेश बुलाय बराती ॥ आसनमो तिषठाकरिकै निज पाणि परोश दयो बहुभांती॥ कन्द कला बरफी खुरमा अरु घेवर आदिक जौन रहाती ॥ भात बरा खिचरी चटनी पकवान अचार सुखीर कहाती ॥ १३५१ ॥ या विधि चीज अनेक प्रकार जिमाय अचाय दिये कर पानं॥ मैफिलमो पुन देखत नाच अनेक प्रकार न होत बयानं ॥ कोय सभाजन भूम रहै बश नीद अफीम अहार समानं ॥ शोवत कोय भये नर देव निहारि कह्यो जन कोय विहानं ॥ १३५२ ॥ प्रात भयो तब कौन प्रयान निशान लगे फहरान अकाशं ॥ नौबतकी धुधुकार भई गज बाजि चले करि जोर प्रकाशं ॥ ह्वै अशवार कुमार सुछैल सुगैल चले करि हास बिलाशं ॥ बालक बूढ़ युवा मिलिकै गणिका गणसे करते उपहासं ॥ १३५३ ॥ प्यान करैं नित भूप यही विध पौंच बरात गयो उतलाई ॥ श्रीभगवान जहां पर जा करि नारि निशाचर नाश कराई ॥ देख भयंकर लाश नरेश भयो मुनि गाधिजसे

हरषाई ॥ बालक राम इतोकसनाथ कहैं मुनिराज तिन्हें समुझाई ॥ १३५४ ॥ आप कहो प्रभुको निज गातज सो तब भाग महा लखि पाये ॥ लोचन लोक पिता भयको सुर शेष महेश थके गुणगाये ॥ होत खुशी शुनको नरदेव बरात सबै तब प्यान कराये ॥ मारुत जौन जगे अवतार धरे उत वेग धरापति आये ॥ १३५५ ॥ प्यान कयो उतसे पुन भूधव आवत गौतम ग्राम मझारा ॥ होय खुशी द्विजराज भये रघुनाथ मुनी पतनी हुत तारा ॥ होत खुशी शुनको अवधेश बरात नदी सुरघाट पधारा ॥ कंचनकी तरणी हुत लै करि केवट आय लगाय किनारा ॥ १३५६ ॥ भूभुज देख सुहाटक नाव भये मुनि मोहिं कहो समुझाई ॥ नाव यही सुत हैम करी अथवा द्विज दूसर देहु बताई ॥ केवट जोड़ सुजादलको हरिके गुणको सब दीन जनाई ॥ होत खुशी शुनको सब लोक बरात सबै तब पार कराई ॥ १३५७ ॥ केवटको बहु भांत रसापति दान करे पट भूषण नाना ॥ बाजि करी धन ग्राम मनोहर देय अजाचि कयो मन माना ॥ फेर बरातिनको जलपान कराय नरेश महा सुख आना ॥ मैफिलको लगवाय तहां बहु नाच मचे सुर पञ्चम गाना ॥ १३५८ ॥ श्रीअवधेश भये परेको

तुम बेग कहो मिथिलापति पासं ॥ आय बरात टिक नगनाय बगं नदि जो करतीं पघनाशं ॥ सिर चल्यो सुनकै वह दूत पहुंच गयो मिथिलेश पशासं ॥ जोड़ भुजादल हाल सबै निज भूभुजका वह कीन प्रकाश ॥ १३५९ ॥

॥ कवित ॥

सुनत बचन राय प्रफुल्लित करि आय रथ गज सजवाय मित्र बुलायकै ॥ अगात बिहर्ष कर जायकै बरात घर लाव सनमान कर प्रीतिको बढ़ायकै ॥ सुनत सज्जन जन मौष्टान्न कोर मन लाखुण प्रकार गण बहंगी भरायकै ॥ पापड़ मशालेदार बड़ियां मेवा अचार आज्य दधि लखभार चलत लिवायकै ॥१३६०॥

॥ अमला छन्द ॥

गज वाजि कुदावत छैल चले पट भूषण आदि सुरंग सजे हैं ॥ हिनि नाय महा घनकी सम घोटक देख करी तन शैल लजे हैं ॥ रव घोर भये सब बाजनके नट नाचत धावत होत मजे हैं ॥ नर गन्धव देव पिशाच निशाचर होय खुशी अति हास गजे हैं ॥ ॥१३६१॥ उतसे अवधेश चले सजिके गजघंट गजे सब साज बजाये ॥ अति शोर भयो मिथिलापुरमो नर नारि सबै सुनके हरषाये ॥ सब बालक बूढ़ युवा

युराती तजिकै गृहकारज देखन आये ॥ भगवान मिलि तव भूभुजसे सव चीज दिये करजोड़ रखाये ॥१३६२॥ अति होय खुशी नर देव लयो मिथिलाधव जो सव दीन पठाई ॥ सव लोग मजूरनको वकशीस दयो नरनाथ महा हरषाई ॥ पुन प्रोहितको गज हैम दयो अरु चौविश मास रुमाल उढ़ाई ॥ पट भूषण और महा धन दै करि मापित वारिख तोष कराई ॥ १३६३ ॥ अवधेश लिये भगवान चले अस देख चले सुरराज लिये हैं ॥ वर सोम विलोकन हेतु चकोर समान पुरी जन नैन किये हैं ॥ अवला तजि कोट निकेतनको मगमो लखि क्या हुलसात हिये हैं ॥ मुखकांज विलोक अली मनको करि खूव मधूरस नारि पिये हैं ॥ १३६४ ॥ कितनी निज वैठ झरोखन से वरको लखि होत भई मतवारी ॥ वर कारण दौड गिरी कितनी कच छूट गये पट फाट करारी ॥ कुच कूंच गये कछु होश नहीं पुन दौड़ चली तन वास सम्हारी ॥ वररूप विलोक करैं भल गारा सवै कुलकी निज लाज विदारी ॥ १३६५ ॥ तव भूप गये जनवास विषे मनमो अपने वहु मोद वढ़ाये ॥ वह मंदिर देख वरात भयो अमरावति ते भल भूप सजाये ॥ कहुं वाग तड़ाग लखैं अतिसुन्दर कांज खिले अलि गुंज रहाये ॥

अति मंद सुगंध बयारि बहै श्रम देख महा हरि दूर पलावै ॥ १३६६ ॥ कतहूं पर हंस कलोल करैं कतहूं पर सारस मोर करे हैं ॥ कतहूं चकवी चकवा विचरैं कतहूं पर कोकिल मोर भरे है ॥ कतहूं पर काक कपोत करो मुनियां कतहूं सर घोर घरे है ॥ मिथिला पुरकी अस देख सजाव बरात महा मन मोद धरे हैं ॥ १३६७ ॥ जनमात खुशी अति होत भई मिथिलापुर भूप कह्यो जब डेरा ॥ सिधि आठ प्रकार बुला करि शासन कीन करो सब चीज घनेरा ॥ शुनकै सिधि वेग तयार करो पकवान दधी सर कोटन ढेरा ॥ जन होय खुशी मिथिलापतिको धन हैं धन हैं धन हैं सब टेरा ॥ १३६८ ॥ यह केवल भेद लख्यो रघुनाथन और लख्यो जन कोय बरातं ॥ जन मोद भरे करि प्राशनको गजबाह समूह अहार करातं ॥ भाट श्रीरघुबीर अमीर लिये पितु भ्रात गुरू मिलवे तब जातं ॥ लखिके नृप श्रीपतिको हरषे अस शंत खुशी तपसी जिह भांत ॥१३६९॥ हरि सानुज तात पदांबुजको परनाम कियो निज शीर्ष लगाई ॥ द्रुत भूधव कंठ लगाय लयो करि आशिरबाद महा हरषाई ॥ जुग भ्रात मिले परनाम यथोचित कीन असीस बड़ो सुखदाई ॥ मुनि कौशिक और वशीष्ठ गुरूपद सानुज श्रीपति माथ

मिवाई ॥१३७०॥ गुरु आशिरवाद दयो बहु भात कहां तक सो कवि भाष शुनावें ॥ मिलवो सवसे हरि प्रेम वढ़ा करि तोष यथोचित पास रहावें ॥ उपमा कथि शेष महेश गणेश सुरेश दिनेश सवे थकि जावें ॥ कवि कौन भयो प्रभुके छविको कथि शारद नारद पार न पावें ॥१३७१॥ मिथिलापतिने तव प्राशित प्राशन हेतु अनेक प्रकार वनाये ॥ पिसता अखरोट अनार अनारस औ शरदा लख भार भराये ॥ वरफी खुरमा लडुवा अरु घेवर आदि अनेक प्रकार सजाये ॥ जनवास विषि पठवाय दयो अवधेश खुशी अति होय रखाये ॥ १३७२ ॥ जग लै करि जो जनवास गये अवधेश तिन्है वहु दान दिये हैं ॥ पट भूषण आदि महा धन दै जिव नार नरेश अपार किये हैं ॥ जव जेयं वरात उठे खुशि हो तव पान कपूर सुगंध लिये हैं ॥ पुन मैफिलमो सजिके तिषठे सुरराज समाज लजाय दिये हैं ॥ १३७३ ॥

॥ घनाक्षरी छन्द ॥

वशिष्ठ वुलाय कर मनमो आनन्द धर जोड़के युगल कर भषत नरेश वर ॥ उत्तम लगन धर यज्ञ-सूत्र वेग कर अरिष्ट सकल हर लीजिए अव न्यमर ॥ शुनत वचन वर मनमो विचर्थ कर लगन शोधत वर

ज्योतिष पुराण धर ॥ देखत सकल नर भाषत वशिष्ठ
वर मनमो प्रमोद धर अशुभ हरण कर ॥ १३७४ ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

आयतको बतला करिके पुन और विधी सब दीन लिखाई ॥ भूप तयार करो ततकाल रसा मरने उपनेन कराई ॥ होय खुशी नरनाथ तबै द्विजको बहुता धन दीन लुटाई ॥ याहि समै मिथिलेशसुतापति भाल बिवाह तिलक चढ़ाई ॥ १३७५ ॥ कोशलजा सुत और सुमीत्रसुतासुत कारण आसन दीनी ॥ कांचनि तैल चढ़ा करिके कुलकी सब रीत यथोचित कीनी ॥ गंधमर्द जलसे करवा करि स्नान नरेश महा धन लीनी ॥ वाडव नापित आदिकको अति होय खुशी निवछावर दीनी ॥ १३७६ ॥ केशर चंदन भाल विषे शिर कीट मकूट भलो पहिराये ॥ केश लटैं लटकैं पख ओर कवो तिनकी छविको लखि पाये ॥ शंकर के तनमे जस सांप फिरैं इतसे उत मौज कराये ॥ काजल लोचन बीच दिये अरु पान दिये मुख माहिं खिलाये ॥ १३७७ ॥ कुंदकली सम दंत मनोहर हीरणकी कणिके सम जालं ॥ काननमो झलकै पख कुंडल ग्रीव विषे मुकुता गज मालं ॥ जौशन और तबीज भुजा मधि ता दल माहिं अंगूठि विशालं ॥ हेम

कड़ा करकंज जड़ाव मणी झलकैं रविकी सम वालं ॥ १३७८ ॥ हाटक गोंट कटीतटमो लटके रुचि चंद दिवाकर मोड़ी ॥ अंबुज पाद कड़ा लखिकी सव लोग अघी अघको निज तोड़ी ॥ जाम पटूक रुमाल दुशाल सवै पहिराय सजावत घोड़ी ॥ जीन लगाम जड़े नगकी कलगी शिरपै झलकी अति पोड़ी ॥ १३७९ ॥ केश गुहे गजमोतिनसे गजगाह हुमेल सुहावत नीकी ॥ पैजनि वाजत झंझननं झननं झननं झन है पद होकी ॥ चालि चले चपला सम चंचल वासव वाह लगै लखि फीकी ॥ थाकि रहे उपमा न मिली चितकी खुशकारक लोक सभीकी ॥ १३८० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वेदपुत्र निज रायने करि सवार हरषाय ॥ कर कृपाण शोभित भये उपमा सर्व्व नशाय ॥ उपमा सर्व्व नशाय छत्र शुभ शीर्ष विराजैं ॥ मुक्ता झालर लगी पश्य शशि नभ मधि लाजैं ॥ आसा वल्लम रत्न जड़ित सोंटा भल सोहैं ॥ आम्नाय ध्वनि करि वशिष्ठ सुर मुनि मन मोहैं ॥ १३८१ ॥

॥ भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥

चले तांहसे साजके पौधराजं ॥ गजं नालकी पालकी वाजि साजं ॥ सवै देवता पुंसका रूपधारी ॥

रघुनाथ माका विवाहं विचारी ॥१३८२॥ धरे ज्योति
भारी यथा भानु चंदं ॥ पटं भूषणं गात आनंदकंदं ॥
जिते रायके साथ आये नरेशं ॥ शिगारं किये देवतासे
विशेषं ॥ १३८३ ॥ चढ़े स्यंदनं कोय हाती अम्बारी ॥
चढ़े तान आसं तमं दूरकारी ॥ करे रूपको मान
योधा अनेकं ॥ पगे रामशे प्रेममो एक एकं ॥१३८४॥
वजे वाजने नारसिंहा नगाड़े ॥ डफं ढोल ताशा विजे-
घंट ताड़े ॥ नचे कंचनी अप्सरा गाण कीने ॥ वजें तावला
ओर सारङ्गि वीणे ॥ १३८५ ॥ सहाना सवै गंध्रवं क्या
अलापें ॥ तथेई तथेई नचैं क्या धरापें ॥ कुटी माह
तावी कहीं नाश पालं ॥ दगी वाणके गंज आकाश
लालं ॥ १३८६ ॥ पटेवाज औ नारिकेलं दगाये ॥
पड़ाका धड़ाका कड़ाका मचाये ॥ कहीं लाल पीले
गुब्बारा उड़ाई ॥ कहीं हाथ फूलं दिये हैं जलाई
॥ १३८७ ॥ उभै ओरमो कंज हैमं लगाये ॥ तिन्होंके
विषे मोमवाती जलाये ॥ दिवा औ निशाको भयो
भेद नाशं ॥ जले पंचशाखा प्रचण्डं प्रकाशं ॥ १३८८ ॥
चले फूलके वाग नाना प्रकारं ॥ गुलावं गुलावास गेंदा
अपारं ॥ वने हेमके कौतुकी कंज भारी ॥ कही वाग
खासं फले शोभकारी ॥ १३८९ ॥ दगी तोप वंदूक भे
घोर शोरं ॥ रह्यो छाय नादं सवे ओर घोरं ॥ तमाशा

लखैं नारि औ पुंस धाये ॥ हसैं बाल औ वूढ़ प्रेमं वढ़ाये ॥ १३६० ॥ विलोकैं चढी नारि कोटैं अटारी ॥ कही खीरकी खोल झांकैं अपारी ॥ चली कोय आवैं हकारैं किसीको ॥ चलो देखिये नाथ सीता सतीको ॥ १३६१ ॥ किशूने तजे बालकं रोवते ही ॥ किशीने तजे कंतको सोवते ही ॥ किशीको लटैं शीषं छूटी सु छुटी ॥ किशीकी गली माल टूटी सु टूटी ॥१३६२॥ कहीं ग्लौमुखी मंदहास्यं करैं हैं ॥ कहीं एण नैनी खुशीको धरैं हैं ॥ किशीने कहा आलि असी न देखे ॥ छवीले रंगीले वराती विशेषे ॥ १३६३ ॥ कहीं कोकिला सी सु गाणं करैं हैं ॥ प्रभो रामके नेहसे ना टरैं हैं ॥ शची औ रतीके समानं रहायं ॥ वराती सवै देख होशं हरायं ॥ १३६४ ॥ कहीं यो वदैं नाच नाचैं भले हैं ॥ कही यो कहैं क्या पताका हले हैं ॥ किशीने कहा भाग भारी सियाके ॥ गलेमो पड़ैगी जु असे पियाके ॥१३६५॥ गई दूर ह्वै पासते राम घोरी ॥ लखैं धायके ज्यों विधूको चकोरी ॥ वराती सवै देखते वेद ओरं ॥ अवासं सजे शोभनं नाहि थोरं ॥१३६६॥ कहीं हेम कुम्भं अनेकं प्रकारं ॥ कही झालरं मोतियों की अपारं ॥ कवाटं लगे हेमके गेह माही ॥ खचे जाल पंखी अशंखं तहांही ॥ १३६७ ॥ वनी चौपड़ंकी

बजारं अनूपं ॥ गली चारुको देख आनन्द भूपं ॥
नरेन्द्रं सुरेन्द्रं फणीन्द्रं जिते हैं ॥ भये चारुतं भ्रांतिमो
मे किते हैं ॥ १३९८ ॥ महीजा पिताको यहै धाम
नाहीं ॥ सुरंराजको धाम है वे कहाहीं ॥ चले जात
ऐसे धरा नायकं ज्यौ ॥ रमानाथकी साथमे पायकं ज्यौ
॥ १३९९ ॥ छबीलि रंगीलि बड़े शूर वांके ॥ कहां लौ
बखानौ विना ऊपमाके ॥ पुन: गातकी धारकी लिख
दूजा ॥ गये ह्यो करें फूलकी फेक पूजा ॥ १४०० ॥
कुशी तीरसे जाय द्वारे पधारे ॥ अयोध्यापतीके युगं पूत
प्यारे ॥ लगे लूटने लोग सारे बगीचा ॥ चले दौड़के
झाड़को थाम खींचा ॥ १४०१ ॥ किशूने लिया फूल
जा केतकीका ॥ चले वाल धामे करं चटकीका ॥ लगे
देखनेको बरातं तमाशा ॥ चढ़े देखते लोग केते
अवासा ॥ १४०२ ॥ तबै शिव दारा धरो नारि रूपं ॥
नखंसे शिखं खूब साजे अनूपं ॥ गई राज गेहं जहां
मात सीता ॥ करें पाणिकी जोड़के सो विनीता ॥
॥ १४०३ ॥ पिछाना नहीं कौन आई य नारी ॥
किया आदरं राणिकौटं हकारी ॥ चलीं सीयकी मात
कीने शिंगारं ॥ पटं भूषणं गात शोभा अपारं ॥१४०४॥

॥ दोहा ॥

ग्राम नारि नरपति नरी नगर नगरकी बालि ॥

जनकसुताकी जननि युत मृग अम्बक गज चालि
॥ १४०५ ॥

॥ गीतका छन्द ॥

मनमोद धार सम्हारि भूषण चालतीं गुण गायकै॥
कर थाल हाटक धार सुंदर रामको मन लायकै ॥
परछैं महा शुभ वेश दूलह वेदको खुश होत हैं ॥
तिलकं दियै शुभ भालमो सब देखके दुख खोत हैं
॥ १४०६ ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

आह्लादित गातं सियकी मातं आरति हातं धरि
कीनी ॥ शोभत छवि सुन्दर लजत पुरन्दर धर्म्म धुर-
न्धर अघ हीनी ॥ मिथिलापुर नारी चकित निहारी
भई मतवारी क्या कहिये ॥ मूरति सुख करणी मुनि
मन हरणी वेदन वरणी गहि रहिये ॥१४०७॥

॥ कामिनी मोहना छन्द ॥

लौटके द्वारसे आयके वास मे ॥ वैठके नाच होने
लगे तासमे ॥ शोर भारो भई पार ना जासको ॥ बात
आवे सुनी ना कहै पास की ॥ १४०८ ॥ चोपदारं
तबै भूपने टेरके ॥ शोर नाहीं करैं यों कहो प्रेरिके ॥
जानकी तातके देशको जौन हैं ॥ योग थानं तिन्हे देहुगे
यों कहैं ॥१४०९॥ झाड़ फानूश लागं शमादानको ॥

ज्योति छाई चहुंघोर ज्यौं भानु की ॥ राग होने लगे ठूमरी दादरा ॥ सो बराती सुनै बैठके सादरा ॥ १४१० ॥

॥ दोहरा ॥

शतानन्द ले लग्नको आये प्रमुदित गात ॥
श्रीवशिष्ठ पुन शोधके मग्न होय हरषात ॥ १४११ ॥

॥ कामिनी मोहना छन्द ॥

देवता देखके वासको पायके ॥ यामिनीनाथको भाषते जायके ॥ व्याह होवै कभी सायतंमे कहीं ॥ बंध छूटे कभी देवतोंका नहीं ॥ १४१२ ॥

॥ सोरठा ॥

लग्न गमन करि जाय करो वेग अब युक्ति अस ॥ सुन रजनीपति आय यह विध छल कीना तबै ॥ १४१३ ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

वनिता बनि चंदं ज्योति अमदं नचत स्वछंदं कपट मती ॥ मैथिल बश कीनी मति हर लीनो गीत नवीनो ताल गती ॥ कौतुक बहु करिके आयस हरके पुन बह टरिके सुख कीना ॥ सुरगण सुख धारो हर्ष अपारो स्वारथ भारी करि लीना ॥ १४१४ ॥

॥ झूलना छन्द ॥

तबै दूसरी तायफा आयकै नाच प्रारम्भ कीना छटाको दिखाये ॥ सबै भांतकी राग औ रागिणी गावती साजकी सायमो प्रेम लाये ॥ तबै मीथिला कन्तकै लोक को चेत आई बुलाने तिन्हें जौन आये ॥ कहा पाणिकों जोड़कै भूपको प्रेमसे माथको पादमे दूत नाये ॥१४१५॥ चलो जै महाराज श्रीराम लै साथ वेला भई देर कीजै न नाथं ॥ तबै राय भाषैं वशीष्ठं गुरूसे तथा कौशिकं से चलो देव साथं ॥ कहा वे मुनी चतको पायकै भूपसे आपनो मोजकै खूब हाथं ॥ गई आयतं औतकै तौन भारी नहीं मेट शाकै लिखा जौन माथं ॥ १४१६ ॥ चले वेग औधंपती गातजं वेद लै साथ जेते वराती रहाये ॥ लगे बाजने कोट बाजं धड़ाकं पड़ाकं सड़ाकं काड़ाकं मचाये ॥ जले आतशं वाजि नाना प्रकारं कहां लौ लिखौं नाम ताकै अलाये ॥ धरै हैम छातं रमानाथ माथं सबै औरं भी पूत वैसा सजाये ॥ १४१७ ॥ लुटाते हुये वाटमे हेमको खूब आनंदसे भूप आगार आवें ॥ तबै मीथिलाधीश आदारमो आदरं साथ लावें विनंती करावें ॥ दयो पाग जामा पटूकादि नाना मनोजा पियाके पिता जो बतावें ॥ पुनः सादरं मिथिलेशं खुशी हो सबै मण्डपं बीचमो साथ लावें ॥

१४१८॥ गड़े माणिकं थंभ हीरे नगोंसे जड़े ज्योति छाई चहूंओर भारी ॥ चंदोवा तन्यो कारचोपी टकी झालरी तौनमे मोतियोंको पसारो॥ धरे कुंभ थे हेमके आम्रके पात तुंडं विषे वेद दीपं प्रजारी ॥ कहां लौ वखानौ प्रभा तौनकी नाहिं वैसा प्रकाशं रवीके मझारी ॥ १४१९ ॥ तबे मंडपंमो वरं वेद सिंहासनं पे विठाके महानंदरायें ॥ ऋषींद्र पूजे क्रमं माथ लाये लह्यो आशिरबाद भूरी मनाये ॥ करैं कोशला-धीशको फेर पूजा तथा भूप जेते सबै साथ आये ॥ पुनः आसनं दे वराती सबैको महाराजने स्नेह भूरी कराये ॥ १४२० ॥ विधाता सुनासीर भूतेश सूर्य्यादि देवं धर्यो वेश भूदेव आई ॥ पिछाना नहीं भूपने जानके देवभू सादर शीर्ष नाके बलाई ॥ विराजौ कृपासिन्धु आगारमो दाश पे हो प्रसंनं पवीतं कराई ॥ सुधा वाक एवं शुने रायके लेख वैठे सबे मंडपं पास आई ॥ १४२१ ॥ वशीष्ठं शतानंदसे भाषते वेग लाओ कुमारी न ढीलं करी जै ॥ सिया मातसे जाय वोले मुनी मंडपं जानकीको पठा शीघ्र दीजे ॥ शुने यों सुधा वाक रानी मुनीके कहा चेटकीसे वुला शीघ्र लीजे ॥ कुलंकी वधू और भूदेवकी नार लाके तिन्होंको कुलाचार कीजै ॥ १४२२ ॥ गई किंकरी वेग लाई

सखीं को किया है कुलाचार जो होत आये ॥ तबै नारिके रूपको धारिके खूब देवांगना रीतिको गीत गाये ॥ तिन्हैं देखिके प्रीतिको रीतिसे जानकी मातने आदरं को कराये ॥ करे षोड़शं गात शिंगार एवं शची औ रती देखके लाज पाये ॥ १४२३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुन मज्जन सियको करवाई ॥ भूषण वसन सकल पहिराई ॥ चरणोत्पल अलता नख शोहैं ॥ अरुण वर्ण लखि लाल लजोहैं ॥ १४२४ ॥ तिनपर कड़ा कनकके राजैं ॥ पायजेब लखि विद्युत लाजैं ॥ तोड़ा और सांकड़ा झलकैं ॥ कृष्ण रश्मि पक्ष्य शशि ललकैं ॥ १४२५ ॥ पदशोभा नहि जात वखानो ॥ दर्शन करत होत अघहानो ॥ शरण लेत जो पद जननीके ॥ जपत ताहि सुरपति धरणीके ॥ १४२६ ॥ वास न यमको ताहि सतावै ॥ वास विष्णुसो लोक करावै ॥ चतुर्व्वर्ग फलको उत पाई ॥ अन्त ज्योतिके मध्य समाई ॥ १४२७ ॥

॥ चौपाई छन्द ॥

ऐसे चरणोत्पल गुण लखि करि ॥ अर्च्चत सो मस्तक कवि पद धरि ॥ विसरत पादपद्म नहि पल भर ॥ तजत मीन जैसे नहि जलधर ॥ १४२८ ॥

और अङ्ग वरणो नहि भय करि ॥ सुतको धर्म्म नाहि यस चित धरि ॥ ताते तुरण्ड मौन निज करिके ॥ लूपे मात चरण हिय धरिके ॥ १४२९ ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

सजि चली सहेली साथ नवेली अति अलबेली हरषाई ॥ जग जननी मानी अति सुखदानी अस्तुति ठानी मन लाई ॥ वरयात्रन सुन्दर और पुरन्दर निज चित अन्दर गुण गावैं ॥ नभमो सुर जाई मोद वढ़ाई पुष्प गिराई सुख पावैं ॥ १४३० ॥ तव जनक दुलारी राम निहारी अति सुखधारी चित माहीं ॥ अवधेश अनन्दे होत स्वछन्दे ऋषि द्विजवृन्दे हरषांहीं ॥ शुभ आशीर्व्वादं दै अह्लादं जय जय नादं बहु कीना ॥ भूभुज गृह नारी गावत गारी लाज करारी तज दीना ॥ १४३१ ॥ गत बजत-शरङ्गो ढोल मृदङ्गो औ मुरचङ्गो साज तवै ॥ आई सिय जवहीं मगडप तवहीं शान्ती पढहीं विप्र सवै ॥ गौरी गणनायक विघ्ननशायक श्रुतिगण गायक पख ओरं ॥ अर्च्चन करवावै मन्त्र भलावै लेख रिझावै सब घोरं ॥ १४३२ ॥ पूजा सुर आई ग्रहण कराई जो रघु राई दान करैं ॥ मङ्गल वर दीन्हा जगपति चीन्हा अस्तुति कीन्हा कोट तरैं ॥ प्रोहित जो चाहैं मो सत्र लाहैं किङ्कर बाहैं पाणि

लिये ॥ पख घोर मझारं द्रव्य अपारं श्रेष्ठ प्रकारं त्यार किये ॥ १४३३ ॥ करिकै कुलरीतं सर्व्वं पुनीतं जिह विधनीतं श्रुति गाई ॥ सिंहासन शोहैं प्रभु सिय जोहैं हर्षित होहैं रघुराई ॥ शोभा अति भारी शैल कुमारी क्रांति पशारी जस लम्बा ॥ तस राजत सुन्दर लजत पुरन्दर मण्डप अन्दर जगदम्बा ॥ १४३४ ॥

॥ गीतका छन्द ॥

करि होम की विध वेदमो जिह भांत है शुभ जानिये ॥ चरु देहि आहुत लेहि पावक रूपको धरि मानिये ॥ धरि वेद वाड़व वेशको जस रीतिको वतलावहीं ॥ तस प्रोहितों पख ओरकै शुभ व्याहको करवावहीं ॥ १४३५ ॥ बुलवा वहीं मिथिलेशको कुश केतुको वनिता मुनी ॥ तहसे चली सिय मातकै ढिग चेटकी वचको शुनी ॥ सव भांत शोभित गात भूषण ऊपमा कथिको कहै ॥ यश मातको जगमातकी कहि पार कोविदको लहै ॥ १४३६ ॥ द्रुत लायकै वह चेटकी पख भ्रातकै ढिग वाममो ॥ तिषठावती तव गांठको वह जोड़कै मख धाममो ॥ जस शैल भूभुज वामकै ढिग राजतीं मयनावती ॥ तस शोभतीं मिथिलेशकै ढिग-वाम सूनयना सती ॥ १४३७ ॥ कलशा मनोहर हेमकै भरि गन्ध मंगल तोयकै ॥ पख भ्रात ले निज नारिको

पद धोवते खुश होयके ॥ पढ़ते ऋचा मुनि वेदकी सुर फूलकी बरषा करैं ॥ धनि भाग है मिथिलेशके पद नाथके करमो धरैं ॥ १४३८ ॥ जिनके पदांबुज ध्यानमो नहि नीललोहित पावते ॥ करि दान तारक मन्त्रको भव कोटके अघ धावते ॥ तिनको पखारत मीथिलापति पाणिसे निज क्या कहैं ॥ सुख माहि पूरित होत भे पद पावनं चितमो लहैं ॥ १४३९ ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

मुनि शासन पाई सिय रघुराई जोड़ कलाई ध्यान किये ॥ करि गोत्रोच्चारं द्विज पख सारं नेग अपारं वेग लिये ॥ फूलन झड़ लाई प्रीति लगाई मङ्गल गाई लेख सबै ॥ मुनि मनुज अनन्दे प्रभु पद वन्दे तजि जग फन्दे सर्व्व तबै ॥ १४४० ॥

॥ कवित ॥

पाणीके ग्रहण देख नर मुनि मोद लेख वर दुल हिन वेश शोभा सुखदाई है ॥ जैसे घन भीतरमो दामिनी दमङ्क रही तैसे हरि कमला स्वरूप दरशाई है ॥ जैसे शिव पास शिवा शोभित महान तेज चन्द्र ढिग रोहणी प्रकाश जस पाई है ॥ जैसे धात्री गायत्री सावित्री लै विराजत हैं तैसे राम रमा छवि मण्डपमो

छाई है ॥ १४४१ ॥ पुन मिथिलेश सब वेद कुलरीत करि कन्यादान कयो मन अति हुलशायके ॥ जस हिमालय दीन दुहिता विश्वेश्वरको हरिको सागर दीन अब्जा मनायके ॥ तस रघुनाथको जनकसुता दान कीन होम द्विज करो पुन गांठको जोड़ायके ॥ भामरी फिराय दीन पुष्पवृष्टि लेख कीन जस घन बरषत श्रावणमो धायके ॥ १४४२ ॥

॥ किरीट छन्द ॥

वेद ऋचा वद मंगल्न गाण तवे करिके वहुता हरषावत ॥ गायक भाट करैं जय कार अथा रक्त मे प्रभुके गुण गावत ॥ देख रमा हरिके छविको सुर मानुषके मनमो षति भावत ॥ ज्यों शशि देख चकोर खुशी जल मीन मयूर घटा लखि पावत ॥ १४४३ ॥ फेर चुके जब भामरिको तब नेग निवेरत भूप बुला कर ॥ षापन षापन रीत सबै झगड़ा करि लेवत हैं सब आकर ॥ संधुर राम रमा शिरमो तब देत भये षति मोद वढ़ाकर ॥ शासन पा करिके गुरुकी पुन बैठ रहे विधु आसन जाकर ॥ १४४४ ॥ राम रमा छविको लखिके षवधेश खुशी तव होत भये जस ॥ शेष महेश थके कथिके कलिके कविको अब भाष शके तस ॥ लोचन लोक अनन्द रहे रसना सम सोम भणै

तिंहको कम ॥ होय मली नर देव फणी पद सम्भु जो सब चाख रहे रस ॥ १४४५ ॥

॥ कवित ॥

आत्मजा विवाहकार जनक आनन्द धर भ्रातस पुत्रिका नाम माण्डवी बुलायके ॥ भरतको दान कीन यौतुक बहुत दीन उर्म्मिला नामक निज दुहिता सजायके ॥ लक्ष्मणको दानकर मनमो प्रमोद धर माण्डवी कनिष्ठ श्रुतिकीर्त्तिको मगायके ॥ शत्रुघ्नको दान दीन वेद कुलरीत कीन जस मुनिराज विध दीन बतलायके ॥ १४४६ ॥ मण्डपके मध्य वेद पुत्र-वधू पुत्र देख दशरथ भूप अति आनन्द करायो है ॥ यथा रङ्क वित्त पाय क्षुधातुर अन्न खाय पिपासित वन देख प्राणको धरायो है ॥ भूषण वसन छवि देवाङ्गना लखि सब लज्जातुर होय निज वदन लुकायो है ॥ इनकी उपमा छवि खोजत थकत कवि इनके साहृश्य छवि इनहींमो पायो है ॥ १४४७ ॥

॥ अमला छन्द ॥

बहु भांत दयो पुन यौतुक श्रीमिथिलापतिने चितमो हरषाई ॥ गज वाजि महो धन धाम अपार जवाहिर भूषण वास मगाई ॥ अरु धेनु दई तिह शृंगनमो कलधौत मढ़ा करि प्रेम बढ़ाई ॥ लखि

दाइजको धन पाल भयो निज कोष विषै अस देख न पाई ॥१४४८॥ अस यौतुक ले करिके अवधेश दयो सब याचकको पुन दानं॥ भल बाड़व नापित आदिकको द्रुत खोय दिये सब रङ्क निशानं॥ तब जोड़ भुजादल को मिथिलेश भयो विनती करिके अति मानं॥ सन-वंध भयो जबते तव कोशलराज सबै लघुता निज हानं ॥ १४४९ ॥ शुनिके वच श्रीमिथिलेश्वरकी अवधेश भयो करतूति सराहीं॥ सब भांत प्रसंन किये हमको विधु तुंड प्रशंस बनै न कदाहीं॥ युग गातजको मम दीन सुता अरु राजनकी सनमान कराहीं॥ धन धाम अनेक प्रकार दिये जिनको सुरराज न पार लहाहीं ॥ १४५० ॥ यह भांत नरेश भयो इतरेतर आपुसमो वहुता हरषाई॥ सब बाजन फूक घसीट पिटंत बजा करिके वहु रंग मचाई॥ अवधेश तवै जनवास चले वरयात समेत महा हरषाई॥ ध्वनि वेद करै गण बाड़वके पंहुचे जनवास विषै सब आई॥ १४५१ ॥ मुनि शासन पाय सखीगण मंगल गाथ करैं चित धारि अनन्दं॥ वर वेदसुतायुग साथ लिये पंहुचो तब कोहवरं अलिवृन्दं॥ चितवैं सिय कांतमुखांबुजको जस देख चकोर रहै मुखचन्दं॥ रघुनाथ खुशी तब होत भये सियकी छबिको लखि ज्योति अमन्दं॥

१४५२ ॥ प्रभुकी छविको कवि क्या वरणे लखि काम स्वरूप अपार लजे हैं ॥ चरणांबुजकी गुण कौन कहै लखि नाश अघी अघ कौन भजे हैं ॥ कटि पीत पितांबरको छविको लखि दामिनि आपन क्रांति तजे हैं ॥ उपवीत विराजत पीत गले तनमो सब भूषण खूब सज हैं ॥१४५३॥ जग भूषणके तनमो सब भूषण हो करि ज्योति प्रचंड विराजै ॥ पत्र कुंडलकी छविको लखिके विधु कातिककी मनमो अति लाजै ॥ शिर मौर मनोहर छाटककी भृकुटी लखि काम शरासन भाजैं ॥ पुरकी सुरकी अवला सबही लखिके हरिको खुश हो करि गाजैं ॥ १४५४ ॥ पुन और सबै वनिता मिलिके सब लौकिक रीति करैं हरषाई ॥ अरु गा करि गीत मनोहर गालि दयो प्रभुको अतिशै बहराई ॥ पुन हास विलाश अपार करैं हरिसे तब सोय सखीगण आई ॥ वरणै कवि कौन शकै मुखसो कथि शारद नारद पार न पाई ॥१४५५॥ पुन साथ लिये सियको सखियां सब जात भई करि गात शिंगारं ॥ ध्वनि दुंदुभि होत भई नभसे अरु फूल गिरैं दिवसे लख भारं ॥ सुर नाग मुनी करजोड़ करे जय जै कहिके जय शोर अपारं ॥ तब ले युग ईश्वर दम्पतिको अलि पौंछ गई जनवास मझारं ॥ १४५६ ॥ सुत और बधं

लखिकै अवधेश करैं कुलरीत सबै हरषाई ॥ पुन वेद वधू मुख देख नरेश दिये मणिहार महा छवि छाई ॥ तिहं काल बरातिन देख वधू गणके मुख भूषण दान कराई ॥ तब लेख सबै निज लोक गये मुखते हरिके गुणको अति गाई ॥ १४५७ ॥ कमला गिरिजा अरु शारद वेद प्रसू सम वेद वधू मन शोहैं ॥ सखियांगण घेर रही कस हैं अस तारका घेर शशी मन मोहैं ॥ पुन लौट पितालय वेदसुता पहुंची जननी मुखको लख जो हैं ॥ अवधेश दिये सुखको लखि क्या अस पूंछ रहीं अवला सबको हैं ॥ १४५८ ॥

॥ दोहरा ॥

शुनत स्वसा युग हर्षके भूषण सर्व दिखाय ॥ जो जन जिनको जो दिये तिनके नाम बताय ॥ १४५९ ॥

॥ भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥

तवै मिथिलेशं जमाता वुलायं ॥ कुमारं सबै भूपकै लैन आयं ॥ सजे लेख वा कामदेवं समानं ॥ पहूंचे सभामो जहां नाच गानं ॥ १४६० ॥ लखे भूपने सादरं तौषठाये ॥ कहा पाणिको जोड़के पूत राये ॥ वरं वेदको साथमो भेज दीजे ॥ चलिवा वारं हेतु ढीलं न कीजे ॥ १४६१ ॥ शुने वाक मीष्टं सुधाकै समानं ॥

महामोदसे वैन कीने प्रमाणं ॥ सजाकी कुमारं नखं शीर्षंताई ॥ महाराजके गेह दीना पठाई ॥ १४६२ ॥ चले वाहमो वैठके भ्रात वेदं ॥ रवी औ शशी चालको कीन छेदं ॥ कुदाते नचाके कलोलं मचाये ॥ सबै प्राण नाथं भये लोक आये ॥ १४६३ ॥ जबै मिथिलाधीशके गेह आयं ॥ महामानसे नाथको तीवठायं ॥ सभा लोग जेते सबै पास आये ॥ महा प्रीतिसे बातचीतं कराये ॥ १४६४ ॥ तबै शाशुने चेटकीको बुझाई ॥ जमाता बुलाने सभामो पठाई ॥ कहा किंकरी जायके नाय माथं ॥ रमानाथको भेजिये वेग नाथं ॥ १४५५ ॥ तबै चेटकी वाकते मीथिलेशं ॥ कहा नाथको ध्यान कोजे जगेशं ॥ चले हासके गेहमो वेद भाई ॥ विठा शाश टोना गलीचा विछाई ॥ १४६६ ॥ सखीं सीयको आयके घेर लीना ॥ मनो तारका वीचमो चंद्र कीना ॥ तबै पायसं हेम थारी भराई ॥ दिये नाथके मामने वेद लाई ॥ १४६७ ॥ कलेवा करं हेतु भाषैं नरेशं ॥ रहे मौन हो प्रेम नालं जगेशं ॥ करे प्राशनं ना मनेमो हसाहीं ॥ तबै मीथिलाधीश राणी कहाहीं ॥ १४६८ ॥ करो भोजनं शीघ्र हे प्राण प्यारे ॥ रहे नाथ मौनं हठं खूब धारे ॥ भयो जानकी तातको पाटराणी ॥ नहीं जीमते हैं हठं कौन ठाणी ॥ १४६९ ॥ कहा मीथिला-

धीशने काज कीजे ॥ करी मोतियोंकि गलि हार दीजे ॥ कड़े हिमके माणीकोंकि जड़े हैं ॥ अलंकार कोटैं तरैंके धरे हैं ॥१४७०॥ नखं शीर्षसे वेग लाके सजावैं ॥ तवै मीनको छोड़के खीर खावैं ॥ खुशी जानकी मात हो आप लाई ॥ नखं शीर्षसे खूव दीना सजाई ॥१४७१॥ भये शाश पै खूव आनंद नाथं ॥ किया प्राशनं भ्रातको वेद साथं ॥ परोसैं सखी जानकी की हमाई ॥ महा-मोदसे नाथने खूव खाई ॥ १४७२ ॥ अली सीयकी वैठिके गालि गावैं ॥ कहां लौ वखानौ लिखे मो न आवैं ॥ मुखं धोयके पान दीना खिलाई ॥ पुनः आसनं वीचमो तीषठाई ॥ १४७३ ॥ प्रकृष्टं स्वरूपं प्रकाशं कराये ॥ अशंखं अनंगं अनूपं लजाये ॥ लगी ताकने राजयोंकी कुमारी ॥ करैं हासकी वात नाना प्रकारी ॥ १४७४ ॥ किशूने कही नाथ यादू कराई ॥ करीं नारि सारी वशीभूत आई ॥ कीशीने कहा नैनके वाण मारी ॥ तवै नारि वौरी सतीत्वं विदारी ॥ १४७५ ॥ इशी तौरसे वोल वामा हसाई ॥ करैं लाखने गालि दैके ढिठाई ॥ प्रभो शाशुसे आसनं लै सिधाये ॥ सवै भ्रात साथं पिता पास आये ॥ १४७६ ॥ लगे पूछने भूप क्या आप पाई ॥ दिखाया सवै नाथने जौन लाई ॥ अलंकारको देखके औध राये ॥ खुशागारमो मौजको

कीन जाये ॥१४७७॥ पुनः मीथिलेशं इतीगं प्रकारं ॥ लदा प्राशितं भार गाडी अपारं ॥ पठाते भये कोशला- धीश गेहं ॥ लिया नाथके तातने साथ नेहं ॥१४७८॥ मजूरे सबोंको बहु दान दीना ॥ गुणावाटको गायके ध्यान कीना ॥ तवे मीथनाथं बराती बुलाई ॥ भली भांतिसे प्राशनंको कराई ॥१४७९॥ पुनः भूप ताम्बूलको दीन लाये ॥ इलाची तथा देवफूलं रिझाये ॥ पुनः मेफिलं बीचमे भूप आई ॥ यथायोग दै स्थानको तीषठाई ॥ १४८० ॥ लगे नाच होने आनंदं अपारं ॥ स्वरं सात छे राग त्रै ग्राम मारं ॥ गतें तावला वीणा बेला वजाई ॥ सबै लोगको खूब लीना रिझाई ॥१४८१॥ दिनेशं जबै गात कीना छिपाये॥ शशी मोजसे व्योमके बीच आये ॥ करें साधु संध्या महा ध्यान लाई ॥ तबै झाड़ ल्लाशं नरेशं जलाई ॥ १४८२ ॥ शमादान ज्योतं करें क्या प्रकाशं ॥ सबै ग्रामके वे तमं कीन नाशं ॥ गुलाव पास पी पानदानं धरे हैं॥ मणी थी कणीसे जड़ेले खरे हैं ॥१४८३॥ तवै मीथलाधीश आमंत्रणंको ॥ चले साथ लेके समाजं निजंको॥ जवे कोशलाधीशके पास आये ॥ महां प्रीतिसे आदरं मो कराये ॥१४८४॥ उठे राय पार्थिव मही स्नेह लाई ॥ यथायोग स्थानं सबै तीषठाई ॥ लखें नाच गानं सबै कंचनीका ॥ भले

ख्याल गावैं वना औ वनीका ॥ १४८५ ॥ कछू देर वाद निमंत्र कराये ॥ चले पाणिको जोड़के गेह आये ॥ पुनः दूसरे वासरं रात्रि जाई ॥ महा प्रेमसे पाणिको जोड़ गाई ॥ १४८६ ॥ निजं किंकरं गेह पाकं कारी के ॥ वराती सवै साथके लै चली ज्ञ ॥ तवै कोशलाधीशने प्रीति लाई ॥ वराती समेतं प्रयानं कराई ॥ १४८७ ॥ वजे वाजने खूव नानाप्रकारं ॥ लगे छूटनेको हवाई अपारं ॥ कहां लौं वखानौं सवारी अनेकं ॥ चढ़े छैल वूढ़े सवै एक एकं ॥ १४८८ ॥ लुटाते हुये हेमको द्वार आये ॥ तवै मैथिलेशं नुतीको कराये ॥ महा आदरं साथ आगार लावैं ॥ पदं अम्वुजं धोयके तौवठावैं ॥ १४८९ ॥ मई मण्डपं वीच शोभा अपारं ॥ पड़े पातलं हेमके खीन धारं ॥ कशोरे कला धौतके कोट आये ॥ भले केवड़े नीर तामें भराये ॥ १४९० ॥ परोसैं मिठाई अनेकं प्रकारं ॥ कहा लौं वखानौ गयो तुंड हारं ॥ दिये व्यंजनं पापड़ं औ अचारं ॥ दधी रायते दूध मेवा अपारं ॥ १४९१ ॥ पुनः नेमको मीथलाधीश दीने ॥ लगे जीमने राय आनन्द भीने ॥ जमाता तथा जो वराती रहाये ॥ सवै पासमें मीथिलाधीश आये ॥ १४९२ ॥ भयो पाणिको जोड़के क्या अहीजै ॥ जरा प्राशितं हाथसे मोर लीजै ॥ इमी तौरसे

पूंछते कोट बारं ॥ छकावैं भलो भांतिसे प्रेम धारं ॥ १४९३ ॥ तबै गायबी गेहमो नारि केती ॥ लगीं गालियां गावने भांत केती ॥ बराती कलोलैं करैं खाय गारी ॥ मनो पाकवानं दिये लाय भारी ॥ १४९४ ॥ पुनः पूंछते मैथिलाकांत आई ॥ जरा चाखिये भोमकोनं मिठाई ॥ किसीने कहा भूप आगे धरे हैं ॥ किसीने कहा पेट भारी भरे हैं ॥ १४९५ ॥ तबै आचमनं नरेशं कराई ॥ दिबे पान औ लायची लौंग लाई ॥ चले चाभको भूप आगार आये ॥ तमाशं करोरं प्रकारं कराये । १४९६ ॥

॥ भूलना छन्द ॥

इसी तौरसे रोज लावैं खिलावैं कहां लौ लिखौं मै कथाको वढ़ाये ॥ गणेशं महेशं सुरेशं दिनेशं जलेशं फणीशं रमेशं थकाये ॥ कवी मै कलोको कहां पार पाऊं इसी हेतुसे तुंड मौनं कराये ॥ प्रभोसे करो प्रीति जो ग्वालमाांसंह तो कालको पाश तेरो नशाये ॥ १४९७ ॥

अथ श्रीमती सीता देवी चारो भगिनीकी विदाई एवं परशुराम सम्वाद।

॥ कवित ॥

गाधिज बुलाय भूप भयो समुझाय खूब भयो है अनेक दिन औध छोड़ आवहीं॥ विदायी कारे नरेश जावेंगे मै निज देश वेग द्विज राज जाय खबर जनावहीं॥ शुनिके मुनीन्द्र धाय कहैं नृपको बुझाय विदायी महीप औधनाथका करावहीं॥ शुनत मीथिलाराय दशरथ पास जाय करिके क्रन्दन करजोड़ समुझावहीं॥ १४९८॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

और कछुक दिन वास करावें॥ ऋतु ऋतुकी मेवा सब खावें॥ शुन महीप करजोड़ बुझाये॥ होयो घस्त्र बहुत मै आये॥ १४९९॥ कृपा दृष्टि मुझ पर अव कीजे॥ कन्या वेद विदा करि दीजे॥ शुन मिथिलेश कलपि गृह आये॥ रानीको सव हाल जनाये॥ १५००॥ शुनि क्रन्दन सब नारि कराई॥ नाच रङ्ग सब गयी भुलाई॥ त्रिच्छेद यातना आय सताये॥ त्यारि विदायीकी करवाये॥ १५०१॥

रकम रकम कीने पकवाने ॥ मेवादिक दधि व्यञ्जन नाने ॥ कीन निमन्त्रण नृपको जाई ॥ शुन भूभृत भूरी हरषाई ॥ १५०२ ॥ प्रगे हीत प्राशनको आये ॥ पथ्य जनक अति प्रीति कराये ॥ आदर सहित दीन तीष्ठाई ॥ बिप्र बराती जवन रहाई ॥ १५०३ ॥ पुन झारी थारी मगवाये ॥ प्रक्षालन पदको करवाये ॥ कहं लग तिनका सुयश लिखाऊं ॥ ग्रन्थ वढनते अधिक डराऊं ॥ १५०४ ॥

॥ कवित ॥

प्रेम नाल लायकर सादर मनायकर आसन विछाय उपवेशन करायो है ॥ देत पकवान सव भोजन करत तव ऊपरसे गालिनकी व्यञ्जन खवायो है ॥ शुन सुधा सम गाल आह्लाद अवनीपाल महा तव भाग्य लखि मुनि वतलायो है ॥ गाधिजकी शुन वाक भूभुज भणत हांक आपकी प्रसाद यह सम्पदको पायो है ॥ १५०५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन कौशिक मनमो हरषाये ॥ करि प्राशन मुख धौत कराये ॥ तिष्ठे सभा मध्यमो आई ॥ पान कपूर लाची खाई ॥१५०६॥ तव दशरथ प्रभुको वतलावें ॥

हो करि विदा शाशुमे आवैं ॥ शुनके अनुज सहित रघुराई ॥ तिष्ठे शाशु निकटमो जाई ॥ १५०७ ॥ पाणिजोड़ पुन नाथ सुनाये ॥ विदा होन पितु मोहिं पठाये ॥ मात मुझे शासन अब दीजे ॥ क्षमा मोर अपराध करीजे ॥ १५०८ ॥ शुनके युग्म शाश कलपावैं ॥ करि क्रन्दन बहु शोर मचावैं ॥ और बन्धु जो कुटुम रहाये ॥ सब रो रो निज होश हराये । १५०९ ॥ क्रन्दन करैं जनक कलपाई ॥ रोवैं अनुज सहित रघुराई ॥ कुशध्वज्ज औ तिनकी नारी ॥ करैं विलाप मोह बस भारी ॥ १५१० ॥ हाहाकार करैं पुर लोई ॥ सुद्ध वुद्धि अपनी सब खोई ॥ जनकसुता युग लीन बुलाई ॥ त्रिया धर्म्म सब दीन शिखाई ॥ १५११ ॥

॥ कवित ॥

जननी कलप करि सुता वेद गोद धरि कन्त व्रता धर्म्म सर्ब्ब दयो शिखलायके ॥ शिविका मगाय वेद करिके आनन्दच्छेद ताके मध्य भूप युग कन्या तिषठायके ॥ रोदन करत अति तजिके बैराग्य मति क्रन्दन करत युग सुता घबड़ायके ॥ प्रबोध करत राय लाडिगे मे छिप्र जाय शिविका कपाट बन्द किये अम गायके ॥ १५१२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुन समधी शिर तिलक कराये ॥ और जमाता वेग बुलाये ॥ करि क्रन्दन करजोड़ भलावें ॥ मोह त्याग नहिं मोर करावें ॥ १५१३ ॥ असभगा लख लख समुझाई ॥ दीना द्रव्य बहुत कलपाई ॥ पाणिजोड़ दशरथ बतलावैं ॥ ममता मम जिन आप तजावैं ॥ १५१४ ॥ यस प्रकार इतरेतर गाई ॥ मिले परस्पर कराठ लगाई ॥ पूर्व्व हर्ष सब गयो भुलाये ॥ विच्छेद कष्टकी मध्य समाये ॥ १५१५ ॥ भेटनको बाड़वगण आवैं ॥ सबको दशरथ तुष्ट करावैं ॥ दै दै करि गाभो धन नाना ॥ लै लै विप्र कीन सब प्याना ॥ १५१६ ॥ और दरिद्र जौन शुन आवें ॥ धनी होय सब भवन सिधावैं ॥ अश्व करी स्यन्दन कशवाई ॥ सबको भूभुज दीन चढ़ाई ॥ १५१७ ॥ बाजा सर्व्व बाजने लागे ॥ पुर जनगण रोते प्रभु आगे ॥ पाणिजोड़ अवधेश भलावैं ॥ क्या निदेश मिथिलेश करावैं ॥ १५१८ ॥

॥ कवित्त ॥

शुनत जनक राय भगात अहर्ष काय भीमे कछू दूर भूप जावें तब साथमे ॥ शुनिके कोशलराय मनमा आनन्द पाय तिष्ठत जनक पाणि थाम निज

हाथमे॥ स्यन्दन प्रयाम कीन मस्तक निवाय दीन भूप सर्व्व सुर पद औरगङ्ग पाथमे॥ समर्त्थ निरख सब मनमो हरष तब पुष्प वृष्टि कीन अति रघुनाथ माथमे ॥ १५१९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कछुक दूर पंहुचे जब आये॥ घेरा परशुराम गर्ज्जाये॥ पथ्य जनक दशरथ भय पाई॥ उतर यानसे शीर्ष निवाई॥ १५२०॥ जोड़ प्रवेष्ट नुती पुन करते॥ सुन भृगुपति मनमो अति जरते॥ पार्थिवसे पूछैं धमकाई॥ गुरु पिणाक मम कीन खपाई॥ १५२१ ॥ श्रवण मात्र दशरथ भय पाये॥ पञ्चशाख द्रुत जोड़ सलाये॥ तब सेवक सुत राम कहावैं॥ तिनकी कर कार्म्मुक तन घावैं॥ १५२२॥ श्रवणमात्र भृगुराम रिसाई॥ रक्त नयन करि गर्ज्ज सलाई॥ मम खगाती सुतका रखवाये॥ कछुक त्रास चितमो नहि लाये॥ १५२३॥ असभण रामचन्द्र ढिग आई॥ अरुण चक्षु करि गर्ज्ज सलाई॥ सद्य तोहि यमलोक पठावैं॥ गुरु पिणाक बदला तब पावैं॥ १५२४॥ सुनत वचन रघुपति मुश्किाई॥ जोड़ भुजाद्लको बतलाई॥ देवैं हितिय चाप बनवाये॥ कोप धार द्विजराम सलाये॥ १५२५॥

॥ कवित ॥

मार सप्तबार तीन क्षत्रिन खपाय दीन पृथिवीको छीन छत्र काश्यप धरायो है॥ मुझको भषत मूढ़ क्षितिय धनुष कूढ़ दीनत एकत्र जूड कीतनो करायो है॥ अवही कुठार मार कहूं गा मै तार तार देखोगे हमार कार द्विज वतलायो है॥ लक्ष्मण रिशाय करि भाषत हैं कोप धरि कौन है निक्षत्र अब नाथ न रहायो है॥ १५२६॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत मुखज भृगु कन्त रिशाये॥ नयन लाल करिके वतलाये॥ जीर्ण चाप तव भात नशाई॥ ताते तूं अति दम्भ कराई॥ १५२७॥ मम सेवक सुतका यश गाये॥ मै हरि शरारोप यह लाये॥ या मे देवें गूण चढ़ाई॥ तव विरत्व जाने मै भाई॥ १५२८॥ शुन रघुपति मनमो हरषाये॥ लै कार्म्मुक द्रुत गूण चढ़ाये॥ चाप सङ्ग निज यंश पिचाई॥ तव करजोड़ राम द्विज गाई॥ १५२९॥ प्रभु तुम विश्वकन्त मै जाना॥ करु अपराध क्षान्ति भगवाना॥ शुन रघुवीर महा हरषाई॥ जोड़ प्रवेष्ट भये समुझाई॥ १५३०॥ सब विध चाप पुज्य मुनि रायं॥ स्तुति करि विद्रुप मोर करायं॥ अवभय वीर युगल हरषावें॥ मिलि

मिलि विद्रव वेश्म करावैं ॥१५३१॥ प्राणदान सुनता पाव पाये ॥ और बराती जौन रहाये ॥ भवन गमन कारण मिथिलेशा ॥ भये देहु शासन अवधेशा ॥ ॥ १५३२ ॥

॥ कवित ॥

शुनवी कलप कर मिलवी परसपर विद्रव करत भूप निज निज घरको ॥ सरयू निकट जाय खबर भेजत राय कह्यो हाल सर्व्व दूत मात रघुवरको ॥ शुन प्रभु प्रसू सव मनमो आह्लाद तव कीन हैं तयारी दूत सुत परछनको ॥ नाइनि पठाय करि नेवता कराय करि अवला बुलाईं मात सर्व्व पुरजनको ॥ १५३३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

और बन्धु जो कुटुम रहाये ॥ सबको राणागण बुलवाये ॥ मङ्गल गाण करैं हरषाईं ॥ नगर मध्य पहुंचे रघुराई ॥१५३४॥ प्रजा सर्व्व शिर पुष्प गिराये ॥ जय जय रामचन्द्र जय गाये ॥ पहुंचे वेश्मद्वार रघु राई ॥ पश्य सर्व्व जननी हरषाई ॥ १५३५ ॥ करैं गाण मङ्गल विध नाना ॥ शुन सन्तुष्ट भये भगवाना ॥ कौशल्या परछन सुत जावैं ॥ सङ्ग नारि सब प्यान करावैं ॥ १५३६ ॥ करि परछन कुलरीति कराई ॥

पुत्र वैद बधु सद्म न लाई ॥ ईष्ट देव अर्च्चन करवाये ॥ पुन कुलकी सब रीति कराये ॥ १५३७ ॥ देखैं प्रभू सर्व्व बधु आई ॥ निज निज भूषणको पहिराई ॥ और बन्धु जो कुटुम रहावैं ॥ अलङ्कार लखि दान करावैं ॥ १५३८ ॥ हो प्रसन्न कौशल्या माई ॥ दीना भूरी वित्त लुटाई ॥ कहं लग तिनका हर्ष लिखाऊं ॥ ग्रन्थ वढ़नते अधिक डराऊं ॥ १५३९ ॥

॥ कवित ॥

बराती बुलाय सब भोजन कराय तब आदर करत भूप अति प्रीति लायकै ॥ भवन निर्याण कीन शासन नरेन्द्र दीन मनमो विहर्ष और राम गुण गायकै ॥ भूमोन्ट करत राज दुर्ज्जन पावत लाज प्रभो यश छाय रह्यो त्रिभुवन धायकै ॥ मदन गोपाल सिंह पूर्ण बालकाण्ड कीन श्रीगुरू पूरणब्रह्म नानक मनायकै ॥ १५४० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ना पिङ्गल ना व्याकरण ना पढ़या मै कोश ॥ भूल चूक मम देखकै करैं न कोविद रोष ॥ करैं न कोविद रोष मिलि सम्बत सुखदाई ॥ उनइशशौ छत्बीश भूप विक्रमकी आई ॥ भणै ख्वालसासिंह पूर्ण तब काण्ड कराये ॥ अक्षय तृतिया पर्व्व शुक्र वासर

जय पाये ॥ १५४१ ॥ इति स्वात्मभा कृत रामायणे प्रथम सोपान बाल काण्ड समाप्तः ॥

एक ॐकार सति गुरु प्रसाद ।

॥ श्रीवाहि गुरूजीकी फते हैं ।

अथ अयोध्याकाण्डमभिलिख्यते ।

॥ श्लोक ॥

ॐ: ई: अ: म. उ: ख: क. ऊ ॥ ग: क्ष: ञ. भ. ?: न: ध: प: ॥ व: ङ: त्र: ञ: श: ज: स: ह: ॥ ट: च: ठ: थ: तस्मै नमः ॥ १५४२ ॥ पूर्व्व काण्डेयमाख्यातम् ॥ स्तुतं बहुविधं स्मृतम् ॥ अद्यापितं महादेवम् ॥ देवा नामपि देवतम् ॥ १५४३ ॥ नेत्रलोकेप्रभावंतं ॥ गुरु नानक मुन्दरं ॥ गौरकान्तिं दीर्घबाहुं ॥ लम्बश्मश्रुश्च कोशलम् ॥१५४४॥ सिंहश्रोणीं मृगेक्षणम् ॥ कोमलञ्च पदाम्बुजं ॥ प्रणतोस्मि शान्तिरूपम् ॥ मोक्षदञ्च शुभङ्करं ॥ १५४५ ॥ मत्स्यरूपं विश्वपालं ॥ भवसंसार तारकं ॥ सद्यः सयाति स्वर्लोकं ॥ यः पठेत श्लोक पञ्चकं ॥ १५४६ ॥

॥ भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥

तुंही मीन ह्वै शंखदानो खपायो ॥ तुंही कूर्म्म ह्वैके मधूकैट घायो ॥ तुंही वाराहा रूपको धारि आये ॥

बचा मेदिनीको छिरंख्याछ धाये ॥१५४७॥ तुंही नार-सिंहं धर्यो गाल भारी ॥ बचा दासको तात ताको विदारी ॥ तुंही बामनं रूपको धार आये ॥ ठग्यो जावलीको अधो भू पठाये ॥ १५४८ ॥ तुंही भृगुरामं धर्यो वेश बांका ॥ बलातेग भारी करयो खूब शाका ॥ तुंही रामको रूपको धारि आयो ॥ दिशा माथको मारके राज पायो ॥ १५४९ ॥ तुंही नंदको लाल बांके कहाये ॥ रच्यो रासलीला महा प्रेम लाये ॥ तुंही लोक नाथं उड़ीष्या पधारं ॥ करयो एक जातिं सबै कोमचारं ॥१५५०॥ तुंही या कलीमे गुरुरूप मेरा ॥ किया तुर्क हिन्दू सबौंका निबेरा ॥ नहीं और ऐसा सबै रूप यारी ॥ जिसै पूजते हिंन्दु औ तुर्क सारी ॥ १५५१ ॥ बहुरूपको धारके नाथ आये ॥ कहांलो लिखौं स्रोकमे बीच गाये ॥ करौं प्राणिपातं प्रभो पाद तेरे ॥ सबै क्लेश ध्वंसं करो नाथ मेरे ॥१५५२॥ प्रभो रामहो जौन क्रीड़ा कराये ॥ कहूंगा कछूवे कथा मे बनाये ॥ यही हेतुसे याद नाथं कराबैं ॥ सनाके तुझे गीत तेरो शुनावैं ॥ १५५३ ॥ करो वेग कृपा मुझे दीन द्याला ॥ पिलाओ मुझे नामका एक प्याला ॥ नही और चाहूं शुनो नाथ मेरे ॥ रटौं तोर ख्याती प्रभो शर्ण तेरे ॥ १५५४ ॥ भवे सिंह भक्तं प्रभो दीन

दाता ॥ मुझे काम क्रोध ग्रस्यो मोह व्याला ॥ कभी आपनी दाश पे आप ख्यालं ॥ बचाओ मुझे ख्यालहै दीन वालं ॥ १५५५ ॥

अथ श्रीभरत शत्रुघ्नजीका मातामह के भवनमे गमन ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

काण्ड अयोध्या भणत हौं शुन सज्जन मन लाय ॥ जाको पढ़ संकट मिटै यमको दण्ड नशाय ॥ यमको दण्ड नशाय अमर ख्यातीको पावैं ॥ केवल नाम अधार कली मे वेद बतावैं ॥ ताते रघुरपति कथा मीत मै कछा बनाई ॥ भवसागरते तरै ग्रन्थ जो पाठ कराई ॥ १५५६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

करि विवाह ईश्वर घर आये ॥ केकर भूपति दूत पठाये ॥ उपदा दयो भूपको आई ॥ जो गिरिराजकान्त पठवाई ॥ १५५७ ॥ निरख नरेश्वर अति हरषाये ॥ जोड़ भुजादल दूत जनाये ॥ नाती युगल नरेन्द्र बुलाई ॥ देहु दण्ड दाता पठवाई ॥ १५५८ ॥ शुनत

वचन दशरथ हरषाये ॥ भरत शत्रु चालक बुलाये ॥ पहुंचे भ्रात युगल तब आई ॥ भयो दण्ड धर तिन्है बुझाई ॥ १५५९ ॥ तब मातामह तुम्है बुलाये ॥ कीचे भेट वेग सुत जाये ॥ शुनत युगल भ्राता हरषावें ॥ ले घरको प्रस्थान करावें ॥ १५६० ॥ गिरिराज नगर पहुचे जब जाये ॥ देख सकल पुरजन हरषाये ॥ नाना नानी मामी मामा ॥ भेट करैं आकरि सब वामा ॥ १५६१ ॥ भांति भांति पकवान बनाये ॥ नातीको भोजन करवाये औधि विषै दशरथ हरषाई ॥ गुरु वशिष्ठको भाष शुनाई ॥ १५६२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रामचन्द्रको राज मे देवैंगे मुनिराय ॥ क्या शासन प्रभु आपका मुझको देहु बताय ॥ मुझको देहु बताय विप्र बोलें हरषाई ॥ करो भूप शुभकाज आप चित मे जो लाई ॥ शुन महीप करजोड़ विप्रको शिरस झलाये ॥ दीजै उत्तम लग्न शोध मुझको बतलाये ॥ १५६३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत वचन मुनिवर हरषाये ॥ खोल ग्रन्थ ज्योतिष बतलाये ॥ भ पुष्या नामक कालपावें ॥ सुत-वरको गद्दी बैठावें ॥ १५६४ ॥ अधीवास नृप आज

कराओ ॥ नगर नगरमे खबर पठाओ ॥ सुनत बचन भूपत हरषाये ॥ नारायणको निकट बुलाये ॥१५६५॥ भये वशिष्ट मुनी समुझाई ॥ प्रात होय गद्दी रघुराई ॥ अधीवास होवेगा आजू ॥ ताको नियम करो युवराजू ॥ ॥ १५६६ ॥ सुनत वचन ईश्वर हरषाये ॥ जननीको सब हाल जनाये ॥ कौशल्या सुनके हरषावैं ॥ माणिक मोती हेम लुटावैं ॥ १५६७ ॥ पुरवासिन सुनके हरषाये ॥ इन्द्र तुल्य निज भवन सजाये ॥ नृपकों भूप निमन्त्र कराई ॥ खबर पाय पहुंचे सब आई ॥ १५६८ ॥ जब मुनि लग्न समयको पाये ॥ अधोवास कीना हरषाये ॥ दान पुण्य बहु भांति कराई ॥ दरिद्र होय धनवन्त सिधाई ॥ १५६९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

राग रङ्ग होने लगे और तवायफ नाच ॥ खुशी नगर घर घर भयो और तमाशा पांच ॥ और तमाशा पांच देख अमरावति लाजैं ॥ सब राणी बुलवाय भूप करिके सब काजैं ॥ भये खालसासिंह हर्ष राणीगण आई ॥ कुटिल मन्थरा नार जरै सुनिके अति भाई ॥ १५७० ॥

अथ श्रीभरतजीको राज्य और श्रीरामचन्द्रजीको बनवास देनेके वास्ते श्रीमती केकयी राणीको मन्थरा दासीका उपदेश ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन ईश्वरकी राजकी कुटिल मन्थरा नार ॥ छटपटाय चितमो नरी जस भूंजेका भार ॥ जस भूंजे का भार दुष्ट राणीको आवे ॥ जोड़ भुजादल भयो खबर शुनियें चित लावे ॥ कौशल्या उपदेश कीन पतिको समझाई ॥ भूप वह ववराय राज निज दान कराई ॥ १५७१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन राणी पूछें घवड़ाये ॥ क्या कोजा भाणी समुझाये ॥ भणो दुष्ट कुवड़ी गरजाई ॥ गद्दी रामचन्द्रने पाई ॥ १५७२ ॥ तिनका अधीवास करवाये ॥ नृत्य राग बहु रङ्ग मचाये ॥ तिहँ कारण तुमको बुलवाई ॥ देखो सौतिन का सुख जाई ॥ १५७३ ॥ जानतभ्य कछु हाल न पाये ॥ निज मतलब करि खबर पठाये ॥ शुनत वचन राणी हरषाई ॥ कुवड़ीको बोलैं धमकाई

॥ १५७४ ॥ क्या चुरेल आवे तूं आये ॥ क्या सौतिन अपराध कराये ॥ भलो काम्य कीना बड़रानी ॥ पाये रामचन्द्र रजधानी ॥ १५७५ ॥ प्रथम पुत्र गुण कोट धरावें ॥ क्या तेरो अपराध करावें ॥ जाते यतनी कौन बुराई ॥ कहो हाल ताको समुझाई ॥ १५७६ ॥ सुनके सर्व लोग डरवाये ॥ तूं निज तनक्यों भस्म कराये ॥ सुन कुबड़ी अति कोप कराई ॥ भाषै झूठी बात बनाई ॥ १५७७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तव सम जग मे कौन है ऐसा मूरख और ॥ मै तो तव मङ्गल चहूं तूं समुझै कछु और ॥ तूं समुझे कछु और हानि यामें क्या मेरा ॥ जो भोगेगी आप और भोगे सुत तेरा ॥ जो चाहे सो भूप होय मेरा क्या हानी ॥ मै चेरी तव छोड़ नहीं होना अवरानी ॥ १५७८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन रानी मनमें बतलावें ॥ सौतिन ते कछु द्रव्य न पावें ॥ ताते निन्दा ताहि कराई ॥ दै कछु है करि लेहुं रिझाई ॥ १५७६ ॥ अस विचार भूषण ले आवें ॥ दै चेरीको विहस चलावें ॥ जिन कुबड़ी सुन मोच कराओ ॥ काल मुझसे बहुला धन पाओ

॥ १५८० ॥ रामचन्द्र पावैं जो राजं ॥ तौ तुमको देवैं बहु साजं ॥ आज चन्द्रभूषण ले जावो ॥ कुञ्ज मध्य इसको भ्रमकावो ॥ १५८१ ॥ शुनकी सर्व्व लिख भय पाये ॥ स्वारथ हेतु अनर्थ कराये ॥ द्रुहिण शारदाको समझावैं ॥ कैकर जा की कण्ठ समावैं ॥१५८२॥ बुद्धि सर्व्व को भ्रष्ट कराई ॥ राघवको वन देहु पठाई ॥ सरस्वती शुनकी भय पायं ॥ पद्मयोनिको भाषि शुनायं ॥ १५८३ ॥ मैं कैकयिकी कण्ठ समावैं ॥ ईश्वरको वनवास करावैं ॥ जब राणी चेतनको पाई ॥ देवैं शाप मुझै गरजाई १५८४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब स्रष्टाको भणी शुनौ मात चितलाय ॥ कैकयिका अभिशाप कछु तुझै न लागि आय ॥ तुझै न लागै आय हेतु ताको वतलावैं ॥ जब लागी थी मात विप्र भिक्षाको जावैं ॥ ताको कर्कश वाक बोल दीना कछु लाई ॥ तातै ताको भणी विप्र मनमै दुखं पाई ॥ १५८५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मुझको कर्कश वाक अलाये ॥ तेरी अयश त्रिभूवन गाये ॥ असमय मुनि प्रस्थान कराई ॥ शाप उदय होयो सो माई ॥ १५८६ । शुनत शारदा

अति हरषावे ॥ केकयिको चटवास करावें ॥ उठी कूवड़ी कोपकराई ॥ अलङ्कार फेंको गरआई ॥१५८७॥ भयो वक्र करिके समुझाये ॥ मै क्या करौं शिंगार कराये ॥ आप खूब सजि करिके माई ॥ देखो सौतिन का मुख जाई ॥ १५८८ ॥ बुद्धिनाश शारद करवायं ॥ शुन माता पूछै मुशकायं ॥ यामे क्या मेरी बुरि याई ॥ शुन कुवड़ी मन मे हरषाई ॥ १५८६ ॥ कुटिल जान कुवड़ी विधि कीना ॥ और जन्म दासी घर दीना ॥ पुर्व्व जन्मका हाल शुनाओं ॥ ताते सज्जनको रिझवाओं ॥ १५६० ॥ अप्सरा नाम दुन्दुभी रहावै ॥ कुटिल हेतु कुरूप धरावे ॥ भयो कूवड़ी बात बनाई ॥ जाते बश रानी हो जाई ॥ १५६१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तव दुखते होवैं दुखी तिहं कारण तड़फाय ॥ कहा रहा रानी तुझे तूं बोलै चटकाय ॥ तूं बोलै चटकाय हानि मेरा क्या माई ॥ राज पाट जब सर्व्वं तोर सौतिन सुत पाई ॥ तव क्या है तव और भूप क्या कारण सजाये ॥ जब चाहैं वनवास तुझे सौतिन करवाये ॥ १५६२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तव सौतिन का क्या करि लेवी ॥ भरत

आत्मजको क्या दे हो ॥ प्रथममत: यह आप बतावैं ॥ तब ताका मै युक्ति करावैं ॥ १५६३ ॥ तुझसे चतुर बड़ी बड़रानी ॥ निज सुतको दीना रजधानी ॥ तूं अज्ञान कछू नहि जाने ॥ सौतिन के सुखको सुख माने ॥ १५६४ ॥ अस पगली देखन नहि पाई ॥ जो सौतिन सुतते हरषाई ॥ प्रतिपालन मै भरत कराये ॥ ताते कह्यो मात मै आये ॥ १५६५ ॥ बुद्धि शारदा नष्ट कराई ॥ सत्य जान माता चित लाई ॥ भये कूबड़ीको हरषाये ॥ भल मुझको उपदेश कराये ॥ १५६६ ॥ मैयाका कछु भेद न पाई ॥ ताते हर्ष उठी ववराई ॥ तव सम बुद्धिमान नहि कोई ॥ कह्यो भविष्यत् होना जोई ॥ १५६७ ॥ अब याका क्या करैं उपाये ॥ जाते राज भरत यह पाये ॥ ताका युक्ति शीघ्र बतलावैं ॥ हर्षं कूबड़ी दुष्ट चलावैं ॥ १५६८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सारादिन भूला फिरे घर मे सन्ध्या होय ॥ ताको भूलन भाषिये भये सियाने लोय । भये सियाने लोय मात शुनिये चितलाई ॥ जाते पावैं राज भरत सौतिन दुख पाई ॥ वर देने पख भूप प्रथम जो तोहि कहाये ॥ ताको लीजे मांग कष्ट तेरो मिट जाये ॥ १५६९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत वचन राणी हरषाई ॥ दासीते पूंछे मुस-क्याई ॥ कैसो वर कछुयाद न आवें ॥ तब पुन कुवड़ी दुष्ट बतावें ॥ १६०० ॥ वासवकि घर भूप सिधाये ॥ सम्बर असुर मार गृह आये ॥ अस्त्र चोट तनमे धरि भारी ॥ करि क्रान्दन मारे चितकारी ॥ १६०१ ॥ तूं वन पढ़ि आराम कराये ॥ तब भूभुज वर दैन कहाये ॥ पूंछा तूं मुझसे तब आई ॥ क्या लेवें पतिसे वर जाई ॥ १६०२ ॥ तब तुझको मे विहस अलाये ॥ कहो कन्तको फन्द कराये ॥ काज पड़े लेवे तब आई ॥ सो पतिसे बोल्यो तुम जाई ॥१६०३॥ भूभृत् अङ्गीकार कराये ॥ पुनि दूसर वर दैन कहाये ॥ ताका हाल शुनो चितलाई ॥ व्रण होयो नख मैं जब माई ॥ १६०४ ॥ कोशल ताको चूष सकाये ॥ तूं आव्यो निज जीभ लगाये ॥ ताते प्राणदानको पाई ॥ वर दैने पुन कन्त अलाई ॥ १६०५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब आ करि मुझको कहा क्या लेवें वर जाय ॥ मे तुझको उपदेश दे दीना शीघ्र पठाय ॥ दीना शीघ्र पठाय भूपको जाय जनावें ॥ जब होवे दरकार युगल वरको मै पावें ॥ शुनत वात तब कान्त मात मंजूर

करायै ॥ वर लेनेका तौन समय पहुच्यो अब आयै ॥ १६०६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

प्रथमसत: वर दैन कहाये ॥ तामे राज भरत यह पाये ॥ पुन द्वितीय वर दैन कहावैं ॥ तामे रामचन्द्र वन जावैं ॥ १६०७ ॥ शुनत वचन राणी घवड़ाई ॥ दाशीसे पूंछैं कलपाई ॥ क्या कारण कानन सुत जावैं ॥ क्या मेरो अपराध करावैं ॥ १६०८ ॥ तव कुवड़ी बोलै समुझाई ॥ जो रघुपति वनमे नहि जाई ॥ भरत राज करणे नहि पावैं ॥ रामचन्द्र नित प्रधन करावैं ॥ १६०९ ॥ मार भरतको राज कराई ॥ क्या करि हो तिनका तव माई ॥ तिहं कारण तुझको वतलावैं ॥ जो राघव काननमे जावैं ॥ १६१० ॥ निस्कण्टक हो राज कराये ॥ विघ्न कोय लागे नहि आये ॥ बुद्धि शारदा नष्ट कराई ॥ सत्य जान राणी चितलाई ॥ १६११ ॥ पुन पूंछैं मन मे हरषाये ॥ जो पति नामञ्जूर कराये ॥ तव ताको क्या करै उपाई ॥ दीजे नीतिनि युक्ति वताई ॥ १६१२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन राणीके वचनको दुष्ट मन्थरा नार ॥ पाणिजोड़ भाषत भई मनमे युक्ति विचार ॥ मनमे युक्ति विचार

आप कहुँ उत जावैं ॥ कहिना मेरो मान भूप सुनते दुख अ.वै ॥ तनका भूषण फेंक लोट धरणीमें माई ॥ पुन पावें अब दूत कहूं तिनको मैं जाई ॥ १६१३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

उदर मातका दर्द करावैं ॥ क्यो करि मैं तिनको लै जावैं ॥ और भयौ बहु भांत बनाई ॥ जाको सुन सुनता झट आई ॥ १६१४ ॥ निरख कन्तको मौन रहावैं ॥ मनमे कोप प्रकाश करावैं ॥ तब भूभृत पूंछैं मुशकाई ॥ क्या लीहो प्रिय हेतु बताई ॥१६१५॥ तब तय याचकको करवाये ॥ वर अपनो मांगो हरषाये ॥ तब पूंछैं राणी ववराई ॥ कब तकरहैं राम बन जाई ॥ १६१६ ॥ हर्ष कूबड़ी दुष्ट बतावें ॥ वर्ष चतुर्दश बोल पठावें ॥ तबते अपनो दखल जमाओ ॥ चुन चुन बीर एकत्र कराओ ॥ १६१७ ॥ तब राघव क्या आय करावैं ॥ भृत्य तुल्य तब वास करावैं ॥ सुन राणी अतिशय ववराई ॥ तनका भूषण दूर कराई ॥१६१८॥ छटपटाय धरणीमे लोटैं ॥ मानो सर्प आयतन चोटैं ॥ निरख दुष्ट कुबड़ी हरषावैं ॥ जस दरिद्र धनको बहु पावैं ॥ १६१९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दुष्ट कुटिल जगजीव हैं तिनको है यह रीत ॥

कोटन बात बनायकी करैं रिपू सम मीत ॥ करैं रिपू सममीत कैकयी मित्र रहावैं ॥ दासीको सुन बात मात दुशमन होजावैं ॥ भखैं खालसासिंह सुनो सज्जन चित लाई ॥ पर मन्त्री लैं मन्त्र कभीको जो मत भाई ॥ १६२० ॥

अथ श्रीभरतजीको राज और श्रीरामचन्द्रजीको चतुर्द्दशवर्षके वास्ते वनवास देनेको केकयी राणीने राजा दशरथको कहा ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मैफिलसे उठि करि चले अवधिपती हरषाय ॥ पतनीगणके बीचमें कैकयिको नहि पाय ॥ कैकयिको नहि पाय भूप पूंछैं घबड़ाई ॥ क्या कारण बतलाव काहि कैकयि नहि आई ॥ सुनत बचन करजोड़ भणै कौशल्या आये ॥ क्यो राणी नहि पाय कन्त मैं खबर न पाये ॥ १६२१ ॥

॥ भुजङ्गप्रयात छन्द ॥

अभी दूतको भूप भेजो बुलाई ॥ भये हाल वे आपको शीघ्र लाई ॥ तबै दूतको भूप दीना पठाये ॥ कहा कूबड़ीको बुला दूत लाये ॥ १६२२ ॥ कहो काहिको आपने देर कीना ॥ चलो वेग लेवो प्रभो भेज दीना ॥ कहा कूबड़ी बात झूंठी बनाई ॥ कहो भूपको जायके दूत भाई ॥१६२३॥ भयो रोग भारी कहो सो करावें ॥ कहो आप तो जायके फेर लावें ॥ कहा दूतने रोग है कौन भारी ॥ कहा पेट मे दर्द है खूब कारी ॥१६२४॥ सुना दूतने सोच भारी कराये ॥ कहा भूपको हाथको जोड़ आये ॥ सुन्यो हाल वेहाल होयो नरेशं । चले देखने छोड़के राजभेशं ॥१६२५॥ कहा कूबड़ी केकईको बुझाई ॥ करो जो कहा मै अभी भूप आई ॥ कहा मातने मै करूं जो बताये ॥ महाराज हो कालके हाथ आये ॥ १६२६ ॥ कहा भूप कैसी कहो प्राणप्यारी ॥ तुझे देखने आय मै छोड़ त्यारी ॥ कहो दर्द कैसा अभी वैद लाऊं ॥ कहो पेट मालीशको आप आऊं ॥ १६२७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत वाक निज कन्तको केकयि मौन रहाय ॥ सोच चित्त पतिको भये लोचन रक्त कराय ॥ लोचन

रत्न कराय रोग मुझको नहि थाई ॥ महाराज दिन आज लाज बहुता मैं पाई ॥ सुनत वचन ततकाल हर्ष दशरथ वतलावैं ॥ क्या पाई तूं लाज कही प्रिय तीन करावैं ॥ १६२८ ॥

॥ भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥

कहा मात आगे करो तीन वाचा ॥ कहूंगी तभी बात है जीन सांचा ॥ कहा भूपने नेत्रवाचा कराये ॥ कहूंगा अभी जीन दीजे वताये ॥ १६२९ ॥ कहा कैकयीने सुनो दीनद्यालं ॥ करो पीछली बातकी आप ख्यालं ॥ जवे आप दासो खपा योध आये ॥ सबै गातमे वाणकी चोट खाये ॥ १६३० ॥ किया खूब सेवा भयो रोग दूरं ॥ कहा आप देमै वरं भूमि शूरं ॥ भयो फेर ध्रीवां मखं वीच भारी ॥ तिसे जीमते थे टरी भूप टरी ॥ १६३१ ॥ कहा फेर देमे वरं रीझ मोको ॥ कहा पांणिकी जोड़की बात तोको ॥ अभी नाहि ली हौं सुनौ दीन द्यालं ॥ पड़े काज मांगों रखो आप ख्यालं ॥ १६३२ ॥ कहा आप मोको अवे काज होई ॥ तवे आप लीजे चहो आप जोई ॥ पड़ा काज मोको वरं आज दीजे ॥ कहा भूप मांगो चहो जीन लीजे ॥ १६३३ ॥ खुसी मात हो व्योमकी साथ नाई ॥ कहा देव साखी रहो सर्व थाई ॥ सुभो भूप देने

वरकी कह्योहै ॥ अभी जाय मागूं सखाओ कग्गो है ॥ १६३४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

असमथ माता लिखको भये कन्तको आय ॥ प्रथममनः वरके विषे राज भरत यह पाय ॥ राज भरत यह पाय और द्वितिया वर पावैं ॥ तामे सौतिन पुत्र कन्त काननमो जावैं ॥ वर्ष चतुर्द्दश बाद राम अट वीसे आई ॥ करैं अवधिमे राज माथमे छत्र धराई ॥ १६३५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत वचन भूभुज भय पाये ॥ गिरे भूम अवनी तड़फाये ॥ कछुक देरमे होश सम्हाली ॥ देवे भूप नारको गाली ॥१६३६॥ दुष्ट क्रूड़ क्या बाक अलाई ॥ तोको लाज कछुक नहि आई ॥ क्या तुझको जगमे सब भाषैं ॥ अयश लोक लोचन तव आखैं ॥ १६३७ ॥ कवन कुबुद्धि तोर करवाई ॥ स्वामी वधका कौन उपाई ॥ छिन भर सुतवर देख न पावैं ॥ ताते मै निज प्राण तजावैं ॥ १६३८॥ डसा मुझे सर्पिन सम आई ॥ कौन दुष्ट तुझको शिखलाई ॥ ताका मुझको नाम बतावैं ॥ धरि ताको यम लोक पठावैं ॥१६३९॥ शुन राणी तब मौन रहाई ॥ पुन भुनता भाषैं समुझाई ॥

पैदा त्रेतायुग मे जोई ॥ जीवै अयुत वर्ष नर सोई ॥ १६४० ॥ नवम हजार वर्ष मे पाई ॥ और सहस्रवर्ष परमाई ॥ काहि अकाल मृत्यु करवावैं ॥ और लेहु चितमै जो भावैं ॥ १६४१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन स्वामीके वचनको केकयि कोप कराय ॥ बादलकी सम गर्जती भयो कन्तको आय ॥ भयो कन्तको आय प्रथम वर दैन कहाये ॥ अब काहेको कन्त आप कायर हो आये ॥ सत्य भ्रष्ट जो करै अन्त सो नर्क सिधावैं ॥ पालन करते जौन स्वर्ग भूभृत सो जावैं ॥ १६४२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताका प्रभो नजीर बताई ॥ देवै मै तव धर्म्म बचाई ॥ भूप ययाती नाम कहावैं ॥ शुक्र सुताको व्याह करावैं ॥ १६४३ ॥ जौतुकमे दासी सो पाई ॥ शर्म्मिष्ठा ताका नाम हराई ॥ सो दासी भूभुजसे आये ॥ दान बोल कछु सत्य कराये ॥ १६४४ ॥ जब भुनताने परण कराई ॥ मांग्यो पुत्र दान तब दाई ॥ तब नरेश मन कीन विचारा ॥ जो याको देवैं धिधकारा ॥ १६४५ ॥ धर्म्म नष्ट मेरो होजाई ॥ मुझसे पहिले सत्य कराई ॥ अस विचार ताको वर दीना ॥ दासी

बोल मृषा नहिं कीना ॥ १६४६ ॥ और नजीर सुनो चितलाई ॥ जाते तव स्वामी भ्रम जाई ॥ शीवी नामक भूप रहावैं ॥ तिनसे ब्राह्मण सत्य करावैं ॥ १६४७ ॥ जब नरेन्द्रने परण कराये ॥ तब लोचन मांगा द्विज आये ॥ ताको नरपति दान कराई ॥ ताते स्वर्गवास वह पाई ॥ १६४८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

इक्ष्वाकू राजा रहे पुर्व्व पुरुष तव राय ॥ पिता सत्यको मानसो अवरज राज कराय ॥ अवरज राज कराय सिन्धुने सत्य कराये ॥ ताते प्रथवी कन्त आज तव नाहिं डुबाये ॥ भये ख्वालसासिंह कहैं राणी समुझाई ॥ आप काहि करि सत्य धर्म्मको त्याग कराई ॥ १६४९ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीका अनुज एवं पत्नी सहित बनगमनोद्योग ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन राणीके छन्दको भूप गिरे तड़फाय ॥ मानो नागिन कोप करि डस्यो हृदे मो आय ॥ डस्यो हृदेमो

आय मृत्यु सम भूप रहाये॥ प्रात होत सब भूप भूपको याद कराये॥ गुर वशिष्ठ घबराय सारथीको बुलवाई॥ कह्यो हाल सब कहो वेग भूभृतको जाई॥ १६५० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब सुमन्त्र प्रस्थान कराये॥ कैकयिके सद्मनमो आये॥ देख्यो तहां भूपको जाई॥ शव सम अवनी शयन कराई॥१६५१॥ तब सुमन्त्र मनमो भय पाये॥ राणीसे पूछैं कलपाये॥ क्या कारण शय्या तज माई॥ भूप भूमिमे शयन कराई॥१६५२॥ भणै मात तब कोप कराये॥ पूछो आप भूपसे जाये॥ तब सुमन्त्र भूभृत से आई॥ करि क्रन्दन पूंछैं कलपाई॥ १६५३॥ भूप अचेत न भाष सकावैं॥ तब सुमन्त्र चितकार करावैं॥ तब राणी बोलैं झट आई॥ क्यों नाहक तूं शोर मचाई॥ १६५४॥ वर देने पण भूप कहाये॥ मागा तबन गतो कल आये॥ ताते यतनो स्वांग कराई॥ सोमै कन्त भूमिमे जाई॥ १६५५॥ ले झट रामचन्द्रको आओ॥ वर मेरो मुझको दिलवाओ॥ कहा सारथी माथ निवाई॥ क्या वर मुझको देहु बताई॥ १६५६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब राणी नाको भणै रामचन्द्रको लाव॥ क्या

वर मांगा कल्लसे सब सुनने तव पाव ॥ सब शुनने तव पाव मारथी प्यान कराये ॥ रामचन्द्रको हाल सर्ब्ब वोना समुझाये ॥ शुन राघव घबड़ाय शीघ्र प्रस्थान कराई ॥ वीमाती घर जाय देख चितमो भय पाई ॥ १६५७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पाणिजोड़ पूछैं रघुराई ॥ सत्य वचन बोलीगी माई ॥ जनक काहि को शेज तजाये ॥ कौना शयन भूमिमे आये ॥ १६५८ ॥ तव राणी बोलै समुझाई ॥ वर देने पख भूप कहाई ॥ तीन गतो काल मागा आये ॥ ताते यतनो रङ्ग मचाये ॥१६५९॥ तव रघुपति भाखैं मुसकाई ॥ क्या मांग्यो बोलो झट माई ॥ जो काछु मुझसे होन सकाये ॥ सो आज्ञा तव देखुं बजाये ॥ १६६० ॥ मात जनकको माफ करावैं ॥ तिनका वर मुझसे पख पावैं ॥ शुन राणी मन मे हरषाई ॥ लोक लाज सब दूर कराई ॥ १६६१ ॥ ताको दोष काछू नहि दीजै ॥ हुकुम अकाल पुरुषका लीजै ॥ शारद घटमे वास कराई ॥ निर्जर हेतु अनर्थ मचाई ॥ १६६२ ॥ भखे मात आत्मजको आये ॥ प्रथम भूप वर देन कहाये ॥ तामे राज भरत यह पावैं ॥ पुन द्वितीय वर देन कहावैं ॥ १६६३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जामे सुत वर आयके करो विपिनमो वास ॥ वर्ष चतुर्द्दश काटके पुन आवो मम पास ॥ पुन आवो मम पास राज अपनो यह पावो ॥ शिरमे छत्र धराय विश्वमे नाम रखाओ ॥ शुनत वचन रघुनाथ भये पदमो शिरनाई ॥ मुझको है मञ्जूर मात जो हुकुम कराई ॥ १६६४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन राणी मनमे हरषावें ॥ देख प्रभो प्रस्थान करावें ॥ निज जननीके सद्मन आये ॥ पाणिजोड़ सब हाल जनाये ॥ १६६५ ॥ शुनके मर्म्म प्रसू घबड़ाई ॥ रोवें हाहाकार कराई ॥ क्या अनर्थ कैकयी करावें ॥ राज छोर कानन पठवावें ॥ १६६६ ॥ क्या अपराध पुत्रका पाई ॥ जाते यतनो अशुभ कराई ॥ ताको लाज कछू नहि आयो ॥ अर्थ हेतु वन पुत्र पठायो ॥ १६६७ ॥ असभय सब राणी कलपावें ॥ कराघात उर माथ करावें ॥ देख राम मनमे घबड़ाये ॥ कौन प्रबोध जोड़कर आये ॥ १६६८ ॥ माताको कछु दोष न दीजे ॥ आज्ञा निरङ्कारका लीजे ॥ जो विधिने माथे लिखि दीना ॥ सो कारज माता मम कीना ॥ १६६९ ॥ प्रथम सत्य जब जनक कराये ॥ तब माता

माता बर पाये ॥ पुत्र श्रेष्ठ जानो जग सोई ॥ जनक सत्य पाले जो कोई ॥ १६७० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब राणी सुतको भयो जोन जनक बश नार ॥ ताका सत्य न मानिये बोलैं नीत बिचार ॥ बोलैं नीत बिचार सुनत लक्ष्मण हरषाये ॥ सत्य वचन तब मात बाप जो नीत बताये ॥ तब ईश्वर करजोड़ प्रभु को बिहस चलावैं ॥ कैसहु होवे जनक पुत्रको इष्ट कहावैं ॥ १६७१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कौशल्या सुन मौन रहायं ॥ सीताकी सखन हरि आयं ॥ हाल सर्व्व बोले समुझाई ॥ पिता मुझे बन-बास कराई ॥ १६७२ ॥ वर्ष चतुर्द्दश वास करावैं ॥ पुन घर आय राज यह पावैं ॥ जब तक आप मुझे नहि पाओ ॥ तब तक शशकी सेव कराओ ॥ १६७३ ॥ सुन सीता मनमे भय पाई ॥ चरण पकड़ भाषै कलपाई ॥ जावो कान्त विपिन मे जावैं ॥ सो क्या ले घरबार करावैं ॥ १६७४ ॥ मै भी चलौं साथ रघुराई ॥ तब ईश्वर बोलैं समुझाई ॥ काननमे बहुता दुख पावैं ॥ कीहरि भालु देखि घबड़ावैं ॥ १६७५ ॥ कुश आसनमे शयन कराई ॥ कन्द मूल भोजनको

पाई ॥ तातें तन दुर्ब्बल हो जाये ॥ बन कण्टक पद पद्म खाये ॥ १६७६ ॥ तातें घरमें वास करावें ॥ करि सेवा भगका सुख पावें ॥ शुनत बचन सीता कलपाई ॥ जोड़पाणि पुन भाष शुनाई ॥ १६७७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कष्ट कोट आनन्द है कन्त रहैं जो सङ्ग ॥ नष्ट कोट आनन्द है कन्त सङ्ग जो भङ्ग ॥ कन्त सङ्ग जो भङ्ग प्रभो शुनके हरषाये ॥ लक्ष्मणको चुमकार नाथ बोलें समुझाये ॥ करि सेवा नित मात तातका शोक मिटावें ॥ वर्ष चतुर्द्दश बाद भ्रात मुझको भी पावें ॥१६८७॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत बचन लक्ष्मण घबड़ाये ॥ करि क्रन्दन बोलें कलपाये ॥ कवन दोष मैं नाथ करायं ॥ जाते सेवक साथ तजायं ॥ १६७८ ॥ तब ईश्वर भाषें मुशकाई ॥ तुम हौ अधिक प्राणते भाई ॥ कष्ट कठोर मिलें बन जाये ॥ तातें सद्मन रहन कहाये ॥१६८०॥ तब अवरज करजोड़ सुनावैं ॥ तब दर्शन कोटन सुख पावैं ॥ शुनत वाक राघव हरषाये ॥ बोलें सीताको पुन आये ॥ १६८१ ॥ जो प्यारी मम साथ सिधावैं ॥ पट भूषण उत्तम तजि आवैं ॥ शुन अवनी जा अति हरषाई ॥ पट भूषण उत्तम तजि

भाई ॥ १६८२ ॥ तब लक्ष्मणको नाथ बतावैं ॥ पुन पुन धनुष बाण ले धावैं ॥ शुन शवियस मनमैं हरषाये ॥ पुन पुन चाप बाण ले धाये ॥ १६८३ ॥ तब ईश्वर पुन ताहि बताई ॥ भूषण वास विक्त मम भाई ॥ सब ब्राह्मणको दान करावैं ॥ और दरिद्र जवन घर आवैं ॥ १६८४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ।

शुन ईश्वरके वचनको श्रवर खोल भण्डार ॥ दीना सर्व्व लुटायके होयो जय जयकार ॥ होयो जय जय कार धनी निरधन हो धाये ॥ विप्र नाम त्रयजटा दान लैने शुन आये ॥ भयो खालसासिंह अर्थ लोभी हरषावैं ॥ करि करि हाहाकार शन्त सज्जन कलपावैं ॥ १६८५ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीका सभ्राता पत्नी वनयात्रा ।

॥ झूलना छन्द ॥

कहा चेतको पायके भूपने प्राण प्यारी मुझे जिंदगी दान दीजे ॥ दिया मैं तुझे पादशाही खुशी

हो बुला अंगजं राजको आप कीजै ॥ रहै राम आवास मे जानकी ले कहा आप मेरा यही मान लीजै ॥ सुना केकयीने खफा हो कहा आप भी जीभको काटकी फेंक दीजै ॥ १६८६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जो मुखते बोल्यो मुझे दैनेको वरदान ॥ सो रसना को काटको देहु मुझे मतिमान ॥ देहु मुझे मतिमान थूंक अथवा पति चाटौ ॥ तौ कीना मे माफ कहो कीना मे घाटो ॥ सुनत मूरछा खाय भूप धरणीमे लोटैं ॥ मानहु उरको जाय शरासनते शर चोटैं ॥ १६८७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अब नरेन्द्र चेतन पुन पाये ॥ पाणिजोड़ बोलैं समुझाये ॥ मत मेरो अपमान कराओ ॥ कृपादृष्टि करि प्राण बचाओ ॥ १६८८ ॥ जो जो खबर मोर यह पावैं ॥ सो दाराबश नाम रखावैं ॥ यह अख्यात मोर मत कीजै ॥ राजपाट दौलत सब लीजै ॥१६८६॥ केवल घरमे राम रहावैं ॥ जा मे धर्म्म कर्म्म बच आवैं ॥ इसमे नहि होवे तव हानी ॥ कहे विप्र मुनिको सनमानी ॥ १६६० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन रानी पतिको भये मनमे कोप कराय ॥ क्यों वर दैनेको कहा कन्त कुमगको खाय ॥ कन्त कुमगको खाय धर्मको त्याग करावैं ॥ अब होवै यमदण्ड बिघ्न नहि जाय बचावैं ॥ धर्म राजकी सभा धर्मपति होत सहाई ॥ सुत पतको अग कन्त वहां कछुकाज न आई ॥ १६८१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

धर्म फांस मे भूप बंधाये ॥ ताते दण्ड न करन सकाये ॥ करि क्रन्दन लोटैं तड़फाई ॥ धनविक्रम कछु काज न आई ॥ १६८२ ॥ सबरानीको भूप बुलाये ॥ बैठी घेर चहूं दिस आये ॥ महाराज शोभा अस पावै ॥ जस तारा मधिचन्द्र लखावैं ॥१६८३॥ रोमैं हाहाकार कराई ॥ जस वर्षै बादल गरजाई ॥ नारायण घर बार तजाये ॥ ले अवरज पतनीको धाये ॥ १६८४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

देख जानकी रामको पुरवासी सब आय ॥ और विमली भूप सब हाहाकार कराय ॥ हाहाकार कराय गाल रानीको देवैं ॥ सुनि निन्दा रघुनाथ चहु सीता करि लेवैं ॥ विदा होनको हेतु पिताकी

निकट सिधाये ॥ कीना हाहाकार देख माता गण आये ॥ १६६५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पाणिजोड़ दशरथको जाई ॥ करि क्रन्दन बोलैं रघुराई ॥ जनक निदेश मुझे अब दीजै ॥ काननवास करौं शुन लीजै ॥१६६६॥ यद्यपि तनमे प्राण रहाये ॥ तव दर्शन करि हौं पुन आये ॥ जननीको जिन आप सतावैं ॥ कर्म्म लिखा अपनो मै पावैं ॥ १६६७ ॥ हैं सुत श्रेष्ठ विश्वमै सोई ॥ पालै सत्य जनकका जोई ॥ शुनत वचन भूभुज कलपाई ॥ धरि प्रभुको निजकण्ठ लगाई ॥ १६६८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

करि क्रन्दन भूभृत भणै शुनौ पुत्र चितलाय ॥ अब किनका दर्शन करौ प्राण साथ तव जाय ॥ प्राण साथ तव जाय शोक बहुता मै पायें ॥ काको कछु नहि दोष विप्रका शाप सताये ॥ मुनि अन्धकका पुत्र तात मै नष्ट कराई ॥ ताको पहुंच्यो शाप आज मुझको यह आई ॥ १६६९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन वैकुण्ठ कन्त कलपावैं ॥ पाणिजोड़ पुन भाष शुनावैं ॥ कर्म्म रेख टारे नहि जाई ॥ कीजे

चाहि ताखु चतुराई ॥ १७०० ॥ पिताशोक जिन आप करावैं ॥ तब बिन सृष्टि नष्ट हो जावैं ॥ तब महीप हरिको बतलायं ॥ जहां मुनी सब वास करायं ॥१७०१॥ तहां रहो सुतवर तुम जाई ॥ जो चाहो धन लेहु मंगाई ॥ सुनत वचन राणी घबड़ाये ॥ बोले कर्कश वचन चलाये ॥ १७०२ ॥ राज भरतको दान करावैं ॥ अब क्या रामचन्द्र मंगवावैं ॥ पाणिजोड़ बोलैं रघुराई ॥ मै कछु मात न लेहु मंगाई ॥ १७०३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कछ कफनी शर चाप लैं मात करैं प्रस्थान ॥ और कछू लेवै नहीं कीना सत्य बखान ॥ कीना सत्य बखान सुनत राणी हरषाई ॥ कछ कफनी मगवाय पुत्र पखको पहिराई ॥ देख भूप करि कोप नारको गर्ज्जं चलाये ॥ कीना वर्ज्जन तोहि भरतको त्याग कराये ॥ १७०४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तपस्विका हरि वेश धराई ॥ कह्यो प्रणाम जनक को जाई ॥ लक्ष्मण सीता साथ निवावैं ॥ कलप्र भूप आशीस करावैं ॥ १७०५ ॥ पुन ईश्वर जननी को जाई ॥ करि क्रन्दन पदमै शिरनाई ॥ लक्ष्मण सीता साथ निवाये ॥ कौशल्या कल्याण चलाये ॥ १७०६ ॥

भये प्रभो आज्ञा तव पावें ॥ कर्म भोग दुख करि पावें ॥ सेवा करो जननकी माई ॥ प्राण रहे मिलि हौं पुन आई ॥ १७०७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन रघुपति वचनको कौशल्या कलपाय ॥ ले करि गोदीमो भयो सुनो पुत्र चितलाय ॥ सुनो पुत्र चितलाय पुत्रसम अवरज भाई ॥ करि हो रक्षा खूब कष्ट जाते नहि पाई ॥ सुनत वचन रघुनाथ वाक मञ्जूर कराये ॥ तब सीता को भयो मात कौशल्या आये ॥ १७०८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मात बाप जिन शोक करावें ॥ स्वामी चरण देख हरखावें ॥ निरधन क्या कुत्सित् पति होई ॥ तो भी परम गुरु है सोई ॥ १७०९ ॥ सुन सीता मन माहिं लजाई ॥ सुमित्र सुता पद मे शिरनाई ॥ ले गोदी राणी कलपावें ॥ बार बार शिर चूंम भलावें ॥१७१०॥ सेवा करो कन्तको माई ॥ मिलि हो वेग सुभे पुन पाई ॥ कैकयि विन अपराध सतावें ॥ सुनत वचन ईश्वर समुझावें ॥ १७११ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

क्यों माता क्रन्दन करो कर्म लिखामें पाय ॥

दोष काहु नहि दीजिये विधि ने दयो बनाय ॥ विधि ने दयो बनाय सुनत राणी कलपावैं ॥ ले हरिको निज गोद पुत्र निजको समुझावैं ॥ अनघ तुम्हारे राम आनको मात रहाई ॥ करि हौ सेवा खूब पुत्र भीतर बन आई ॥ १०१२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन लक्ष्मण मञ्जूर कराये ॥ तब ईश्वर पदमें शिरनाये ॥ राणी आशीर्वाद कराई ॥ भेंटें सर्व्व प्रसुसे आई ॥ १०१३ ॥ करि प्रणाम ईश्वर बतलावैं ॥ मुझको शासन मात करावैं ॥ ले ले गोद प्रसू सब धाई ॥ शिर चुम्बन करि कलप बलाई ॥ १०१४ ॥ मिलि हौ शीघ्र पुत्र घर आये ॥ करैं प्रबोध प्रभो समुझाये ॥ कौशल्यिके पदमें शिरनाई ॥ भयो प्रभो शासन दे माई ॥ १०१५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जो मेरो अपराध है क्षमा करौगी माय ॥ वर्ष चतुर्दश काटके पद भेटैं तब आय ॥ पद भेटैं तब आय सुनत राणी हरषाई ॥ करि क्रन्दन नरनाथ भयें प्रभुको समुझाई ॥ मम शासन कछु मान और सुत बर यह कीजे ॥ चढ़ि स्यन्दन प्रस्थान नेव वासर तक कीजे ॥ १०१६ ॥

॥ पद्धाकुलक छन्द ॥

गुण ईश्वर मनमें कलपाये ॥ कीना अङ्गीकार कहाये ॥ चढ़ि स्यन्दन बैठे रघुराई ॥ वाम जानकी दक्षिण भाई ॥१७१७॥ घेरो नगर लोग सब आये ॥ और मित्र जो कुटुम रहाये ॥ सबको प्रभो भयो समुझाई ॥ मिलि हौं शीघ्र तात मे आई ॥१७१८॥ करि क्रन्दन सब लोग अलावैं ॥ मैं भी साथ नाथ तव जावैं ॥ भयो प्रभो सब को समुझाई ॥ करैं भरत रक्षा तव आई ॥ १७१९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दै दै कोट प्रबोधको भयो प्रभो समुझाय ॥ कोय न तिनके वाकको अङ्गीकार कराय ॥ अङ्गीकार कराय नाथ चितमो भय पाये ॥ दीना स्यन्दन हांक लोग दौड़े तड़फाये । गिरत परत सब लोग आपनो चेत हराई ॥ सरित तामसा तीर राव होवत प्रभु आई ॥ १७२० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मात पिता घरमें कलपावैं ॥ और बन्धु जो कुटुम रहावैं ॥ नगर लोग व्याकुल हो आये ॥ भोजन निद्रा त्याग कराये ॥ १७२१ ॥ दशरथको निन्दै सब कोई ॥ हो दारावश आत्मज खोई ॥ निरख विकल

औसर आ पाई ॥ कन्त चरण धरि माथ लगाई ॥ १७२२ ॥ भणे भूप तिनको धमकाये ॥ क्यों स्वर्ग तन मोर कराये ॥ दुष्ट दूर मति तुगड दिखाओ ॥ याका दगड भरतते पाओ ॥ १७२३ ॥

॥ कुगडलिया छन्द ॥

जो नारी स्वामी हते परम पातकी होय ॥ आवत कोटन दुख सहै अन्त नरकमै सोय ॥ अन्त नरकमै सोय सुनत रानी घबड़ाई ॥ लै पतनी गण भूप गर्व्व प्रस्थान कराई ॥ कोशल जाकी भवन वास कोना नृप आये ॥ लै कलङ्क विन आज मात रोवैं घबड़ाये ॥ १७२४ ॥

॥ झूलना छन्द ॥

वहां तामसा तीर लै जानकी वीर होयो खुशी नाथ वासा कराये ॥ रहे यामिनी प्रात लै कामिनी भ्रात पाये नदी पार माधो हंसाये ॥ करैं रामकी पाद का अंत पूजा दयो कंद मूलं सबे जोन लाये ॥ भणे खानसासिंह लीला अपारं कहा प्रेम गालं यथा वेद गाये ॥ १७२५ ॥

अथ सुमन्त्र सारथी अयोध्यामे श्रीरामचन्द्रजीके वनवासका समाचार दिया ताते राजा दशरथका मृत्यु ।

॥ द्रुमल छन्द ॥

चढ़ियान पयान कह्यो हरिने नरनार वहां लखि रोवत हैं ॥ रथ कोशल देश गयो दिन शेष सुमंत्र खड़े मुख धोवत हैं ॥ प्रभु भोजन कंद कर्यो सबका कुश आसन आप बिछावत हैं ॥ अब अंग मिला निज अंग हरी लखि शोकनको मन मोवत हैं ॥१०२६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अवधज वाम समान को देखें चौको रात ॥ पुन स्यन्दन पर निहचै चले शीत प्रभु प्रात ॥ चले शीन प्रभु प्रात रवी पश्चिमको आये ॥ तब शृङ्गवेर ग्राम प्रभो पहुंचे हैं जाये ॥ वहां गुहक चण्डाल गावके मिल रहावें ॥ सुनत वात वे हाल होय कैसेको आवें ॥ १०२७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुखित परस्पर मिल हरसाये ॥ दुख अपनो

अपनो सब गावै ॥ सुन गुरु प्रभु का दुख भाई ॥ रोवैं हाहाकार कराई ॥ १०१८ ॥ जे हरिको गुरु निकट टिकावै ॥ भोजन कन्द मूल करवावै ॥ कहूं बाग तिनका सुबस सिधावों ॥ यन्य बढ़नती अधिक डरावों ॥ १०१९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रजनीकर आकाशमे प्रगट भयो जिहकाल ॥ जे आयो जा बाग मे मदन कौन गोपाल ॥ मदन कौन गोपाल सुता सबने घर आयो ॥ जे घर मे अरनाय अजर निज वास रहायो ॥ अस्त सोम होनको दिवाकर पहुंचे आवे ॥ तब सुमन्तको भये प्रभो अतिसय कलपावे ॥ १०२० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अगल दिवस कोचन फरमाये ॥ सो मे रथ ऊपर चढ़ि आवै ॥ अब स्यन्दन के अवधि सिधायो ॥ भूभृतको प्रणिपात जनायो ॥१०२१॥ और जनकको कहो बुझाई ॥ कर्म लिखा अपनो मे पाई ॥ माता को जिन आप दिखावैं ॥ सोक छोड़ धरधार बधावैं ॥ १०२२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गर्भधारको मातको बोलो तात बुझाय ॥ नित

सेवा मम जनकका करि हैं चित्त लगाय ॥ करि हैं चित्त लगाय शोक मम त्याग करावैं ॥ वृद्ध पिता तजि आय कष्ट अति नहि पावैं ॥ औरन सबौं जो मात कहो सबको समुझाई ॥ अति रहैं प्रसन्न जनक करि हैं सो माई ॥ १७३३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

और प्रणाम कहो मम आई ॥ केकय सुता चरण शिरनाई ॥ जनक शौंप तिनको मैं आये ॥ खुश रखि हैं शुभवाक्य अलाये ॥ १७३४ ॥ और सुमन्त्र कहो समुझाई ॥ शोक त्याग करि हैं मम माई ॥ कर्म लिखा अपनो मैं आये ॥ राज भरतको देहु बुलाये ॥ १७३५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पाणिजोड़ पुन जनकको बोलो माथ निवाय ॥ भरतजको बुलवाय मम देवे तिलक कराय ॥ देवै तिलक कराय शोक मम त्याग करावैं ॥ वर्ष चतुर्दश बाद लौट मैं भी घर आवैं ॥ इष्ट बन्धु जो कुटुम कहो सबको समुझाई ॥ वर्ष चतुर्दश बाद मिलो सब से पुन आई ॥ १७३६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जिन मेरो अफशोस करावैं ॥ छोड़ शोक घरबार

बधावैं ॥ कही प्रजा सबको समुझाई ॥ मिलि कौं ताति बेग मे धाई ॥ १७३७ ॥ अबते मे बनमाहिं रहावैं ॥ तबते पालन भरत करावैं ॥ असभय भांत भात समुझाई ॥ विदा कीन ताको रघुराई ॥१७३८॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लै सुमन्त्र जब यानको घरको किया पयान ॥ तब लक्ष्मणको हरि भखे शुनो भ्रात मतिमान ॥ शुनो भ्रात मतिमान सुमन्त्र भखै गृह जाये ॥ शृङ्गबेर पुर निमट छोड़ तिनको मे धाये॥ शुनत खबर तत-काल भरत लेनेको आयें ॥ ताते गङ्गापार चित्रचित्र कूट सिधावैं ॥ १७३९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन लक्ष्मण बोलें शिरनाई ॥ चलो जहा मरजी तब भाई ॥ तब गूहक करजोड़ चलाबें ॥ यह बनमो प्रभुवास करावैं ॥ १७४० ॥ शुनि राघव करि फन्द चलाई ॥ भरत यहां उतपात मचाई ॥ तब गूहक मनमे भय पाये॥ तरणीपर प्रभुको तिषठाये ॥१७४१॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

निज करमो लै डांड़को खेवैं गूहक जाय ॥ शीघ्र पार नौका करो मनमे त्रास धराय ॥ मनमे त्रास धराय प्रभो धरणीपर धाये ॥ मिल मिल गूहक

नाथ युगल प्रणाम कराये ॥ क्रोध पाणि प्रभुनाथ मुनी कुटियाको जावैं ॥ देखत भारद्वाज दौड़ लेनेको आवैं ॥ १७४२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

विप्र देख प्रभु माथ निवाई ॥ अनुज सहित सीता शरणाई ॥ मुनिवर आशीर्वाद कराये ॥ ले प्रभुको कुटियामें आये ॥ १७४३ ॥ पाद अर्घ दे पूजन कीना ॥ कन्दमूल भोजनको दीना ॥ पाणिजोड़ मुनिवर बतलावैं ॥ जाको ध्यान पार नहि पावैं ॥ ७४४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सो कमला ले साथमें आये कमलाकन्त ॥ योग ध्यान पूरण भयो मुक्त होयंगे सन्त ॥ मुक्त होयंगे सन्त प्रभो दर्शन तव पाई ॥ कैकेयीका तपस आज मे पूर्ण कराई ॥ रहो हमारे पास कहो कारण क्या आये ॥ तब राघव करजोड़ आपनो हाल जनाये ॥ १७४५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जनक सत्यपालन वन आये ॥ बीमाती वनवास कराये ॥ अवधि निकट पूतसी सुनि राई ॥ भरत आय करि है कपटाई ॥ १७४६ ॥ चित्रकूटमें वास

करावैं ॥ जहां अन्त अचरज नहि पावैं ॥ सुनत विप्र मनमो भय पाई ॥ दीना प्रभुको बाट बताई ॥१७४७॥

॥ कवित ॥

हिम चन्द्र वास करि करत पयान हरि चलत यकात सुता धरको विकल है ॥ चरण सरोज धरि गिरत अवनीपरि देखत अनन्त पद अहथ विमल है ॥ उठत झपट करि गोपत चरण धरि लोटत तड़फ मात रोदन करत है ॥ झपट ऐविक सर जोड़त कमान पर देखत डरत खग प्राण को भगत है ॥ १७४८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जब नारायण बाण चलाये ॥ घेरा जहां काल वश आवे ॥ बाबल गिरि कैलास सिधाई ॥ पहुचा विभिषण वहां भी आई ॥ १७४९ ॥ तब कारण मनमो भय पाये ॥ पहुच्यो स्वर्गलोकमो जाये ॥ सरण गयो स्वामीका कीना ॥ दर्शन विप्र रूप को दीना ॥१७५०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुरपतिको समुझायकै भयौ प्रभोका दास ॥ बाहु टुड जयन्तको कीजे मुझको दास ॥ कीजे मुझको दास भला कामै सुरराजू ॥ मै छोड़ौं नहि ताहि चाव ईश्वरको काजू ॥ सुन ऐसिकी बात इन्द्र बोलैं

समुझाई ॥ लै वशिष्टको आप देहु राघवको जाई ॥ १७५१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जो चाहैं सो नाथ करावैं ॥ आप वलीभुज नाहि हतावैं ॥ भये वायसे नाहि खपाओं ॥ है कछु दण्ड ताहि लै आओं ॥ १७५२ ॥ बलीपुष्ट वासव सब दीना ॥ अर लोचन वसुधा हर लीना ॥ दीना नारायणको लाये ॥ कपट जान प्रभु माफ कराये ॥ १७५३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अगरज दारा साथ लै राघव किया पयान ॥ सूर्य्यसुता तट जायकै करयो मयन जल स्नान ॥ करयो मयन जल स्नान मात यमुना हरखाई ॥ घुटनेसे पर स्नान और कीना निज माई ॥ नारायण हो पार चित्र-त्रिकूट सिधाये ॥ अवधि पुरीसो आय सारथी हाल जनाये ॥ १७५४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

हाहाकार करैं सब माई ॥ और बन्धु जो कुटुम रहाई ॥ दशरथ पटक माथ कलपावैं ॥ भयें विप्रका श्राप सतावैं ॥१७५५॥ अन्धकको सुत शोक दिखाई ॥ ताते पुत्रशोक मे पाई ॥ ज्यौं मुनिवर वह प्राण तजाये ॥

त्यौं मै मह्द आज तड़फाये ॥ १७५६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दिनकर पश्चिमको गयो रजनी कर आकाश ॥ नरनारी जित जो रहे सब सोयो आवास ॥ सब सोयो आवास भूप भी शयन कराये ॥ अर्द्ध निशा जब गयो प्राण नरनाथ तजाये ॥ भयौ खालसासिंह टेर किनहुं नहि पाई ॥ प्रात भयो जिहंकाल निकट राणीगण आई ॥१७५७॥

अथ राजा दशरथका दग्ध क्रिया।

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

आय भयौ पद्‌माथ लगा मसनाथ उठी बहुता दिन आये ॥ कारण कौन कह्यो मुख मौन कहो हम लोग बड़ो भय पाये ॥ रोवत लोचन हार गये दिन सात कटे बहुता घबड़ाये ॥ केवल सोम सरूप लिये सुत शोक तज्यो तन प्राण धराये ॥ १७५८ ॥

॥ पदाकुलक छन्द ॥

शोक पाय ऐसे सब बोलैं ॥ तबहूं भूप बात नहि डोलैं ॥ तब प्रभु प्रभू सबन भय पाई ॥ जान्यो

स्वामी प्राण तजाई ॥ १७५९ ॥ कीन । हाहाकार अपारं ॥ वह्यो सरित आंसूकीधारं ॥ करैं विलाप बेन पढ़ि नाना ॥ ताते नगर लोग सब आना ॥ १७६० ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

पालन नाथ करयो पणको सुतशोक तज्यो निज प्राण तजाये ॥ छोड़ अलोश्रिर काट गये धड़ लोटत है हमरो बिललाये ॥ कंत करार करयो सुभासि निज साथ रखौं निज अंग लगाये ॥ कौन कुकाज करयो हम लोग अनाथ किये सुर लोक सिधाये ॥ १७६१॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभय राणीगण कलपावैं ॥ जस जल बिना मीन तड़फावैं ॥ निरख वशिष्ट मुनी घबड़ायं ॥ राणी सती होन सब जायं ॥ १७६२ ॥ राजभ्रष्टका कीन उपाई ॥ ताते विप्र भयो समुझाई ॥ अब कारण क्यों प्राण तजावैं ॥ भूप कछुक देखन नहि पावैं ॥ १७६३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

औरस रहते भूपका कौन करे सतकार ॥ या मे सुत को दोष है भखे वेद सुखकार ॥ भखे वेद सुख-कार सुनत राणी घवड़ाई ॥ पुत्र मोह वस होय मात पूछैं सब आई ॥ कौन करे सतकार मुनी सुभको

बतलावैं ॥ तब बोलैं मुनिराज भरत अब दाह करावैं ॥ १७६४ ॥

॥ भुयङ्ग प्रयाद छन्द ॥

धरी भूप को तेलकी बीच माई ॥ पठा दूत को गातऊं ल्योबुलाई ॥ भये राम माता अभी दीनबाला ॥ करी पीछली बातको आप ख्याला ॥१७६५॥ सुतं छोय क्याकंतकी काम आये ॥ रही तेलकी बीच बासा कराये ॥ करो मेघबाजी करको अुङ्ग आई ॥ सुतं वेद तेकालको भूप जाई ॥ १७६६ ॥ कहो नाथ के काम क्यों नाहि आये ॥ कहा वेमुनी भाल की रेख पाये ॥ रहैं कोट योद्धा नही काम आवैं ॥ रहे भागमे एकते कोट पावैं ॥ १७६७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अुन राखी गुर बचन को तेल कुण्ड बनवाय ॥ तामे शय्या डालकी पतिकोट्यो सुताय ॥ पतिकोट्यो सुताय दूत मुनिवर बुलवाये ॥ ताकी कर दे पत्र विप्र बोलैं समुझाये ॥ कहो भरतको जाय आपको भूप बुलावैं ॥ बांचत जोपी चलो देर नहि दण्ड करावैं ॥ १७६८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

और कछू नहि तिन्हैं बतावैं ॥ अुन सुत काल

श्रवण नहि पावैं ॥ जो यह कथा सुनै सुघराई ॥ करैं वास काननमो आई ॥ १७६९ ॥ सुनत वचन श्रावक समुझावैं ॥ विन कारन क्यों करि बतलावैं ॥ शोक पाय द्विज बुद्धि हराई ॥ पुन बोलैं प्रेरितको आई ॥ १७७० ॥

॥ मुरल्या छन्द ॥

सम्राट् वाहन जोड़की कर भाषते मुनिराजको ॥
क्यों कर कहूं यह बात है वह आयकी युवराजको ॥
ले पत्र अपने हाथ मै श्रावक धरो शिरताजको ॥
नाघत नदी नाला किते पहुच्यो तवै गिरिराजको ॥ १७७१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दिवस चारके बीचमे दूत गयो गिरिराज ॥ स्वप्न देख सब हालको पाय गयो युवराज ॥ पाय गयो युव-राज सुनत सब विप्र बतावैं ॥ है ब्राह्मणको दान स्वप्नका दोष कटावैं ॥ सुनत वचन युवराज दान करते घबड़ाई ॥ वाहि समय कर पत्र दूत दीना लै आई ॥ १७७२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पत्रको निरख भरत भय पाये ॥ पूछैं वीप्र निकट बुलवाये ॥ मङ्गल कहो पिताका भाई ॥ अग्रज अपर

और सब भाई ॥ १७७३ ॥ भये सुमन्त तिन्हें समुझाये ॥ सब मंत्रन गृह मैं तब आये ॥ चली कौन भूभृत बुलवाई ॥ पुर्जन अनुज और सब भाई ॥ १७७४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनि प्रेरितकी वचनको भरत चली ततकाल ॥ लोचन दिनकी बीचमें पहुंचे अवधि कृपाल ॥ पहुंचे अवधि कृपाल कोय भेंटे नहि आये ॥ निरख निरस सब लोग नजर निज लीन फिराये ॥ तब पूछें अकुलाय भरत क्या कारण भाई ॥ क्यों भेंट नहिं आय कौन अपराध कराई ॥ १७७५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत प्रजा सब कोप कराये ॥ मन मनमें निज मौन रहाये ॥ भला बुरा कछु नाहि बतावे ॥ तब रघुनाथ बड़ो दुख पावैं ॥ १७७६ ॥ पहुंचे पिता गारमें आये ॥ रोवैं सर्व भृत्य कलपाये ॥ पूछें प्रभो कहो समुझाई ॥ क्या कारण रोवो कलपाई ॥१७७७॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कहां हमारे जनक हैं कहां जेठ लघु भ्रात ॥ सो मुझको प्रथमै कहो क्यों मुझसे भय खात ॥ क्यों मुझसे भय खात भये सेवक समुझाई ॥ निज जननी

से हाल नाथ पूंछो सब आई ॥ सुनत वचन घबड़ाय प्रभु सम्भ्रमनमो पाये ॥ दै करि आशीर्वाद मात पुनि हरषाये ॥ १७७८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जनक भतीजा जननी भाई ॥ कैसो मम भगनी अब आई ॥ भयो भरत सुन कोप कराये ॥ तव परिवार देख मै आये ॥१७७९॥ तामै कोय मरयो नहि भाई ॥ कहां जनक मम हैं कित भाई ॥ क्यो पुरजन रोवैं कलपाये ॥ काहि कोय मम पास न आये ॥ १७८० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब राणी सुतको भयो शारदकी वस होय ॥ भूप छह बवराकी राजपाट ले सोय ॥ राजपाट ले सोय रामको तिलक करावैं ॥ तव हित कारण आय कूबड़ी मोहि बतावै ॥ तासे मै वर युगल कन्तसे मांगा जाये ॥ ले तव कारण राज राम कानन पठवाये ॥ १७८१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तासे भूभुज प्राण तजाई ॥ करो राज सुतवर हरषाई ॥ कुबड़ीको कछु दान करावैं ॥ तव मङ्गल सुत नित्य मनावैं ॥ १७८२ ॥ सुनत भरत गिरते घबड़ाये ॥ हाहाकार करे तड़फाये ॥ किंह कम

तिनको शोक निवारें ॥ शारद शेष कितक यश गावें ॥ १७८३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन जननीकी वचनको भये भरत कलपाय ॥ पूर्व जन्मकी मध्य मे करो पाप कछु माय ॥ करो पाप कछु माय उदर ताते तव आये ॥ करिके तूं अपराध मुझे अपमान कराये ॥ क्या करि हौं लाचार पापते मै भय पाई ॥ प्राणदान तव कौन धर्म्म जानें रघुराई ॥ १७८४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

उठे शत्रुघन कोप कराये ॥ धरगो शीश कुवड़ीका जाये ॥ धरयो पटक प्रहार करावें ॥ कर पद तोड़ दात पुन घावें ॥१७८५॥ भये भरत अचरजको जाई ॥ करो नारि हत्या जिन भाई ॥ रामचन्द्र सुन कोप करावें ॥ वर्ज्जन करे नाथ जब आवें ॥ १७८६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यह कारण सुन भ्रात मे जननीका अपकार ॥ क्षमा किया मे चित्तको कोटन बात विचार ॥ कोटन बात विचार शत्रुघन कोप तजाई ॥ दीना ताको छोड़ भगी कुजा भय पाई ॥ भरत शत्रुघन दोय राम जननी गृह जावें ॥ ले कुवड़ीको पास भरत माता बतलावें ॥१७८७।

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जाके कारण कन्त-हराये ॥ अवध कठोर विपत्ति मे पाये ॥ सो मुझको अपमान कराई ॥ कौना रहे न अङ्ग तव भाई ॥ १७८८ ॥ ऐसो कहीं देख नहि पाये ॥ जाकि कारण चोर कहाये ॥ दण्ड करे ताको सो भाई ॥ क्या विधिने मम भाल लिखाई ॥१७८९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन राणीके वचनको कुबड़ी भये रिसाय ॥ जो जाको चाहे भलो ताको तीन सताय ॥ ताको तीन सताय मुझे मम जनक बतावें ॥ सो राणी मे सत्य आज देखनको पावें ॥ आपुसमे असबोल परस्पर शोक मिटाई ॥ रांड़े रांड़ बुझाय सती जस होन न पाई ॥ १७९० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वहां भरत शत्रुघन जाये ॥ कौशल्याको माथ निवाये ॥ ले गोदी आशीस कराई ॥ बोलें रोय पुत्र को भाई ॥१७९१॥ सुत जननी मिल राज करावें ॥ राम निकट बन मोहि पठावें ॥ सुनत भरत भावें बिलखाई ॥ मम अपराध कछू नहि माई ॥ १७९२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मै सेवक रघुनाथको कपट किया हो मात ॥

तो यतको पथ आयके वास करे मम गात ॥ वास करे मम गात भूप जो प्रजा न पाले ॥ चोर पाप बड़ कबै प्रजा नृपको दे गाले ॥ परनिन्दा जो करे सुती अपनो जो गाई ॥ पर नारी धन हरण करी यह सब अघ माई ॥ १७९३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन राणी मनमें हरषाई ॥ सुतवरको बोलै समुझाई ॥ तव अपराध देख नहि पावैं ॥ निकट मृत्यु भूभुजको आवैं ॥ १७९४ ॥ ताते कानन राम पठाई ॥ अन्त प्राण कीना तब माई ॥ अब सुतवर निज शोक तजावैं ॥ मृत्यु पिता सतकार करावैं ॥ १७९५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन माताके वचनको भरत भयो कलपाय ॥ मम कारण मरते पिता कानन भ्राता जाय ॥ कानन भ्राता जाय काहि सपन मे पाये ॥ सुनत वचन ततकाल वशिष्ठ मुनी समुझाये ॥ काको कछु नहिं.दोष काहि को शोक करावैं ॥ कर्मं लिखा सो होय मेटि नहिं कोय सकावैं ॥ १७९६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

बहुभक भांत भांत समुझाई ॥ भूप निकट पहुंचे

सब पाई ॥ भरत पिताको देख अकाई ॥ कहीं सभा- बच माहि करावैं ॥१७९७॥ मातृदोष देख पितुरायं ॥ सुतको अपने मौन करायं ॥ निरख वशिष्ठ मुनी बतलावैं ॥ शोक छोड़ सतकार करावैं ॥ १७९८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब मुनिको बोलैं भरत कैसे हो सतकार ॥ ज्येष्ठ- पुत्रके सामने क्या मेरो अधिकार ॥ क्या मेरो अधिकार विप्र बोलैं समुझाई ॥ ज्येष्ठ रहैं परदेश रोग तनमो क्या पाई ॥ पिता धर्म को त्याग और मारगमो जावैं ॥ तब कनिष्ठ अधिकार ज्येष्ठ सुतका सब पावैं ॥१७९९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत भरत मनमो दुख पाये ॥ पुष्पमाल चन्दन मंगवाये ॥ अगर कपूर अतर छविकाई ॥ भूषण आदिक वस्त्र मगाई ॥ १८०० ॥ तास विमान खूब बनवाये ॥ करि अवगाहन अनक सजाये ॥ रखो विमान मध्य सुतवाई ॥ करि पिण्डा हरिनाम अलाई ॥ १८०१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ले विमानको कांधले रामनाम भवधाम ॥ कञ्चन रजत लुटावते प्रेत भूमिमे जाय ॥ प्रेत भूमिमे जाय चहे मारगमो जाये ॥ पुन पिण्डा करि राम नाम

हूँ अरंकी गावे ॥ बौवा ढोल बजाय तीर सरयूकी धाई ॥ नहिमो साग बराय चिताकी मध्य सुताई ॥ १८०२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पिण्डादान भरत पुन कीना ॥ बार पावक लै फेरी दीना ॥ वेद मन्त्र पढ़ि मंगल लगाये ॥ गोमै हाहाकार कराये ॥१८०३॥ पाव मित्र मावैं समुझाई ॥ काको जनक मरे नहि भाई ॥ घसमथ कोट कीट समुझावैं ॥ तौभी भरत न शोक हटावैं ॥ १८०४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुष्मनमो तन भूपका भस्म भयो जिहंकाल ॥ तब तिनकी घस्थी सकल नदिमो दीना डाल ॥ नदिमो दीना डाल भरत बोलैं कलपाई ॥ भ्रात कथो बनबास जनक मम प्राण तजाई ॥ क्या करि हौ घर जाय पशुकी गात खिलावैं ॥ तब कलङ्क मम मिटे सुयश जगमो मे पावैं ॥ १८०५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत बचन सब लोग चलावैं ॥ नाथ चरित्र विप्र तब गावैं ॥ तब अपराध कछू नहि भाई ॥ धुन रघुपति पति प्रीत कराई ॥ १८०६ ॥ घसमथ कोट कोट समुझाये ॥ लै सथान प्रभुको सब धाये ॥ निरख

सर्व्वं राखी कलपाई ॥ करि क्रन्दन हा कन्त भलाई ॥ १८०७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वासर दश तक भरतजी करगो क्रिया दशगात ॥ पुन: एकादश पिण्ड करि विदा कीन महपात ॥ विदा कीन महपात दिवस दिन बारको पाई ॥ षोड़श और सपिण्ड क्रिया करि पित्र मिलाई ॥ श्राद्ध कियो दश दिवस माहिं विधिपूर्व्वक कीना ॥ पश्च करी गो वस्त्र और शय्या घट दीना ॥ १८०८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

भूषण भूमिदान बहु कीना ॥ प्राशन विप्र शन्तको दीना ॥ ऋषी सर्व्वको कीन बुलाई ॥ भांत भांत भोजन करवाई ॥ १८०९ ॥ दै दक्षिणा शिर तिलक कराये ॥ दीन दुखित गृहमे जो आये ॥ सबको खूब प्रसाद छकाई ॥ दै दै वस्त्र विदा करवाई ॥ १८१० ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

कीन करै जगमो असदान करगो जस राघव प्रीत कराये ॥ दीन भये धनमान सबै गुण कौन सकै कविको कवि गाये ॥ शारद शेष गणेश दिनेश महेश सुरेश सबै थक जाये ॥ सो मतिहीन भयो कवि सिंह कहांतकसे हरिके गुण गाये ॥ १८११ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीको लानेकेवास्ते ससैन्य वन गमन और वहांसे श्रीनारायणजीका पादुका लायके नन्दीग्राममो वास किया ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

क्रिया श्राद्ध जब भूपका होय गयो अवसान ॥
पाव सिव मुनि आदि सब जौन रहे मतिमान ॥ जौन
रहे मतिमान भरतको भये बुझाई ॥ दे तुमको निज
राज जनक तब प्राण तजाई ॥ छत्रदण्डको धार पिता
का राज करावैं ॥ सुनत वचन करि कोप सर्व्वको
गर्ज्ज अलावैं ॥ १८१२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जस जननी दासी मति पाई ॥ जगमे अपनी
अयश रचाई ॥ तस मुझको तुमलोग बुझाये ॥ सर्व्व
नाश कारण मम आये ॥ १८१३ ॥ अस मुझको पुन
नाहिं बतावैं ॥ पूर्व्वजकी शिर छत्र धरावैं ॥ धर्म्मशास्त्र
बोलें जस भाई ॥ ज्येष्टपुत्र गद्दीको पाई ॥ १८१४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ऊंच नीच परजा सकल चलो हमारे साथ ॥ श्रीरघुपतिको लायके छत्र धरावैं माथ ॥ छत्र धरावैं माथ नाथ बहुरि सो आई ॥ ले करि हैं बनवास पिताका सत्य बचाई ॥ सुनत बचन सब लोग प्रभोको हर्ष चलाये ॥ धन्य धन्य तव जन्म धन्य रघुवंस जाये ॥ १८१५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तव सम भ्रात भक्त नहि कोई ॥ सुयश लोक लोचन तव होई ॥ सुनत भरत मनमे हरषाये ॥ पास मित्र सबको बुलवाये ॥ १८१६ ॥ नगर नगरमो खबर जनाई ॥ पहुंचे प्रजा सकल हरषाई ॥ चतुर गी चढ फौज सजाये ॥ गुर वशिष्ठ आदिक द्विज आये ॥ १८१७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कौशल्यादिक मात सब और प्रजा ले साथ ॥ चले भरत सब मिलि के लानेको रघुनाथ ॥ लानेको रघुनाथ पास शृङ्गवेर आये ॥ जहां प्रभोके मित्र गुहक चण्डाल रहाये ॥ निरख भीर तत्काल कटक मिल आय कराई ॥ कन्दमूल ले पाणि भेटनेको चठ आई ॥ १८१८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जहां भरत निज कटक टिकाये ॥ गूहकसे भेटनको धाये ॥ पर्णमाझ पहुंचे जब धाई ॥ भेंट परस्पर वीर कराई ॥ १८१९ ॥ गूहक भरत चरण शिर नाये ॥ नजर दौन सन्मुख जो लाये ॥ कहे भरत तिनको समुझाई ॥ तुम हो मित्र नाथके भाई ॥ १८२० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब प्रणाम लेना मुझे उचित नहीं है भ्रात ॥ कण्ठ लाय मेरो लगो शोक करो मम घात ॥ शोक करो मम घात गुहक नहिं चरण तजाई ॥ पकड़ भुजा तब भरत चावसे कण्ठ लगाई ॥ कहै गुहक करजोड़ प्रभो कारण क्या आये ॥ तब तिनको सब हाल भरत भाखि समुझाये ॥ १८२१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

रघुपतिके शिर छत्र धराई ॥ अवध राज्य पावें रघुराई ॥ कहा प्रभो मम देहु बताये ॥ कैसेको पुरजन सब आये ॥ १८२२ ॥ सुन गूहक बोले शिरनाई ॥ तब सम भक्त भ्रात नहि पाई ॥ यश तब प्रभो त्रिभुवन गाये ॥ सब भय प्रभुका हाल जनाये ॥ १८२३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जब सुमन्त्र घरको गयो नाय कहौं भय पाय ॥

तहां जाय वासा करैं जहां भरत नहिं आय ॥ जहां भरत नहिं आय कष्ट देवैं दूत आई ॥ सुन करि के यह बात वास चितसो मै पाई ॥ गङ्गाके उस पार नाथ तिनको करि आये ॥ महा विपिन के बीच प्रभो प्रस्थान कराये ॥ १८२४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनके भरत गिरे तड़फाई ॥ रोमै हाहाकार कराई ॥ धीर भयो अतिशय कलपाए ॥ वास पाय मम नाथ सिधाए ॥ १८२५ ॥ पापी अधम मोर तन जाना ॥ ताते त्याग कीन भगवाना ॥ असभये क्रन्दन भरत करावैं ॥ गूहक चरण पकड़ समुझावैं ॥१८२६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कटक सहित रघुवीरको गूहक दियो टिकाय ॥ यथा शक्ति सन्मान करि गङ्गा पार कराय ॥ गङ्गा पार कराय प्रभो प्रस्थान कराये ॥ क्रोश नयन तक जाय लौट गूहक घर आये ॥ भरद्वाज मुनि भवन निकट पहुचे जब आई ॥ कानन मे रख फौज प्रभो प्रस्थान कराई ॥ १८२७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

विप्र निकट पहुचे जब आये ॥ पाणि जोड़ पदमो शिर नाये ॥ द्विज पुङ्गव आशीस कराई ॥ पूछैं कटक

निरख भय पाई ॥ १८२८ ॥ कथा कारण बलको लै धाये ॥ भये भरत मुनिको समुझाये ॥ रघुपतिकी गिर छत्र धरावें । तिनको बहु कानन मे जावें ॥ १८२९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत भरतको बचनको मुनिवर ध्यान लगाय ॥ हाल सर्व्वको ताडको कटक सकल बुलवाय ॥ कटक सकल बुलवाय विप्र अस मन्त्र अलाई ॥ ताते लेविम कोट देव पहुचे सब धाई ॥ निरख भरतको प्रेम अमर मनमो घबड़ावें ॥ क्यो करि रावण मरे प्रभो घरमो फिर आवें ॥ १८३० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब ब्रह्मा भाखें समुझाई ॥ अस नहि करें काधी रघुराई ॥ रावण वध कारण प्रभु आये ॥ भरत निराश हीय घर जाये॥१८३१॥ शुनत अमर सब हर्ष बढ़ाई ॥ जस दरिद्र धनको बहु पाई ॥ भगे विप्र सुरको समुझाये ॥ भोजन देहु सर्व्वको लाये ॥ १८३२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कामधेनुसे वस्तु सब लै लै निर्ज्जर जाय ॥ प्रभो साथमो आय जो सबको दयो खिलाय ॥ सबको दयो खिलाय औन सपने नहि पावें ॥ भरत रामको शोक बीच गड़ काप रहावें ॥ प्रात भयो जिहं काल तीर्थ

निज लोक सिधावै ॥ निरख भरतका प्रेम भयें मुनि-
वर हरषाये ॥ १८३३ ॥

॥ पादाकुलका छन्द ॥

धन्य विश्वमो जन्म धराये ॥ शुनै चरित्र जौन
तब आये ॥ तबन कलूष गातको धोई ॥ पावै धम्मे
बाट नर सोई ॥ १८३४ ॥ चित्रकूट पावनपर आई ॥
कीना बास भरत रघुराई ॥ करी भेंट प्रभुसे तुम
जाये ॥ शुनत भरत मनमो हरषाये ॥ १८३५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जम मकुयेकी पाणिसे जलमो मछली जाय ॥
खुशी होत मनके विषै प्राणदान निज पाय ॥ प्राण
दान निज पाय खबर ईश्वरको पाई ॥ तस हो करि
आनन्द प्रभो प्रस्थान कराई ॥ देख भरतकी प्रीत मात
यमुना हरषाये ॥ अन्तरगत हो जाय पार मानुषगण
आये ॥ १८३६ ॥

॥ पद्दाकुलका छन्द ॥

चित्रकूट आवैं हरषाये ॥ निरख बलय मुनिवृन्द
हराये ॥ भये हाल रावणको आई ॥ कटक विकट
आवे रघुराई ॥१८३७॥ शुनत बचन ईश्वर घबड़ाये ॥
कुटियाके बाहर चलि आये ॥ निरख अनुजको प्रभु
हरषावैं ॥ भरत चरण धरि करि कलपावैं ॥१८३८॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रामचन्द्र तब अवरको पदसि लयो उठाय ॥ निज गलमो लपटायके आशीर्व्वाद कराय ॥ आशीर्व्वाद कराय शत्रुघन माथ निवाई ॥ तिनको भी आशीस प्रभो दे कण्ठ लगाई ॥ लक्ष्मण करो प्रणाम भरतको प्रीति लखाये ॥ दे करि आशीर्व्वाद भरत निज कण्ठ लगाये ॥ १८३९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब शत्रुघ्न लक्ष्मणके आई ॥ चरण पकड़ रोयें कलपाई ॥ लक्ष्मण आशीर्व्वाद कराये ॥ लीना अपने कण्ठ लगाये ॥१८४०॥ सीता निकट जाय पवभाई ॥ भरत शत्रु घ्न माथ निवाई ॥ भूमि सुता आशीस करावें ॥ भेटनको जननी सब आवें ॥ १८४१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सीता अवरजके सहित रामचन्द्र हरषाय ॥ धरि धरि पद सब मातके कीना वन्दन जाय ॥ कीना वन्दन जाय हर्ष जननी सब आई ॥ दै दे आशीर्व्वाद गोद लीना सब माई ॥ और सर्व्वे जो आय भेंट कीना प्रभु जाये ॥ यथायोग्य आशीस और परणाम कराये॥१८४२॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

बोलैं भरत चरण शिरनाई ॥ मै सेवक करि जो

सिवकाई ॥ छत्रदण्ड निज माथ धराये ॥ कौजे राज अवधिमो आये ॥१८४३॥ जननी जो अपराध कराई ॥ ताको माफ करौ रघुराई ॥ सुनत वचन रघुनाथ बतावैं ॥ क्यों जननी का अयश करावैं ॥ १८४४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पिता सत्य पालन करो काननमो मे आय ॥ जननीका क्या दोष है कर्म्म लिखा निज पाय ॥ कर्म्म लिखा निज पाय शोच जिन भ्रात करावैं ॥ जनक सत्यको त्याग तात क्यों करि घर आवैं ॥ सुनत वचन करजोड़ भरत भाषैं समुझाई ॥ तब बदलै बन-बास नाथ करि हौं मै आई ॥ १८४५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत वचन बोलैं रघुराई ॥ सो सब बात तको मम भाई ॥ कहो प्रथम मुझको समुझाये ॥ काहे मात पिता नहि आये ॥ १८४६ ॥ भये भरत प्रभुको शिर नाई ॥ गुरुते तवन हाल सुन भाई ॥ भये वशिष्ठ मुनी समुझाये ॥ भरत अवधि पहुचे जब आये ॥ १८४७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जननीका गुण श्रवण करि अतिशय कोप कराय ॥ यथा उचित अपमान करि कीना वर्ज्जन मास ॥ कीना

बर्जन माय लाज किकया भाई ॥ कुबडीको ले साथ रही शहमो तडफाई ॥ महाराज तब जनक शोक बहुता तब पाये ॥ कहीं राम हा राम बोल तन त्याग कराये ॥ १८४८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत बचन गुरकी रघुराई ॥ मुर्छागत हो शोभ हराई ॥ लक्ष्मण भूमिसुता घबडाये ॥ रोवैं हाराकार कराये ॥ १८४९ ॥ जब चेतन रघुपतिने पाई ॥ लोटैं धरणीमो तडफाई ॥ शोक देख प्रभुका पुरवासी ॥ रोवैं यतो सतो सन्यासी ॥ १८५० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गुरु वशिष्ठ ले गोद मे प्रभुको भये बुझाय ॥ शोक त्याग अब भूपका सुनो कथा चितलाय ॥ सुनो कथा चित लाय भूप जब प्राण तजाई ॥ तेल कुण्डके बीच दीन तिनको सुत लाई ॥ पत्र और चर भेज भरतको देश बुलाये ॥ सत्यकार वह कीन जनक तनका जलपाये ॥ १८५१ ॥

॥ पद्दाकुलक छन्द ॥

क्या तिनका मै सुयश चलावैं ॥ दीन दरिद्र धनी हो जावैं ॥ जैसा श्राद्ध भरतने कीना ॥ ऐसा दान कोयनही दीना ॥ १८५२ ॥ ब्राह्मण साधु और गृह

आये ॥ सबको भोजन भरत कराये ॥ सुनत वचन राघव कनुपाई ॥ गुरुवरसे पूछें शिरनाई ॥ १८५३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्राद्ध व्यवस्था जनकका गुरुवर देहु बताय ॥ तब वशिष्ठ प्रभुको भषे सुनौ विधी चितलाय ॥ सुनौ विधी चितलाय दिवस चौथन रघुराई ॥ मानौ जनक पशौच श्राद्ध कीजे पुन आई ॥ सुनत वचन रघुनाथ लखन सीता सलपाये ॥ फल्गू नदिकी तीर जाय करि स्नान कराये ॥ १८५४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तर्पण नाम गोत्र ले कीना ॥ कन्दमूल भोजन तजि दीना ॥ वासर ज्वर बीत्यो जब आई ॥ तब पिण्डा कीना रघुराई ॥ १८५५ ॥ शौच होय आश्रम मो आये ॥ विधि पूर्वक पितु श्राद्ध कराये ॥ कन्दमूल बनते मंगवाई ॥ ब्राह्मणको भोजन करवाई ॥१८५६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दक्षिणा कारण भरतजी भाषें प्रभुको आय ॥ जो चाहैं सो दीजिये भषे नाथ समुझाय ॥ भषे नाथ समुझाय भ्रात मै सत्य कराबे ॥ तब दौलत बन माहिं कछू नहिं लेइ मगाये ॥ सुनत वचन श्रमाय

भरत रोवैं कलपाई ॥ दक्षिणा सो दे कन्द विप्रको विदा कराई ॥ १८५७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब वशिष्ठ बोलैं समुझाये ॥ तुष्ट करी अवरजको आये ॥ भयों प्रभो मुनिको कलपाई ॥ प्राण अधिक मेरो यह भाई ॥ १८५८ ॥ भरत और मम भूमि सगीरा ॥ जानो आप सर्व्व मुनि धीरा ॥ पिता सत्य नहिं टार सकावैं ॥ दिश युगवर्ष बाद गृह जावैं ॥ १८५९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन पुर्व्वजकी वचनको भरत भये कलपाय ॥ क्योंकरि तव विन प्राणको तनमो धरि हौं भाय ॥ तनमो धरि हौं भाय भरत रोवैं अकुलाई ॥ दे करि कोट प्रबोध प्रभो तिनको समुझाई ॥ तब बोलैं करजोड़ भरत पदमो शिर नाये ॥ देहु पादुका नाथ करौं राजा मैं जाये ॥ १८६० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत वचन ईश्वर हरषाये ॥ दान आपनो खड़म कराये ॥ ले झाट मस्तक भरत लगावैं ॥ राज छत्र तब ताहि धरावैं ॥ १८६१ ॥ और चमर करते हरषाई ॥ देखैं भरत प्रीति सब भाई ॥ धन्य धन्य जगमो सब भाखैं ॥ तब ईश्वर अवरजको भाखैं ॥ १८६२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तव चरित्र यह जगतिमो श्रवन सुनैगो भाय ॥ सर्व पापते मुक्त हो स्वर्ग तश्रन चलि जाय ॥ स्वर्ग तश्रन चलि जाय श्रौर बोलैं रघुराई ॥ जननीको कटु बोल कष्ट दीजो जिन भाई ॥ सुनत वचन कलपाय भरत पदमो शिरनाये ॥ दे करि आशीर्वाद प्रभो निज कण्ठ लगाये ॥ १८६३ ॥

॥ पादाकुलका छन्द ॥

दुखी तौर मिलि मिलि युग भाई ॥ रोवैं हाहाकार कराई ॥ श्रौर बन्धु जो कुटुम रहाये । मिलि मिलि सब रोवैं कलपाये ॥१८६४॥ कौशल्या आदिक सब माई ॥ रोवत सुतको कण्ठ लगाई ॥ प्रलयकाल सम शोर मचावैं ॥ कोय न काको रोक सकावैं ॥ १८६५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ।

ज्ञानी ध्यानी धीर मति यती सती सब कोय ॥ नारायणकी प्रीतिमो पागलकी सम होय ॥ पागलकी सम होय अवधि प्रस्थान कराये ॥ नन्दीनाभक ग्राम बीच पहुंचे सब आये । भये खालसासिंह स्वर्णका तख्त बनाई ॥ तापर राखि खड़ाउं भरतजी छत्र धराई ॥ १८६६ ॥

॥ कवित ॥

वाकल वसन करि मस्तक कपर्द्द धरि अर्च्चन करत नित्य प्रेम चित्त लायकै ॥ भोजन करत मूल कन्द जल फल फूल सम्पद्को त्याग राम नाम गुण गायकै ॥ भरत करत राज कैकयी पावत लाज नाचत अमर्त्य निज स्वारथको पायकै ॥ मदनगोपाल सिंह काण्डम पूरण कीन श्रीगुरुपूरण ब्रह्म नानक मनायकै ॥ १८६७ ॥

इति खालसा कृत रामायणे द्वितीय सोपान अयोध्या काण्डमभि समाप्तः ॥

॥ एक ओंकार सति गुरु प्रसाद ॥

॥ श्रीवाहि गुरुजीकी फतै है ॥

अथ अरण्यकाण्डमभि लिख्यते ।

श्लोक ।

ओं गुरुं पुण्डरीकाक्षं ॥ पद्मनाभं सुरेश्वरं ॥ कृष्णोषेशं विघ्नहरं ॥ प्रणतोस्मि जनार्द्दनम् ॥ १८६८ ॥ सर्व्वबीजं सर्व्वदेवं ॥ सर्व्वभूतहितेरतं ॥ तारकान्तं कृपासिन्धुं ॥ प्रणतोस्मि त्रिविक्रमम् ॥ १८६९ ॥ रामकृष्णं महादेवं ॥ देवानामपिदैवतं ॥ वासुदेवं सुरश्रेष्ठं ॥ प्रणतोस्मि महाबलं ॥ १८७० ॥ गोपालं मुक्तिदातारं ॥ श्रीवत्सलाञ्छनंविधुं ॥ दामोदरं जगन्नाथं ॥ प्रणतोस्मि महाप्रभुम् ॥ १८७१ ॥ विश्वसेनं चक्रपाणिं ॥ श्रीपतिं पुरुषोत्तमम् ॥ उपेन्द्रं सृष्टिकर्त्तारं ॥ प्रणतोस्मि परात् परम् ॥ १८७२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कृपासिन्धु गुरुदेवजी कीना रचना सृष्टि ॥ दुष्ट संहारक भय हरण कीजे मुझपर दृष्टि ॥ कीजे मुझपर दृष्टि क्लेश मेरो प्रभु नाशो ॥ मन वाचक कृत

पाप घोरते मोहिं बचाओ ॥ पाणिजोड़ करि विनय करौं पदमो शिरनाये ॥ सुन करि यमको दण्ड प्रभो भूरी भय पाये ॥ १८७३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

और नाथ मुझको वर दीजै ॥ ग्रन्थ चरण्य पूर्ण यह कीजै ॥ राम कथा रचिहौं सुखदाई ॥ तोहौ घटमो होय सहाई ॥ १८७४ ॥ जो मै कग्यो कोटि अपराधू ॥ ताते नाथ करैं सब साधू ॥ विष्णु कथा सुनिको हरषावैं ॥ शमन दमनते मोहिं बचावैं ॥ १८७५ ॥ निज दुष्कृत मै देख डराये ॥ ताते प्रभु शरणागत आये ॥ कृत कलूषते नाथ बचाओ ॥ काम क्रोध षट दोष नशाओ ॥ १८७६ ॥ और प्रभो मांगौं कछु नाई ॥ सत्य नाम साधू सिव काई ॥ शीष नाय मै विनय करावैं ॥ मन वच कर्म्म पाप मम धावैं ॥ १८७७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वाहि गुरूजीकी फते फते फते दिशि चोर ॥ तव पद दर्शन कारणे सदा डिगै चितमोर ॥ सदा डिगै चित मोर तवन दुर्लभ जगमाहीं ॥ जो जो हैं तव भृत्य सदा वन्दौं तिहं पाहीं ॥ भणे खालसासिंह प्रभो पद पद्म मनाये ॥ कृपादृष्टि करि मोर देहु यम फांस कटाये ॥ १८७८ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीका अत्री मुनिके आश्रममो गमन एवं विराध निशाचर वध।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चित्रकूटके बीचमे ईश्वर कर्‌यो विचार॥ पुन अवरज लेवे मुझे तजि यामे घरबार॥ तजि यामे घरबार देख हिंसक हरषावैं॥ ताते पावन छोड़ दिशा दक्षिणको जावें॥ अस विचार रघुवीर अवर दार। लै धाये॥ सन्मुख आश्रम नाथ मुनी अत्रीको पाये॥१८७६॥

॥ भुजंगी छन्द ॥

मुनी देख पाये॥ चले छिप्र धाये॥ झुते राम जाई॥ धरें पाद भाई॥ १८८०॥ तपी लै सिधाये॥ कुटीमो टिकाये॥ मुनी नार आई॥ भयी भूमि जाई॥ १८८१॥ तुम्हे पेख मातं॥ भयो शोक पातं॥ शुनो प्रेम वाणी॥ भयो मात ज्ञानी॥ १८८२.॥ तुम्हे देख माई॥ सवे पाप धाई॥ अलङ्कार लावें॥ सियाको सजावें॥१८८३॥ दयो वास भारी॥ लयो राम नारी॥ मुनी राज धाये॥ भजे आंद लाये॥ १८८४॥ धरो राम आगे॥ बड़ो भाग जागे॥ खुशी नाथ होई॥

रुक्यो बैठ सोई ॥ १८८५ ॥ भये राम्रि चाई ॥ कुशा भूमि आई ॥ रहे नाथ सोये ॥ जगे प्रात होये ॥१८८६॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

करि मज्जन सीता जब आवैं ॥ अनुसुइया मुनि नारि पढावैं ॥ पतिवरता नारी जग जोई ॥ ताको निरख घात अघ होई ॥ १८८७ ॥ बड़ो भाग मेरो जग माहीं ॥ देख्यो चरण तीर सुख दाईं ॥ सुनत वचन सीता हरषावैं ॥ पाणिजोड़ पदमो शिर नावैं ॥ १८८८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्नान दान करिके प्रभो द्विजको करें प्रणाम ॥ पश्चो आशीर्व्वाद दे भये दुर्व्वादल श्याम ॥ भये दुर्व्वादल श्याम निशाचरको यह देशा ॥ सदा उपद्रव करें और देवैं बहु क्लेशा ॥ ताते दण्डक गहन बीच प्रभु वास करावैं ॥ सुनत वचन करजोड़ नाथ दण्डक बन जावैं ॥१८८९॥

॥ कामनी मोहना छन्द ॥

नाथ वो जानकी बीचमो राखचे ॥ भूमिको देव पादेखको भाखचे ॥ शिश वांधे भयो गात है सोहना ॥ कामको जीतको रूप है मोहना ॥ १८९० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कछुक दूर शिशव जब आये ॥ अनुप अकस्मात्

भू पाये ॥ बिकट पहार बिप्र सुरद्रोही ॥ नाम बिराध काल सुत सोई ॥ १८९१ ॥ करि तर्ज्जन बहुता बह आये ॥ निरख प्रभो शरचाप लगाये ॥ लग्यो बाण ऐचिक सो जाई ॥ पड़ो मही चासर तड़फाई ॥१८९२॥ परसत चरण कर्बुर अघ घाये ॥ भयो सुजान करजोड़ चलाये ॥ प्रभो पवित्र करयो तुम आजू ॥ कीना शरण तोर सुर राजू ॥ १८९३ ॥ सुनो प्रभो मम पूर्वकहानी ॥ जाते योनी यातु धरानी ॥ नर वाहन घर नाथ रहाये ॥ नाम किशोर बड़ो सुख पाये ॥ १८९४ ॥ धनद तुष्ट मुझपर पहुताई ॥ पहुच्यो पश्चिम ओर जब आई ॥ पाये किन्नरेशकी पासा ॥ ले दारा जब करत तमाशा ॥ १८९५ ॥ निरख कुबेर शाप झट दीना ॥ ताते यातुधान तन लीना ॥ प्रभो प्राण तेरो जब जाई ॥ तनसो पावन देह लगाई ॥ १८९६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चरणभय कौशल रामको कीन त्याग निज प्राण ॥ है दसुनस सन्धाय तबै कीना ताको दाण ॥ कीना ताको दाण देख बिष्णू घर आये ॥ पुष्पक पर तौहाय स्वर्ग प्रस्थान कराये ॥ भये शाकसासिंह प्रभोपदमो शिर नाई ॥ प्रात गोमती पार नाथ आये हरषाई ॥१८९७॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीके दर्शनते शरभङ्ग मुनिका मुक्ति।

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

द्वादश योजन नाथ गये तब देख शचीपतिको हरि पाये ॥ धावतहैं शरभंग निकेतन पेखि रघूपति नाहिं सिधाये ॥ वासव आय भयो मुनिको प्रभु आवत हैं नररूप धराये ॥ दान करौ तिनको यह बाण शरासन आप मुनौ हरषाये ॥ १८९८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभया लिखधर्म झट धाये ॥ पहुंचे राम विप्र घर आये ॥ विप्र विलोक हर्ष उठ आवैं ॥ अवर सहित ईश्वर शिर नावैं ॥१८९९॥ आशीर्ब्बाद महीसुर दीना ॥ पाणिजोड़ नुति मुनि पुन कीना ॥ रहे अनाथ नाथ अब पाये ॥ जाको नित भव ध्यान लगाये ॥ १९०० ॥ तप मै दान समाशत कीना ॥ लीजे, आप जिष्णु शर दीना ॥ और नाथ शुनिये मम वाणी ॥ धरगो प्राण शुनि तोर कहाणी ॥ १९०१ ॥ ब्रह्मलोक मै जात रहाये ॥ तब पद कारण गात रहाये ॥ अति प्राचीन भयो तन मेरो ॥ करि हौं त्याग निरख पद तेरो ॥१९०२॥ अवर सहित सीता रघुराई ॥ मम सन्मुख

तीर्थी प्रभु आई ॥ सुनत वचन कौशल हरषाये ॥ लै दारानुज सन्मुख आये ॥ १९०३ ॥ दर्भ तपीवर कुण्ड बनाई ॥ योग अनल दे आछ जलाई ॥ राम राम शुभनाम उचारा ॥ वायू सखा वीच तन डारा ॥ १९०४ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

देह अङ्गार भयो द्विजको पुन दूसर देह धरयो मुनिराई ॥ ध्यान करयो रथमो चढिकै रटि नाम सियापतिको सुखदाई ॥ चामर फेर वजा बहु वाजन फूलन की वरषा वरषाई ॥ जोड़ भुजादल सिंह भणै सति नाम जपो यमदंड मजाई ॥ १९०५ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीका वन वनमो मुनी लोगोंके आश्रममे भ्रमण अरु दूल्लल वतापो सम्वाद और पञ्चवटी वनमो सुपनखाका कर्ण नासिका छेदन ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वन वनकी वासी सकल आवत ऋषि मुनि देव ॥

यथा अचित गोलोकपति कीना सबका सेव ॥ कीना सबका सेव विप्र भाषैं अलपाई ॥ होयो जप तप नष्ट असुर मुनिको धरि खाई ॥ सुनत बचन करजोड़ प्रभो बोलैं समुझाये ॥ करौं निशाचर हीन मही मे परण कराये ॥ १६०६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभण रघुपति उठि करि धाये ॥ काननमो मुनि मुनि गृह आये ॥ कहूं मास पक्ष मास वितायो ॥ कहूं वेद ऋतु मास कटायो ॥ १६०७ ॥ मास दोष वत्सर कहूं वासा ॥ यह विधि दिशा अब्द अब नाशा ॥ सुतीक्षण मुनि भवन सिधाये ॥ विप्र विलोक जोड़ कर आये ॥ १६०८ ॥

॥ मेघ छन्द ॥

पाणिको जोडकै भूमिमे देवनै रामको आयकै प्रेमसों भाषणे ॥ भाग मेरो वड़ो आप कीना महाराज आये कुटीदासको राखणे ॥ नाथ होवैं खुशी दीनकै वाकते भेष धारयो भलो रामने सोहणा ॥ देखकै रूप को मैदनो देवने कोट कीना नुतो होयकै मोहणा ॥ १६०६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

स्तोत्र पाठ करि अर्चन कीना ॥ कन्दमूल

प्राशनको दीना ॥ कछुक चहन उतवास कराये ॥ पुन अगस्त सद्मनको धाये ॥ १६१० ॥ मैत्रावरुणि तपोबन पाई ॥ इल्वं अवरको नाथ भलाई ॥ कोशप युगल तपोधन धाय ॥ दूत सद्मन निज त्यार कराये ॥ १६११ ॥ सुनत वचन अवरज चवड़ाई ॥ पूछें कोड़ भजाइज आई ॥ विप्र होय वको करि वह धाये ॥ कहो प्रभो मुझको समुझाये ॥ १६१२ ॥

॥ कबित ॥

कहत बिहस चार चहुत रजनीचर इल्वलवतापी पच सहोदर आवन्॥ ॥ वमत वतापी मैष नाचत फिरत देश इल्वल भगत होय विप्रणको आखये ॥ निमन्त्रय मुनिवर प्राशन पलल तर आवत उत्तम मैष कहो बांध रायये ॥ इरष अवन्य मर भाषत गाड़ुल चर करत तयार तब आय द्विज चाखये ॥ १६१३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

विप्र सब्बं प्राशन जब कीना ॥ इल्वल डांक मन्त्र पढ़ि दीना ॥ उदर चीर अजप चल आयें ॥ विप्र सब्बं सुरलोक सिधाये ॥ १६१४ ॥ इसी तौर द्विज बहुत खपाई ॥ सुन्यो ब्रह्महत्या मुनिराई ॥ आय कुम्भ सम्भव कलपाये ॥ निरख असुर पहुंच्यो

वह आये ॥ १६१५ ॥ पाणिजोड़ भाखें कपटाई ॥ करो पवित्र विप्र गृह आई ॥ मुनि अगस्त्य बोलें हरषाये ॥ तव सम भक्त देख नहिं पाये ॥ १६१६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

असभय आसर सदनको गये विप्र हरषाय ॥ मेष वतापी रांधको दोना इल्वल लाय ॥ दोना इल्वल लाय मुनी भोजन झट कीना ॥ ब्रह्म मन्त्र पढ़ शीघ्र उदर पाणी धर दीना ॥ गाढ़र होयो भस्म असुर निज भ्रात बुलाये ॥ भयो मुनीवर क्रुद्ध दुष्ट मे नष्ट कराये ॥ १६१७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मुनिकी अनुज मृत्यु कलपाये ॥ गिरे अनल अस्त्रप वह आये ॥ दहन भस्म ताका तन कीना ॥ यह विधि दुष्ट मारि मुनि दीना ॥ १६१८ ॥ सुनत वचन लक्ष्मण हरषये ॥ मुनिवरके स्थान चलि आये ॥ सेवक भूमि निरख हरषाई ॥ भयो अगस्त्य मुनीको आई ॥ १६१६ ॥ आकर ध्यान धरो दिन रातू ॥ सो आवत दाशानुज साथू ॥ सुनत विप्र लेनेको धाये ॥ देख रघुपति शीर्ष निवाये ॥ १६२० ॥

॥ झूलना छन्द ॥

दयो नाथको देख आशीस भूदेव ले रामको साथ

आगार आये ॥ करें नाथने पादका धोय पूजा धरें भोगको कंद औ मूल लाये ॥ खुशी राम हो बैठके खूब खाये भई रात ले आनको सो रहाये ॥ गई यामिनी प्रात कीया करें नाथ आए मुनी रामने शीर्ष नाये ॥ १८२१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

विप्र भने आशीष कराये ॥ कारण कवन प्रभो वन आये ॥ शुनि माधव मुनिको बतलावें ॥ जनक राज्य पालन वन आवें ॥ १८२२ ॥ तवउर्व्वीश्वर विहस भलाई ॥ धन्य धन्य ईश्वर रघुराई ॥ है त्यारी सेवक हितकारी ॥ लीजे धनुष बाण यह भारी ॥ १८२३ ॥ विश्वकर्म्माने त्यार कराये ॥ सो मे भेट करो प्रभु लाये ॥ निरखि आप शर खुश रघुराई ॥ लीना विहस अमर सुखदाई ॥ १८२४ ॥

॥ कामनी मोहना छन्द ॥

पाणिको जोड़के रामजी भाषही ॥ नाथ आंखो जहां दाशको राख ही ॥ खोज कीना मुनी सोचकी लाखपे ॥ नाथ पावें जहां कंदको चाखपे ॥ १८२५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शोच्य शोच्य करि विप्र बताये ॥ तीछी पञ्चवटी प्रभु जाये ॥ कन्दमूल उत्तम उतपावें ॥ गोदावरी नदी

बन खावैं ॥ १६२६ ॥ गुनत बिदा कौशल हो धाये ॥ पहुंचे पञ्चबटी बन आये ॥ खबर पाय द्विजबर चल आयो ॥ निज परिचय प्रभुको बतलायो ॥ १६२७ ॥ गरुड़ पुत्र मम नाम जटायो ॥ सम्पाती अग्रज मम भाई ॥ महाराज दशरथ भूपाला ॥ सो मम सखा रहे किरपाला ॥ १६२८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अस परिचय बतलायके पञ्चबटी ले जाय ॥ निज बासाके निकटमो द्विजबरदयो टिकाय ॥ द्विजबर दयो टिकाय प्रभो आवास बनाये ॥ चित्रभानुको अंशं राम गृहवास कराये ॥ प्रगट अस्त रविनाथ नित्य गोदावरि जावें ॥ अवगाहन करि नित्य कर्म्म प्रभु नित्य करावें ॥ १६२६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कछुक अहन यह भांत बिताये ॥ पहुंची सुपनंखा उत आये ॥ रामरूप देखत हरषाई ॥ मदन बाणवश बुधि हराई ॥ १६३० ॥ कोट कामवत रूपनिहारी ॥ धारयो मनुज गात शुभकारी ॥ बिहस बिहस प्रभु निकट सिधाई ॥ पाणिजोड़ पूंछे मुशकाई ॥१६३१॥ राजपुत्र हो की मुनि राया ॥ कहो सत्य मुझपर करि

दाया ॥ नाथ भयो शुभ मोर कहानी ॥ दशरथ पुत्र अवधि पति जानी ॥ १८३२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रामचन्द्र मम नाम है लक्ष्मण अवरज नाम ॥ आया सीता आनिये कहो अपानो काम ॥ कहो अपानो काम आप कारण क्या आई ॥ जोड़ भुजाद्वल भयो नारि प्रभुको समुझाई ॥ खोज थको त्रैलोकपती सुन्दर नहि पाये ॥ ताते कांरीनाथ रही अबलग तड़-फाये ॥ १८३३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अब विधिने संयोग बनाये ॥ अपने तुल्य पती मै पाये ॥ नाथ विवाह करो तुम आजू ॥ कह्यो लग्न उत्तम मुनि राजू ॥ १८३४ ॥ सुनत वचन रघुपति मुशकाये ॥ करि परिहास ताहि समुझाये ॥ हैक्वांरा मेरो लघुभाई ॥ यौवन सुफल करो उत जाई ॥ १८३५ ॥ तुम सम रूपवती जित पावें ॥ निरखरूप झट व्याह करावें ॥ सुनत वचन धाई बबराई ॥ लक्ष्मणको भावे मुशकाई ॥ १८३६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

युवा मह्रीपज होयके बसो अकेले रात ॥ रसक्रीड़ा अब कीजिये हौं करि मुझको साथ ॥ ले करि मुझको

साथ सुनत लछमण बतलावैं ॥ तीन लोककी प्रभो राम मै दास कहावैं ॥ सेवकको भज नार कष्ट तुमको बहु होई ॥ भजो रामको जाय तुझे चर्चै सब कोई ॥ १८३७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनि चाई प्रभुके पुन पासा ॥ भयो नारि कोजे दुखनासा ॥ तुम ही भूप कह्यो लघु भाई ॥ कन्त करौं नृपको सुखदाई ॥ १८३८ ॥ सुन रघुपति पुन विहस चलावैं ॥ मुझे व्याहि सौतिनिको पावैं ॥ ताते कष्ट तुझे बहु होई ॥ करो बरण क्वांरा वर सोई ॥१८३९॥ सुनत बचन करि कोप जनाई ॥ करौं ग्रास सीताको जाई ॥ तब तुमको मै व्याह करावैं ॥ सौतिनिकी ज्वाला नहि पावैं ॥१८४०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चसभय झपटी दुष्ट तब गई जानकी पास ॥ जैसे राहु चन्द्रको धावत करणे ग्रास ॥ धावत करणे ग्रास वास माता बहु पाई ॥ करि क्रन्दन चितकार मार भागी घबराई ॥ भयो खालसासिंह वाण लछमण से धाये ॥ कर्ण नासिका काट नारिको दूर कराये ॥ १८४१ ॥

अथ खरदूषण वध ।

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

कर मे कर मारै भीरु पुकारै भ्रात हमारै खग आनो ॥ नरको दल भाई देखु खपाई प्राण न भाई मम आनो ॥ सुनि कै खरदूषण लै शरभूषण भाषः सुखण तुराड लजै ॥ क्या कारण घोषा कर्ण शलोना काट अलोना मुराड तजै ॥ १६४२ ॥

॥ भुयङ्ग प्रयात छन्द ॥

कहा कामुको बात झूठी बनाई ॥ गई मास मै मर्त्तको खान भाई ॥ मुझे देखते पापि ले बाण आये करी मे नुती कोट ताको डराये ॥१६४३॥ रहा मौन हो रोपको रोक भाई ॥ कहा मै हिन्हे वीरता तोर गाई ॥ यही दोषते कोप हा बाण मारी ॥ दयो लाखणो नाम लै तोर गारी ॥ १६४४ ॥ सुना दैतने कोप कीना अपारं ॥ कहा भ्रात चौदे अभीको हकारं ॥ अभी शीघ्र वे मर्त्तको मार लावै ॥ जिनोकि किये से स्वसा लाजपावैं ॥ १६४५ ॥ कहा तात चौदे अभी-मार लाऊं ॥ वना शालना मै स्वसाको खिलाऊं ॥ इसी तौरसे बोलके दैत धाये ॥ दिया पांशुला रामको जा दिखाये ॥१६४६॥ कहा नाथको दैत चौदेहकारी ॥

भिड़ो बाण ले शूल देखो हमारी ॥ शुना रामने गर्ज्ज के दौड आये ॥ चला रोपको शूलको दीन घाये ॥ १६४७ ॥ लिया आशुमां नाथने टीक वेदं ॥ किया राकसांशीसको छोड़ छेदं ॥ मरे भ्रात चौदे भगी देख मारी ॥ गयो नाथके तूणमो बाण सारी ॥१६४८॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब ईश्वर लक्ष्मणको भाखैं ॥ गुहा बीच सीताको राखैं ॥ शुनि अवरज ले प्यान कराये ॥ द्रुत केशव शर चाप लगाये ॥ १६४६ ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

पुर भीतर नारी जाय पुकारी भ्रात बिदारी नर भाई ॥ शुनिके दुखबाणो दूषण ठानी फौज अपानी सब लाई ॥ नरको धरि घावैं शोक मिटावैं नाम रखावैं जगमाहीं ॥ उठके खरधाये चक्र बुलाये शस्त्र सजाये रण जाहीं ॥ १६५० ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

साथ अनीक लिये खरदूषण प्यान करयो रण भूमि सिधाये ॥ देख चमू युग दोकहजार सबे सुर लोक बिषै घबड़ाये ॥ दूषण राग हजार लिये बल भाषत हैं हरिको डपटाये ॥ बालक हो करिके नर मूरख आसरसों तुम राड़ कराये ॥ १६५१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनि दूषणकी वचनको खर आयो हरखाय ॥ चतु सहस्र लै वाहिनी घेरा प्रभुको जाय ॥ घेरा प्रभुको जाय देख वीथिरा सिधावैं ॥ वे भी बलय हजार पाछि घेरा ले पावैं ॥ देख प्रभो कर चाप वृषू सन्मुख ले धाये ॥ जैसे गीदड़ कोट मध्य केहरि चलि आये ॥ १९५२ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

चापलिये करमे खरवाण शरासनते झटदीन चलाई ॥ देख सिरा पतिने तव आपन रोप चमा शरदीन खपाई ॥ भाग गयो खर ले रथको फिर ने पुन वाण हजार लगाई ॥ मार दयो तिनको बलको तव दूषण घेर भयो डपटाई ॥ १९५३ ॥ गाफिल देख अनीक अरे नर मार बड़ो मनको गरवाये ॥ काल कराल फिरे शिरमो यमसौं अब भेंट करौं तुम जाये ॥ नाथ भयो सुनरे खल मूरख तोर कहा विधि तोर बनाये ॥ कोप करो सुनके पुन दूषण शूल लिये प्रभुको धमकाये ॥ १९५४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सन्मुख अनूप देखके प्रभो युक्ति यह कीन ॥ गन्धर्व नाम शर छोड़के मार वाहिनी दीन ॥

मार वाहिनी दीन देख त्रिशिरा भ्रलाये ॥ कीजै मुझसों प्रधन प्रभो तिनको भी घाये ॥ दीकहजारा नाश वेद हरिने वन कीना ॥ खरदूषणको घेर प्रभो उत्तर यह दीना ॥ १८५५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सब मै तब वरूथिनी खपाये ॥ प्राणदान अब तोर कराये ॥ यश गाओ मेरो गृह जाई ॥ शुन दूषण करि कोप अलाई ॥ १८५६ ॥ मनुज होय यतनो हङ्कारा ॥ नहिं जानो मम शूल करारा ॥ प्रलय शूल मुझे विधि दीना ॥ लोक नथन याते शरकीना ॥ १८५७ ॥ शुनत वचन प्रभु युक्ति कराये ॥ शूल सहित पखपाणि नशाये ॥ छटपटाय तन त्याग कराई ॥ पुन पहुंच्यो सन्मुख खर आई ॥ १८५८ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

देख सियापतिने खरको पुन कीन समीक्ष वड़ो हरषाई ॥ रोप नश्यो प्रभुकी तनसो खरभाषत है मनसो गरवाई ॥ सौति लिखो हमरे करमो विधिने तुमसो हम शाच पलाई ॥ केशव कोप करो शुनिकी झट ऐषिक रोप चला खरधाई ॥ १८५९ ॥ जीत भयो रण देख शचीपति वेधस लेख भयो सब आये ॥ त्रास गयो हम लोगनको भल दैत सबे यमलोक

पठाये ॥ जोड़ भुजादल नाव भये सुर के वल आहव जीत कराये ॥ दै करि आशिरवाद तवे पुन देव सबै निज लोक सिधाये ॥ १९९० ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

शुनिकी लघु भाई हर्ष बढ़ाई माथ निवाई भाट आये ॥ पदमै शिरडारी भूमि कुमारी गात निहारी घवड़ाये ॥ प्रभुकी तन सारे चोट करारे देख हकारे शिरचंगी ॥ सति नाम मनाये सिंह पलाये छन्द बनाये तिरभंगी ॥ १९९१ ॥

अथ सुपर्नखाका लङ्का गमन और मारीच रावणका कथोपकथन ।

॥ कवित ॥

देख आवो धन नार धावत सागर पार रावण निकट निज मूरति दिखायो है ॥ निरखि कुरूप भ्रात भाषत कांपत गात कौन अपमान तोर यतनो करायो है ॥ भाषत करोध कर युगल विलोक नर प्राणन करख पल तिनको सिधायो है ॥ देखि अपराध मम धारत मूरति यम नासिका स्रवस झट छेदन करायो है ॥ १९९२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनि रावण बहु कोप कराई ॥ सुपर्णखा पुन ताहि बुझाई ॥ रूपवती तिनकी है नारी ॥ तापर मोह रामकी भारी ॥ १९६३ ॥ तिनको भ्रात आप हर लावैं ॥ तब अवधेशज प्राण तजावैं ॥ शुलभ युक्ति से भ्रात बताये ॥ करि विग्रह जीता नहि जाये ॥ १९६४ ॥ कालहुंको वह काल कराला ॥ देखनमो कोमल नरबाला ॥ खरदूषण आदिक बल भाई ॥ क्षण मो राघव दीन खपाई ॥ १९६५ ॥ ताते कहा मोर यह कीजे ॥ समिध छोड़ दारा हर लीजे ॥ शुनत दशानन कीन विचारा ॥ खरदूषण आदिक जो मारा ॥ १९६६ ॥ ताते समर हार कठिनाई ॥ लावैं ताकी नारि चुराई ॥ असविचारि स्यन्दन मंगवाये ॥ चढ़ि तापर प्रस्थान कराये ॥ १९६७ ॥ आयो कन्त सरितकी पारा ॥ तप जित वाल्मिल्य मुनि धारा ॥ उत मारीच निशाचर पाई ॥ ताको यह सब हाल जनाई ॥ १९६८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुपर्णखाका कीन है जस राघव अपमान ॥ तस ताको मै शीक दे लेवैं उनका प्राण ॥ लेवैं उनका प्राण आप रोहित बन जाओ ॥ छल करिके भुल वाय

महीपजको वन लाभो ॥ तव ताको मे नार जाय करि लाव चुराई ॥ सुनत युक्ति करजोड़ भये मारीच बुझाई ॥ १६६६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

नारायण नर गात धराई ॥ उनसे बैर करो मति भाई ॥ मखरक्षा कारण मुनि लाये ॥ कोट मयन अरूप वह घाये ॥ १६७० ॥ मुझे फेक लङ्का मो दीना ॥ तबसे तपस्वी हो तप कीना ॥ गृह जाओ कुल कुशल विचारी ॥ कौन कुमति दीना असभारी ॥ १६७१ ॥ सुनि दशकन्धर कोप कराये ॥ उपज्यो कर्कश वाक्य अलाये ॥ गुरु पितु मात तुल्य समुझायो ॥ मूढ़ अधम तोहिं लाज न आयो ॥ १६७२ ॥ मम समको विक्रमसो भारी ॥ फणि निर्जर गन्धर्व विदारी ॥ सुनत वचन मारीच विचारा ॥ है दोउ दिश मरण हमारा ॥ १६७३ ॥

॥ कवित ॥

ताते रघुवीर पाणि मरण उत्तम जानि भषत मारीच आप कहो सो करावही ॥ नाचत रावण राय भाषत आनन्द काय राम रूप धार आय रामको छलावहीं ॥ सुनत मारीच रङ्क वनत धारत अङ्क कनक शरीर सुर मुनिको लोभावहीं ॥ श्रीराम

लक्ष्मणसिंह काशीमो स्थापत लिङ्ग तिनको भ्रातुम पुत खालसा अलावहीं ॥ १९७४ ॥

अथ श्रीमती सीतादेवीका अग्निमो प्रवेश और मायाकी सीता निर्म्माण ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीलक्ष्मणजी बन गए कन्दमूल फल लैन ॥ तब सीताको प्रभु भणैं शुनो प्रिया सुख दैन ॥ सुनौ प्रिया सुख दैन सुनो जो ग्रन्थ बनाये ॥ तामे सुरकी काज हरण तुमरो वह गाये ॥ तिहं कारण प्रिय जाय करौ पावकमो वासा ॥ वचन भक्तके राख करौं सुर हेतु समासा ॥ १९७५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत वचन माता घवड़ाई ॥ करि क्रन्दन कर जोड़ चलाई ॥ जो कारण सप्रन तजि धाये ॥ सो मुझको दुख नाथ दिखाये ॥ १९७६ ॥ कब मै मिलौं कन्तसि धाई ॥ तब ईश्वर तिनको समुझाई ॥ वर्ष

चन्द्रकी भीतर पावैं ॥ सुर बैरी सबको जब घावैं ॥ १६७७ ॥ तेरो बिम्ब दहनमो जाई ॥ मिलि ही आप शुक्रते आई ॥ शुनत वचन जननी शिरनावैं ॥ आश्रयाश्रके बोध समवैं ॥ १६७८ ॥ निज प्रतिबिम्ब त्यार करि माई ॥ हीगा आश्रममो तीछाई ॥ वैसा रूप शील गुण वैसा ॥ रह्यो महीजाकी सब जैसा ॥१६७९॥ अवरज भी यह मरम न पाई ॥ जो कछु खेल रच्यो रघुराई ॥ कन्दमूल लछ्मण ले आये ॥ करि प्राशन प्रभु शयन कराये ॥ १६८० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुरकी बन्धन मुक्तको नाथ युक्ति यह कौन ॥ राज छोड बनको गये और नारि तजि हौन ॥ और नारि तजि हौन मूल फल कौन अहारा ॥ यह सज्जनकी रीत देख खल करी बिचारा ॥ भयो खालसासिंह तजी हिंसा पर भाई ॥ परहित कारण नाथ आप यह कष्ट उठाई ॥ १६८१ ॥

अथ मारीच नीशाचर वध।

॥ विराज छन्द ॥

दैत रामरूप खूब धारकी चला डराय ॥ देख सोदरा बुलाय रावणा कहा हसाय ॥ जौन नाक कान तोर काटकी कुरूप कीन ॥ तौनको मुझे बता करौं कलाय नारहीन ॥ १९८२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुपर्नखा सुनकी हरषाई ॥ ईश्वरकी कुटिया दिखलाई ॥ शरभ देख प्रभुको शिरनाये ॥ मार चौकड़ी नृत्य दिखाये ॥ १९८३ ॥ भूमि सुता देखत हरषाई ॥ जोड़ि पाणिपतिसि बतलाई ॥ देखौ नाथ चमर मृग आये ॥ कनक पङ्क खुर रजत लखाये ॥ १९८४ ॥ तापर कज्जलकी है रेखा ॥ ऐसा कछु नयन नहि देखा ॥ रदन देख मोती शरमावैं ॥ प्रभा देख दिनकर घबड़ावैं ॥ १९८५ ॥ लोचन जलै रतनकी ऐसा ॥ चमकी रसना विद्युत जैसा ॥ कान्त मोह मोपर जो भारी ॥ दीजे चर्म एणको मारी ॥ १९८६ ॥

॥ विराज छन्द ॥

नाथ भ्रातको भने रहौ कुटी सम्हार आप ॥ जा समूहको शिकार मै करौं मिटाय ताप ॥ जोड़पाणि

भ्रातने कहा य चीन रूपकोय ॥ यातु धारिकी फिरै करी शिकार बूझ सोय ॥१९८७॥

॥ पाद्दाकुलक छन्द ॥

तब केशव तिनको समुझायै ॥ जो कोयप गोहिय ह्वै आये ॥ तब ताकी मै मार खपाऊं ॥ निस्कंटक बनको करि आऊं ॥ १९८८ ॥ जो यह है सम्बरको जाती ॥ तो लावैं याको धरि खाती ॥ यद्यपि धरा जाय नहि मोसे ॥ लावैं चर्म मार शरपोंसे ॥१९८९॥ अस कहि प्रभु तिनको समुझाए ॥ कनक प्रियक मारणको धाये ॥ तास पाय गोकर्ण सिधायो ॥ लै शर चाप नाथ घम कायो ॥ १९९० ॥ भाग्यो पृषत बिपिन घबड़ाये ॥ तब ऐषिक शर नाथ चलाये ॥ लग्यो बाण कट्लीको जाई ॥ गिर्यो धारि निजरूप अघाई ॥ १९९१ ॥ हे लक्ष्मण अवरज भट आयो ॥ यातु धानते मोहि बचायो ॥ कौमा प्राण निशाचर भाई ॥ पलभक्ष कर्बुर प्राण तजाई ॥ १९९२ ॥

॥ विराज छन्द ॥

बाक रामकी समान जान जानकी चलाय ॥ दैत घेर नाथ को हते तबै तुझे बुलाय ॥ कोट कोट मातको कहा बुझाय राम भ्रात ॥ सिंह खालसा भयो य मात मानती न बात ॥१९९३॥

अथ श्रीमती मायाकी सीतादेवि हरण।

॥ गजल छन्द ॥

अब जाईये देवर हमारे पीकोला मुझे मिला॥ तुम बेकरारीका दवा देकर मुझे जल्दी जिला ।१९९४॥ बोलते हरिको बिरादर हो न मादर बेकरार॥ कौना हैं कोई कायरीसी बोलके हरिका गिला ॥१९९५॥ नाश होवें राक्षसां दलकोट प्रभुकी वाणसे॥ चाहि जमीको थामकी चुटकी से वे देवें हिला ॥१९९६॥ शुन कर वे मादर बोलती मेरी नही दिलमानती॥ खैर खूबी सा शराबि लायकी मुझको पिला ॥ १९९७ ॥ सिंहशायेर शेर का बर मांगता रघुवीरसे॥ प्यालि नाम तेरे इश्कका मुझको शिताबीसे दिला ॥ १९९८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुन लक्ष्मण तिनको समुझावैं॥ क्यों करि मै तुमको तजि जावैं॥ शुन्य आवास छोड़की माई॥ मै जावैं लेनेको भाई॥ १९९९ ॥ यद्यपि वन जन्तू इत आवैं॥ तव जननी क्या आप करावैं॥ शुनत वचन सीता धमकाई॥ क्या मुझसे तुम खेल मचाई॥२०००॥ आज्ञा नहि मेरी तूं माने॥ प्रभु प्रेरित लक्ष्मण घबड़ाने॥

गण्डिटयो कुटिकी युग ओरा ॥ और मन्त्र पढ़ि कीन निहोरा ॥२००१॥ कोन गण्डिकी भीतर आवैं ॥ तौन जीव यम लोक सिधावैं ॥ यस है श्राप लक्ष्मण जब धाये ॥ धरि मुनि वेश दशानन आये ॥ २००२ ॥

॥ कामनीमोहना छन्द ॥

दैत आशीस है मातको भाषये ॥ अंतको भीख दे मात जी आखये ॥ मात बोलैं जरा ठेरके आवही ॥ कंतसे मांगियो कंदजो भाव हीं ॥ २००३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कछुक काल बीत्यो जवै पुन रावण समुझाय ॥ भीख लेन गृह औरके आवैंगे शुन माय ॥ आवैंगे शुन माय देर बहुता अब होई ॥ शुनत मात फल दैन लगीं कुटियामो जोई ॥ भयो निशाचर दुष्ट नहीं आश्रममो लेवें ॥ गण्डि छोड़के मात आप बाहर फल देवें ॥ २००४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

प्रभु प्रेरित माता मन डोलैं ॥ गण्डि छोड़ बाहर आ बोलैं ॥ लि भिक्षा योगीजी आये ॥ हर्ष दुष्ट आमा कर धाये ॥ २००५ ॥ करि क्रन्दन सीता बकझावैं ॥ दे अभिशाप ताहि बतलावैं ॥ दुराचार दुर्जन अघकारी ॥ वंशनाश होवेगो थारी ॥ २००६ ॥ तैंभी मरै

कोट की नाईं ॥ बल विक्रम कछु काम न आईं ॥ असभग कोट कोट है गारो ॥ कलप कलप रोवैं मह तारो ॥२००७॥ लै कर्बुर रथ पै तीष्टाये ॥ त्रास पाय युग ओर तकाये ॥ कहं रघुवीर निरख नहि पावैं ॥ अस विचार स्यन्दन लै धावैं ॥२००८॥ गरुड़ पुत्र शुभ नाम जटायू ॥ अवलोकन करि कोप कराय़ू ॥ मारिचोंच अश्विनको तोड़ैं ॥ धरि कोदण्डकी कीच भिंझोड़ैं ॥ २००९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

है गालो लख यातुको गरुड़ पुत्र धमकाय ॥ कौन दोष प्रभुने करयो जाते नारि चुराय ॥ जाते नारि चुराय तोर कुटिला है भग्नी ॥ गई रमणकी हेतु रूप देखत हो मग्नी ॥ ताते उसकी कर्ण नासिका को प्रभु घाये ॥ शुनत बचन करि क्रोध यातु झट रोप चलाये ॥ २०१० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताते हरि वाहन सुत भाई ॥ कूद अङ्ग निज जीन बचाई ॥ पुन नोचै मस्तकको जाये ॥ ताते दश गईन घबड़ाये ॥२०११॥ चोंच मार सब अङ्ग विदारा ॥ ले सोता रथ भूमि मझारा ॥ पुन पविन धायो मम भाई ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ २०१२ ॥ कहं लग तिनका प्रथम लिखाऊं ॥ ग्रन्थ बढ़नते अधिक

हराज ॥ बहु प्राचीन रहे खग राजा ॥ तिस्पर भी होना बहु साजा ॥ २०१३ ॥ यद्यपि युवा पवरथ होते ॥ तब हम यौव उद्दरमो सोते ॥ व्रह होनकी हेतु लखाद ॥ यातु पंख जाम्यो अभिमाद ॥ २०१४ ॥ गिम्यो विकल अवडज भू पावे ॥ भये मात सीता कलपाये ॥ समर प्रभुर तुमपै बहु कीना ॥ अन्तप्राण कारण मम होना ॥ २०१५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जो चाहो वर लीजिये प्रभुर हमारे पाय ॥ नभ सहम भाषत भये मिलें चतुर्भुज माय ॥ मिलें चतुर्भुज माय प्रभोका दर्शन पावें ॥ पुन काज वह करें अमल दे मोहिं जलावें ॥ भये जानकी रोय हीन माम्यो को पाई ॥ करे अन्त सतकार अमल दे तोहि जलाई ॥ २०१६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताहि समय लङ्केश्वर आवे ॥ रथ पर सीताको लीन्हाये ॥ गगन मार्ग है प्यान करायो ॥ ऋष्यमूक पावनको पायो ॥ २०१७ ॥ वहां वास मर्कट लखि माई ॥ होना भूषण वसन गिराई ॥ और भये कपिको कलपाये ॥ मिलें यदि तुमको पति आवे ॥ २०१८ ॥ केही तालि तिन्हे समुझाई ॥ ले सीता दशस्कन्ध

सिधाई ॥ भूषण वसन बलो सुखलावैं ॥ तवतें रथ दक्षिण दिश धावैं ॥ २०१९ ॥ वहां सुपार्श्व मिलि खग जाती । सुत सम्पाति गरुडके नाती ॥ देख दशाननको गर्व्वायै ॥ जोड़ दोस दश माथ चवाये ॥ २०२० ॥ हमते नहिं तुमते कछु वैरा ॥ सुनि विस्फिर तिनको तजि तैरा ॥ यद्यपि जनक भातको मरणा ॥ जानेते माने नहि शरणा ॥ २०२१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मुक्त होय सुपर्श्वसे गयो सरित पति तीर ॥ कलप कलप सीता भये लोचन भर भर नीर ॥ लोचन भर भरनीर पिया मुझको तजि दीना ॥ क्या कोना मे पाप यातु जाते हर लीना ॥ तवते स्यन्दन पार भयो लङ्कापुर आये ॥ बन अशोकके बीच मातको दीन टिकाये ॥ २०२२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पहुंची सुपर्नखा झट आई ॥ करि कुटिला बहु कोप चलाई ॥ तव कारण मेरो अपमाना ॥ अब ले हौ मे तीर पराणा ॥ २०२३ ॥ सुन कटुबात मात शिर नाई ॥ बैठी कन्त चरण चितलाई ॥ बकबकके कुटिला गह आवैं ॥ स्वर्ग बीच सुमनस घबड़ावैं ॥ २०२४ ॥ भये दुःखित वन्धिनको जाई ॥ सुर कारण प्रभु खेल

भयाईं ॥ पल्याये मायाकी सीता ॥ किहं बिधि मास दीक्र रहिं सीता ॥ २०२५ ॥ तिनकी मरे सरे नहि काजू ॥ यह परमान्न सुधा दे राजू ॥ सुनत बचन मघवत ले आये ॥ सीताको परमान्न खवाये ॥२०२६॥ तातें क्षुधा प्यास तजि माई ॥ बैठी पतिका ध्यान लगाई ॥ इत मारीच मार प्रभु आये ॥ आरामो अव-रजको पाये ॥ २०२७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीलक्ष्मणको देखके भये प्रभो घबड़ाय ॥ भ्रात जानकी छोड़के क्या कारण चलि आय ॥ क्या कारण चलि आय भये अवरज समुझाई ॥ आप तुल्य सुन वाक मात मुझको पठवाई ॥ भये विश्वकार रोय अवरते कपट कराये ॥ मृगाकृत धरि यातु मुझे लायो भुलवाये ॥ २०२८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सो मेरी सम बाक यलाई ॥ ताको सुनि भूल्यो भव भाई ॥ क्या जाने क्या कर्म हमारे ॥ लिख्यो कष्ट बिधिने क्या भारे ॥ २०२९ ॥, जाते तुम आश्रम तजि आए ॥ सुनत बचन अवरज भय पावे ॥ पन्यामो बहु बिघ्न लखावैं ॥ हरिबिन भिक्षा माम फकिर जावैं

॥ २०३० ॥ ताते लछमण घोर डराये ॥ तब तिनको केशव समुझाये ॥ तब अपराध कछू नहिं भाई ॥ होवे जो विधि कर्म लिखाई ॥ २०३१ ॥ असमय दौड़ दौड़ प्रभु धाये ॥ आश्रमको निकटे जब आये ॥ सिया सिया भण शोर मचावैं ॥ शून्य अवास देख प्रभु पावैं ॥ २०३२ ॥ गिरे अचेतन भूमि मझारा ॥ अनुज शीर्ष निज पटक पुकारा ॥ कहां मात अस मौन रहावैं ॥ दे दर्शन मम प्राण बचावैं ॥ २०३३ ॥

॥ गजल छन्द ॥

देख खाली कुञ्जको हरि पूछते मुझको बता ॥
छोड़ दीना गुलबदन्क्या देख कर मेरी खता ॥२०३४॥
रोरोके हरसे पूंछते वह नाजनी कितको गई ॥ वेदहं जालिम्माहेरू होवे जहां मुझको बता ॥ २०३५ ॥
बुन्स्तानसे हैवानसे हरि पूछते हर सजरसे ॥ देखा है कोई शीमे तन् जाते कहीं मुझको बता ॥ २०३६ ॥
होकर दीवाने पूंछते यो शौहफे हर एकसे ॥ क्यों कर न होवैं वेकरार आशिक है एही मता ॥२०३७॥
खोजके बनू बनूको हारे अस्मसे दरिया बता ॥ लौट कर फिर पूछते घर घर पियारी का पता ॥ २०३८ ॥
सिंह साएर गजल् गाया सद्गुरुकी कजलसे ॥ हरि बोलते हुजरा विरादर छोड़के मुझको हता ॥२०३९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शोक देखि प्रभुका बनवासी ॥ रोवैं तपस्वी विप्र उदासी ॥ पसु पक्षी जलचर तरुपाती ॥ नद नाला रोवैं बहु भांती ॥२०४०॥ भये मुनी प्रभुको समुझाए ॥ यस मति शोक करो रघुराए ॥ होय करो प्रभु मोह तजाई ॥ त्रिभुवन तव निन्दा सुन गाई ॥ २०४१ ॥ सुन दुर्जन उपहास करावैं ॥ ताते चितमो धैर्य धरावै ॥ सुन अच्युत मनमें मुसकाये ॥ जोड़ पाणि तिनको समुझाये । २०४२ ॥

॥ गजल छन्द ॥

मेहुं इश्क दीवाने मुझे अब होशयारी क्या ॥ मेरे जख्म हैं जिगरे मुझे अब नाम दारी क्या ॥ २०४३ ॥ बिछुड़े प्राण मेरेसे निकलता जान मेरा हैं ॥ अगर पावैं वे शीमोतन मुझे फिर बेकरारी क्या ॥ २०४४ ॥ बोले मुनी फिर चश्मसे दरिया बहा करके ॥ तसल्ली कीजिए दिलमे गमी इसमे है भारी क्या ॥ २०४५ ॥ होकर दिवाने खोजते कैशव बुझा उनको ॥ कांटे लगे तनमे न जिनके खून जारी क्या ॥ २०४६ ॥ सिंह शाएर गजल अन्दर गमगिनी रघु नाथकी ॥ गाया गुरूकी फजलसे अब पापकारी क्या ॥ २०४७ ॥

अथ जटायू उद्धार ।

॥ सुराज छन्द ॥

ज्ञान ध्यान मोर भ्रात ॥ जानकी बिना नशात ॥ खोज वेग नार मोर ॥ काट शोक भ्रात घोर ॥२०४८॥ भ्रात पाणिजोड़ आय ॥ रामको भणै बुझाय ॥ शोक ताप नाथ तोर ॥ देख शीश नाश मोर ॥ २०४९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन अच्युत मनमो मुशकावैं ॥ पबर शाय खोजन पुन जावैं ॥ कछुक दूर पहुंचे जब आवै ॥ तब क्रन्दन करि नाथ चलाये ॥ २०५० ॥ राजभ्रष्ट मुझको लखि भाई ॥ सीता भूपकी निज थाई ॥ नहि नासा को नै जित पावैं ॥ सबते प्रभु पूछत चलि जावैं ॥ २०५१ ॥ देख्यो चन्द्रमुखो मम भाई ॥ वोको मुझपर मोह कराई ॥ असभांषि रो करि ढोंग दिखाये ॥ सन्मुख देख जटायू पाये ॥ २०५२ ॥ तड़फै शकुन विकल अति काया ॥ पूछैं प्रभु ता परि करि दाया ॥ कहो जनक भ्राता खग राई ॥ तड़फो क्या कारण द्रुत पाई ॥ २०५३ ॥ जोड़ि शकुन्ति पाणि शिर नायो ॥ सीताको सब हाल जनायो ॥ हरगो प्रभो लङ्कापति आए ॥ मे तिनसे बहु युद्ध कराये ॥ २०५४ ॥

॥ सुराज छन्द ॥

नाथ बूड़ हेतु मोर ॥ चीण जोति नैन जोर ॥ मार तेगयातु चंग ॥ कौन रोम रोम भंग ॥ २०५५ ॥ मात तै तवे हमार ॥ लंकयान गे सवार ॥ कौन नाथ ग्रोर घोर ॥ मात रोय रोय मोर ॥ २०५६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत खबर राघव घबड़ाए ॥ गिरे भूमि मूर्च्छा प्रभु खाए ॥ लै बीयस गोदी कलपावैं ॥ दै मुख मो चप हौश करावैं ॥ २०५७ ॥ भये विहायस को रघुराई ॥ जनक तुल्य तुम काज कराई ॥ अमर करौं तन राखहु प्राणा ॥ काहैं पतग शुन कृपा निधाना ॥ २०५८ ॥ तप करि तपस्वी जाहि न पावैं ॥ सो सन्मुख मेरे प्रभु आवैं ॥ अब मे अमर होय क्या करि हौं ॥ रटि तव नाम स्वर्ग पग धरि हौं ॥ २०५९ ॥ असभण जपत विकिर रघुराई ॥ खग तन त्याग अमर तन पाई ॥ निरखि राम लक्ष्मण तड़फावैं ॥ कमल विहङ्गमकी सुख पावैं ॥ २०६० ॥ काष्ठ लाय प्रभु चिता बनाए ॥ तापर वाजिनको सुत लाए ॥ दै पावक सतकार कराई ॥ भाग नगौकसको बड़ भाई ॥ २०६१ ॥

॥ सुराज छन्द ॥

देख राम कार मोर ॥ होत ताप माग घोर ॥
होज जात हीन तार ॥ दीननाथ मोचहार ॥२०६२॥
पाप आपनो लखाय ॥ सिंह खालसा डराय ॥ दयाड
नाथ माफ मोर ॥ शर्णदेव आय तोर ॥ २०६३ ॥

अथ कबन्ध वधः ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दिनकर पश्चिमको गये रजनी कर आकाश ॥
ले सबीयस रघुनाथजी पुन आये आवास ॥ पुन आये
आवास प्रभो शिरको पटकावैं ॥ निशबासर उपवास
अलप दिन नयन करावैं ॥ सीताको विच्छेद कष्ट
राघव जो पाई ॥ तिनको जो मै लिखौं ग्रन्थ बहुता
बढ़ जाई ॥ २०६४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

चतुर्थ दिवस भोगव उठ धाये ॥ दक्षिण दिशा
क्रोध कर आये । करि मज्जन फलको मुख पावैं ॥
लव लक्ष्मण प्रभुको बतलावैं ॥ २०६५ ॥ फड़की भुजा
वाम रघुराई ॥ क्या जानै क्या विघ्न कराई ॥ शुनत

बचन माधव चतुराए ॥ पहुच्यो यात कबन्ध हसाए ॥ २०६६ ॥ भयो दुष्ट प्रभु को घमकाई ॥ भल भोजन विधि मोर पठाई ॥ असभाखिके निज पाणि पसारे ॥ धरि पकार पखु भात विदारे ॥२०६७॥ कर दक्षिण पुरुषोत्तम घाए ॥ कर दूसर धरि लक्षण खपाए ॥ तड़फे यातुधान अकुलाई ॥ नुति करिके प्रभुसे बतलाई ॥ २०६८ ॥ नाथ सुनो मम पूर्ब्ब कहानी ॥ जाते कब्बुर योनि धरानी ॥ गन्धर्ब्ब योनि मम नाम कुवेरा ॥ रूप भयो दर्प्प केसे मेरा ॥ २०६९ ॥ ताते गर्भ भयो रघुराई ॥ दुर्ब्बासा मुनि श्राप चलाई ॥ दैंतयोनि ताते मे पायेे ॥ पद्मनाभ शर पाप नशाये ॥ २०७० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

असभष कोप राम को देह त्याग भट कीन ॥ चढ़ पुष्पकी मध्य सो राह स्वर्ग को लीन ॥ राह स्वर्ग को कीन नाथको दैंत बतावें ॥ ऋष्यमूक पर जाय सखा सुग्रीव बनावें ॥ भये ज्ञानमासिंह सुनत राघव हरषाए ॥ पम्पा सरिके तीर प्रात होते प्रभु आए ॥२०७१॥

अथ शबरी उद्धार ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पम्पासरहिकी तीरमो करि मज्जन रघुनाथ ॥ मुनि मतङ्ग आवासमो आवै अवरज साथ ॥ आए अवरज साथ निरख शबरी झट धाई ॥ प्रभु पदमो लपटाय जन्म निज शुफल कराई ॥ ताको योगी ध्यान धार दर्शन नहि पावैं ॥ ताको शबरी चरण धोय चरणोदक खावैं ॥ २०७२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

दै आसन प्रभुको बैठाई ॥ कन्दमूल आगी रख माई ॥ पाणिजोड़ हरिसे बतलावैं ॥ जो मुनि कह्यो देख सो पावैं ॥२०७३॥ श्याम गौरसुन्दर वर भाई ॥ आवैं प्रभु नररूप धराई ॥ तिनको भल विधि सेव करावैं ॥ असभण विप्र स्वर्ग सो जावैं ॥ २०७४ ॥ प्रभु मै करौं कौन सिवकाई ॥ अधम जन्म अबलाको पाई ॥ नाथ कृपा करि मुक्ति करावैं ॥ कन्दमूल मम भोग लगावैं ॥२०७५॥ असभण नुति भूरी करि माई ॥ रोवत चरण कमल लपटाई ॥ दीन दयाल राघव हरषाए ॥ कन्दमूल ले भोग लगाए ॥२०७६॥ हो प्रसन्न रघुनाथ भलावैं ॥ तव सम भक्त देख नहि पावैं ॥ कहो मात मुझको समुझाई ॥ जगत सुताका कौन

उपाई ॥ २०७७ ॥ सुन शवरी भाषैं शिरनाए ॥ ऋष्य-मूक यावन पर जाए ॥ सखा प्रभो सुग्रीव वनाई ॥ नाश यातु कुल कायो माई ॥ २०७८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

असभण शवरी रामको योग अनलमो पङ्ग ॥ भस्म कस्यो हरि नाम लै निरख प्रभो भेटङ्ग ॥ निरख प्रभो भेटङ्ग स्वर्ग प्रस्थान करायो ॥ इत राघव लै लखण ऋष्यमुक ओर सिधायो ॥ भणै खालसासिंह प्रभो-पदमो शिरनाई ॥ पाप ताप मम नाश मुक्ति कीजै रघुराई ॥ २०७९ ॥

॥ कवित ॥

पाप सर्व्व देख मोर प्रेत राज नर्क घोर कौन हैं तयार नाथ देखके डराइये ॥ जात कर्म्म धर्म्म हीन सर्ण नाय तोर लीन पाप सर्व्व मोर छीन ताप को नशाइये ॥ पाप शोच शोच घोर त्रास नाथ रात्रि भोर आस राम एक तोर चाहि सो कराइये ॥ सिंह खालसा जनाय पादपद्मको मनाय नाथ वेग हो सहाय भृत्यको बचाइये ॥ २०८० ॥

इति खालसा कृत रामायणे तृतीय सोपान अरण्य काण्डमभि समाप्तः ॥

॥ एक ओंकार सत्य गुरु प्रसाद ॥

॥ श्रीवाहि गुरुजीकी फते है ॥

अथ किष्किन्ध्याकाण्डमभि लिख्यते ।

श्लोक ।

नमस्ते नानकाचार्य्य ॥ नमस्ते कुलदेवते ॥ नमो नवग्रहाः सर्व्वे ॥ नमोऽष्टावसुवे नमः ॥ २०८१ ॥ नमो वेदाय साङ्गाय नमस्तुभ्यं प्रजापते ॥ नमो नित्यं महादेव्यै ॥ सरस्वत्यैच सिन्धुवे ॥ २०८२ ॥ नमस्तुभ्यं महादेव ॥ जगन्नाथाय विष्णुवे ॥ नमस्ते स्पर्शरूपाय ॥ किन्नरेशाय पाशिने ॥२०८३॥ नमस्ते धर्म्मराजाय ॥ महेन्द्राय नमोनमः ॥ नमः कृशानवे तुभ्यं ॥ मन्दाकिन्यै नमो नमः ॥ २०८४ ॥ नमः सोमाय सूर्य्याय ॥ नमस्तुभ्यं बृहस्पते ॥ नमस्ते रघुनाथाय ॥ नमो वै ब्रह्मरूपिणे ॥ २०८५ ॥

॥ लावनी चक्रसुदर्शन ॥

गुरु नानक यह नाम जपो और ध्यान धरो उनका दिलमे ॥ कलि कलुषको नाश सर्व्व गुरु देते निर्व्वार करि छिनमे ॥ सेतु बांधि क्या दिया प्रभो

जो जिसपर पापी वेग तरे॥ पन्थखालसा और उदासी नागा शुथरा वेश धरे॥ इन मारगमो नर जो चलते तिनको प्रभु रखते दिलमे॥ कलि कलूषको नाश सर्व्व गुरु देते निर्ज्जर करि छिनमे ॥ २०८६ ॥
मनमूरख भूला तूं फिरता क्यों नहिं प्रभुका ध्यान धरे॥ जिनको पटको लिये महम्मद कावुरके अन्दर स्नान करे॥ जिधर जिधर प्रभु पैर पसारा उधर उधर वह गोर फिरा॥ वाहि गुरुका वोच मदीना अजव तौर यह खेल भिरा॥ मन पापी तूं क्यों नहि समुझे भजु प्रभुको अवभी दिलमे॥ कलि कलूषको नाश सर्व्व गुरुदेते निर्ज्जर करि छिनमे॥ २०८७॥ सिद्धमताके वीच सिद्ध सब वैठे थे हङ्कार भरे॥ वालरूपको देख प्रभो का सिद्ध नहीं सन्मान करे॥ देख गर्व्वको वाहिगुरुजी सब का शक्ती छीन लिया॥ तब सिद्धों सब चरण चर्च्चके सद्गुरुका सन्मान किया॥ तवते नानक मता नाम धरि सिद्ध ध्यान धरते दिलमे॥ कलि कलूषको नाश सर्व्व गुरु देते निर्ज्जर करि छिनमे॥ २०८८॥
कलगी तुर्रे आपसमो नाहको सब लड़ लड़ मरते॥ तिस कारण यह पन्थ तीशरा चक्र सुदर्शनका करते॥ विष्णु पाणिमो जिसको धारा और खालसा शीर्ष धरे॥ मार्ग तीशरे जौन चले सो निन्दकको धरि साधु करे॥